

वार्षिक हिंदी पत्रिका-2022

आशीर्वाद

अंक-35



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय,
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय
एवं
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



आशीर्वाद

वार्षिक हिंदी पत्रिका-2022

अंक-35



प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय,
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय
एवं
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु



पत्रिका परिवार

संरक्षक

श्री विमलेंद्र आनंद
पटवर्धन
प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II)

श्रीमती शांति प्रिया एस
प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-I)

श्रीमती दीपना गोकुलराम
प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (केंद्रीय)

प्रकाशन परामर्शदात्री समिति

श्री पी सोमशेखर
निदेशक (प्रशासन)

संपादक मंडल

श्री एस धनराजन
हिंदी अधिकारी
श्री देव प्रकाश गुप्त
हिंदी अधिकारी

सदस्य

श्री के सुरेश
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन व बिल्स)

प्रूफ रीडिंग

सुश्री वंदना एस
कनिष्ठ अनुवादक

सहयोग

राजभाषा परिवार के समस्त सदस्य

नोट: इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं तथा संपादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचना की मौलिकता तथा अन्य किसी विवाद के लिए रचनाकार स्वयं जिम्मेदार हैं।

संदेश

यह अत्यधिक हर्ष की बात है कि हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के 35वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के अलावा 'आशीर्वाद' हमारे सहकर्मियों की साहित्यिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम रही है। दैनिक कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के अनुप्रयोग के लिए प्रेरित करने वाली पत्रिका के सुरुचिपूर्ण व लगातार प्रकाशन के लिए मैं आशीर्वाद के संपादक मंडल को साधुवाद देता हूँ।

इस अंक के लिए कलम चलाने वाले सभी लेखकों के प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त कर उन्हें बधाई देता हूँ। आशा है कि इस अंक के माध्यम से आपको अपने सहकर्मियों की प्रतिभा से अवगत होने का अवसर मिलेगा साथ ही उनकी रचनाएँ आपको लिखने के लिए प्रेरित करेंगी।

शुभकामनाओं सहित,



विमलेंद्र पटवर्धन

विमलेंद्र आनंद पटवर्धन

प्रधान महालेखाकार (ले.प.-II)

संदेश

यह बड़े हर्ष की बात है कि हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के 35वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अंक में कार्यालय के कार्मिकों की रचनाधर्मिता प्रदर्शित हो रही है। वास्तव में किसी भी व्यक्ति की भावनाओं, संवेदनाओं, विचारों एवं समाज में घटित होने वाली घटनाओं को सृजित करने की कला साहित्य में परिलक्षित होती है। साहित्यकार का एक प्रमुख गुण कल्पनाशीलता होता है। वह अपनी कल्पना से साहित्य सृजन में चार चांद लगा देता है। हमारे कार्यालय के कार्मिकों की कल्पनाशीलता का परिचय इस पत्रिका में मिल रहा है।

अंततः मैं पत्रिका के संपादक मंडल, रचनाकारों एवं सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई देती हूँ और पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना देती हूँ। उसके साथ ही यह आशा करती हूँ कि भविष्य में कार्यालय की गृह पत्रिका निर्बाध रूप से प्रकाशित होती रहे।

शुभकामनाओं सहित,



शान्तिप्रिया

शांति प्रिया एस

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

संदेश

हमारी वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के 35वें अंक के प्रकाशन की इस वेला पर मेरा मन अत्यधिक प्रमुदित है। जैसे साहित्यिक कृति को समाज का दर्पण कहा जाता है ठीक वैसे ही यह पत्रिका हमारे कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों की सृजन-शक्ति की परिचायक है। यह नियमित कार्यालयीन कार्यों के अलावा कार्मिकों के अंतर्मन में सुप्त कोमल भावनाओं व उनके आस-पास के परिवेश में दृष्टिगोचर होने वाली तथा लिपिबद्ध करने योग्य घटनाओं को साहित्यिक जामा पहनाकर उसके जीवंत रूप में प्रस्तुत करने का उपयुक्त मंच प्रदान करती है। गृह पत्रिका का अस्तित्व उनके लिए उत्प्रेरक का काम करता है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की मशाल को प्रज्वलित रखने में गृह पत्रिकाओं की भूमिका सर्वविदित है। इस क्रम में 'आशीर्वाद' पत्रिका का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इसके अतिरिक्त, मैं इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु अपनी बहुमूल्य कृतियों का योगदान करने वाले रचनाकारों, संपादक मंडल एवं राजभाषा संवर्ग के सभी कर्मियों को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए बधाई देती हूँ जिनके अक्षुण्ण प्रयास से इस पत्रिका का प्रकाशन संभव हो पाया है। मैं आशा करती हूँ कि आने वाले वर्षों में भी 'आशीर्वाद' पत्रिका का प्रकाशन अविच्छिन्न रूप से होता रहे।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,



दीपना

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)

संदेश

विचार पानी की तरह होते हैं....जिस सांचे में ढालो ढल जाते हैं। भाषा के माध्यम से जब इन्हें लिपिबद्ध किया जाता है तो साहित्य बन जाता है।

मनुष्य के अंतरंग की अनुभूतियों को व्यक्त करने वाली ललित कला को साहित्य कहा जाता है। आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है और हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है। हृदय की मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है वह कविता कहलाती है। साहित्य-सृष्टि वह चमत्कार है जो मनुष्य को अलौकिक आनंद की अवस्था प्राप्त कराती है। वह मनुष्य को मनुष्य से मिलाने का कार्य करती है।

जैसे-जैसे समाज का विकास होता गया, मनुष्य एक-दूसरे से, प्रकृति से, संवेदनाओं से, कल्पनाओं से दूर भागने लगा। व्यस्तताओं से घिरे इस जीवन में अपने लिए जीना वह भूल जाता है... अपनी संवेदनाओं को वह गाड़ देता है..... और फिर सिर्फ एक मशीन बनकर रह जाता है।

‘आशीर्वाद’ इस निर्जीवता को पुनरुज्जीवित करने का एक विनम्र प्रयास है। आभार.... हमारे कार्यालय के उन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को... जिनकी अनुपस्थिति में यह कभी संभव ही नहीं होता। बधाइयां उन सभी को जिन्होंने इस पत्रिका के सफल प्रकाशन में अपने हाथ बंटाए...।

शुभकामनाओं के साथ.....



पी. सामशिर

निदेशक (प्रशासन)

संपादकीय



मानव के समस्त आविष्कारों में भाषा का स्थान सर्वोपरि इसलिए है कि भाषा के बल पर ही मानव सभ्यता आज इतनी विकसित हुई है। भाषा मानव के समस्त आविष्कारों की जननी है। भाषा के माध्यम से ही अनेकों विषयों का संरक्षण हुआ और मानव सभ्यता आज इतनी उन्नति के शिखर पर पहुंची है। इतिहास इस बात का गवाह है कि जो काम तीर-तलवार नहीं कर सके वह काम भाषा के द्वारा पूरा हो गया। भारत सरकार ने संविधान बनाते समय सभी प्रांतों और क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए प्रारंभ में 14 भाषाओं को ही आठवीं अनुसूची में रखा था परंतु अब इनकी संख्या 22 हो गई है। जिनमें से संघ की राजभाषा हिंदी बनाई गई है। हिंदी न केवल हमारी राजभाषा है, अपितु समूचे भारत को समन्वय के सूत्र में बाँधने वाली संपर्क भाषा भी है। अतः यह हम सबका दायित्व है कि रोजमर्रा के कार्यालयीन कामों में राजभाषा हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग के द्वारा हिंदी के प्रचार के गौरवशाली मशालची बनें।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्यालयीन हिंदी पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान रहता है। इन पत्रिकाओं के माध्यम से कार्मिकों की सृजनात्मकता और कल्पनाशीलता का परिचय मिलता है। कार्यालय की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका “आशीर्वाद” के 35वें अंक का प्रकाशन हम सभी के लिए हर्षोल्लास का विषय है। पत्रिका प्रकाशित करने का सर्वोपरि उद्देश्य यह है कि कार्यालय में कार्यरत कार्मिक हिंदी की ओर अधिक प्रेरित होकर कार्यालयीन कामों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें और संपर्क की कड़ी के रूप में इसका स्थान सुदृढ़ हो। पत्रिका के अनेक अंकों के प्रकाशन के उपरांत हम असंदिग्ध रूप से यह कह सकते हैं कि हिंदी के प्रचार-प्रसार और अधिकाधिक प्रयोग की दिशा में “आशीर्वाद” पत्रिका का योगदान अप्रतिम रहा है।

सभी रचनाकारों एवं सुधी पाठकों के प्रति हम अपना आभार प्रकट करते हैं जिनके सहयोग से यह पत्रिका प्रगति की राह पर निरंतर अग्रसर है। आपसे विनम्र निवेदन है कि इस पत्रिका में प्रकाशित कृतियों का कोटि-निर्धारण करके अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराने की कृपा करें।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,



एस. धनराजन
हिंदी अधिकारी



देव प्रकाश गुप्त
हिंदी अधिकारी

आपके पत्र

कार्यालय महालेखाकार (ले व ह)-II, महाराष्ट्र
 ऑफिस ऑफ
THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) II
 MAHARASHTRA
 CIVIL LINES, MADURAI 440001
 Ph: 0712-2560161-67 / Fax: 0712 - 2560184
 Email: agaa@maha Maharashtra2@ca.gov.in
 Web: https://ag.gov.in/acharyaprasad

दिनांक: 07/04/2022

सेवा में,
 हिन्दी अधिकारी,
 प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-1)
 द्वितीय तल, सी ब्लॉक, डाक घेती सं. 5398,
 कर्नाटक, बेंगलूरु - 560001

महोदय/महोदया,
 सर्वप्रथम, आपके कार्यालय की संयुक्त रूप से प्रकाशित वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका
 "आशीर्वाद" के 34वें अंक की ई-प्रति के प्रेषण के लिए सहर्ष धन्यवाद।
 पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक, रोचक और सुपाठ्य हैं। सभी
 रचनाओं में रचनात्मकता, सकारात्मकता तथा नवीनता को उत्कृष्ट तरीके से प्रस्तुत किया गया
 है। पत्रिका की साज-सज्जा तो प्रशंसा की पात्र है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ समयानुक्रम,
 ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी, तथा शिक्षाप्रद हैं जो बरक्स ही पाठक-वृत्त को अपनी ओर आकर्षित करती
 हैं।
 पत्रिका के श्रेष्ठ सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक साधुवाद तथा
 पत्रिका के उत्तरोत्तर उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय
 वरिष्ठ लेखा अधिकारी
 राजभाषा अनुभाग

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
 प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
 पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
 भुवनेश्वर - 751017 (ओडिशा)

सं. रा.भा.अ/पत्रिका/2021-22/30

दिनांक-30.03.2022

सेवा में,
 हिन्दी अधिकारी,
 प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1) का कार्यालय, कर्नाटक,
 ऑडिट भवन, द्वितीय तल, सी. ब्लॉक,
 बेंगलूरु - 560001
 ईमेल- agaukarnataka1@ca.gov.in

विषय- हिन्दी पत्रिका "आशीर्वाद" के 34वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,
 आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित वार्षिक हिन्दी पत्रिका "आशीर्वाद" का 34वाँ अंक ई-प्रति के रूप
 में प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में
 समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर अनुज गहलौत, द्वारा रचित कहानी
 'दादी का करिश्मा' प्रेरणादायक है। पप्पू कुमार एवं आर्यन सिंह भदौरिया द्वारा रचित कहानी क्रमशः
 'पुत्र की चाहत' एवं 'हमसफर' विचारनीय हैं। इसके अलावा मयंक कुमार 'मयंक', द्वारा रचित कविता
 'दौरे-बचपन' से हमारी बचपन की यादें ताज़ी हो गईं।
 इस पत्रिका को सफल एवं उत्कृष्ट का बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक
 डल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(कीर्ति श्री)
 हिन्दी अधिकारी

दूरभाष/Telephone-2223251,
 2223766, 2224812

फैक्स/ Fax 0612-2225977
 तार | ACCOUNTS
 Tele Gram

प्रधान महालेखाकार (ले० एवं ह०) का कार्यालय, बिहार, पटना
 OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

पत्रांक हि०अ०/ले० व ह०/०५/०००/२०२२-२३/०६
 दिनांक 25/04/2022

सेवा में,
 हिन्दी अधिकारी,
 प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-1),
 कर्नाटक, बेंगलूरु-560001

विषय :- हिन्दी वार्षिक पत्रिका 'आशीर्वाद' का 34वां अंक के प्रेषण के संबंध में।
 महोदय/ महोदया,
 उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के ई-मेल दिनांक 10.03.2022 के
 द्वारा हिन्दी वार्षिक पत्रिका 'आशीर्वाद' का 34वां अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त
 हुई। पत्रिका के सभी रचनाएँ पठनीय और उत्कृष्ट हैं। पत्रिका का आवरण एवं
 साज-सज्जा सुंदर एवं आकर्षक है। उसका बाहरी रंग-रूप ही नहीं, आंतरिक
 सौंदर्य भी आकर्षित करता है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सराहनीय एवं
 ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका
 राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/
 कर्मचारियों की हिन्दी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका
 निभाएगी।
 पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।
 पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना
 है।

भवदीय,
 25/04/2022
 हिन्दी अधिकारी,
 (हिन्दी कक्षा)

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा -II) का कार्यालय, केरला, तिरुवनंतपुरम
 OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-II) KERALA,
 THIRUVANANTHAPURAM-695 001

सं. सं.च./हिन्दी कक्षा/पत्रिका/2021-22

दिनांक: 30.03.2022

सेवा में,
 प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-1),
 कर्नाटक, बेंगलूरु

विषय:- पत्रिका की पावती - बाबत

महोदय,
 आपके कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका "आशीर्वाद" के 34वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ
 धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा आकर्षक है और संपूर्ण सामग्री उत्कृष्ट और जानप्रद है। विशेषकर आरती
 त्रियदर्शनी जी का लेख 'सी ए जी-चुनौतियों भरी मफला', देव प्रकाश गुप्त जी का लेख 'धर्म की नहीं गर्व की
 भाषा है हिन्दी' एवं प्रभात हंसदा की कविता 'कुछ दूर और' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।
 पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,
 व. लेखापरीक्षा अधिका/हिन्दी कक्षा

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (ले एवं हक)
तमिलनाडु, चेन्नई-18
टेलीफोन: 044-24324530 फैक्स: 044-24320562
Website : www.agae.tn.nic.in

INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A & E),
TAMILNADU,
361, ANNA SALAI, CHENNAI-18
Phone: 044-24324530 Fax: 044-24320562
Website : www.agae.tn.nic.in

Hindi Cell
दिनांक 11/03/2022

हिन्दी कक्षा/हिन्दी गृह पत्रिका रिट्यू/102/53839

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
ऑडिट भवन, दूसरी मंजिल, "सी" ब्लॉक,
पोस्ट बॉक्स नंबर 5398,
कर्नाटक, बेंगलूरु - 560001

To,
Hindi officer
Office of the Principal Accountant General (Audit-1)
Audit Bhawan, 2nd Floor, "C" Block,
Post Box No.5398, Karnataka, Bengaluru - 560001

विषय : आपकी हिंदी गृह पत्रिका 'आशीर्वाद' के चौतीसवें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका 'आशीर्वाद' के चौतीसवें अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज-सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहरी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, जानवर्द्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय हैं। इस अंक में प्रकाशित सुश्री नूपुर कुमारी की कविता "बस नदी नहीं ...तो गंगा है", श्री सुशील कुमार पंडित की कविता "ममतामई माँ", श्री पप्पू कुमार की कहानी "पुत्र की चाहत", और श्री आर्यन सिंह भदौरिया की कहानी "हम सफर" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सुजनतात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रकम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

(एम. सुधाकरन)
वरिष्ठ लेखा अधिकारी



कार्यालय प्र. महालेखाकार(लेखा व हक.) पंजाब व यू.टी. चण्डीगढ़।
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A & E), PUNJAB &
U.T. CHANDIGARH-160017
फैक्स 0172-2703110 दू.भा - 2702272,2702072
क्रमांक-प्रशासन-2/विधि/2021-22/532
दिनांक- 30/03/2022

सेवा में

हिंदी अधिकारी,
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1) का कार्यालय,
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1) का कार्यालय, एवं
प्रधान महालेखाकार (केंद्रीय) का कार्यालय,
कर्नाटक, बेंगलूरु - 560001।

विषय - विभागीय पत्रिका 'आशीर्वाद' के 34वें अंक की समीक्षा।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'आशीर्वाद' का नवीन अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी अति मनमोहक हैं।

सुश्री नूपुर कुमारी जी की 'बस नदी नहीं....तो गंगा है', सुश्री वंदना एस की 'दि ग्रेट इंडियन किचन', श्री संजय कुमार की 'महाप्राण निराला जी', श्री देव प्रकाश गुप्त की 'शर्म की नहीं गर्व' की भाषा है हिंदी, श्री मयंक कुमार 'मयंक' की 'अंतर्द्वंद्व' रचनाएँ विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को सुरक्षित एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय परिवार को बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय

(विष्णु कुमार)
हिंदी अधिकारी



सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सेक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE
PR. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020.
संख्या: हिंदी कक्षा/हिंदी पत्रिका/प्रतिक्रिया/2021-22/255
दिनांक: 14.03.2022

सेवा में,

हिंदी अधिकारी,
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-1)
कर्नाटक, बेंगलूरु

विषय: कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 34वें अंक का प्रेषण।

महोदय,

आपके पत्र संप्र.म.ले.(ले.प.-1)/हिंदी कक्षा/2021-22/130 दिनांक 03.02.2022 द्वारा कार्यालय की हिंदी वार्षिक ई-पत्रिका 'आशीर्वाद' के 34वें ई-संस्करण प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर हैं। 'सीएज-युनॉर्तियों भरी सफलता', 'महाप्राण निराला जी', 'शर्म की नहीं, गर्व की भाषा हिंदी', 'कार्य-जीवन संतुलन', 'दो-बचपन', 'अतिथि-नुम कब जाओगे?', 'परिश्रम का महत्व' एवं 'महिला सशक्तीकरण: भारतीय परिप्रेक्ष्य में' आदि रचनाएँ विशेष रूप से सराहनीय एवं प्रेरणादायक हैं। रचनाओं के चयन में संपादक मंडल की कुशलता एवं साहित्यिक समझ सराहनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

21 MAR 2022
O/a. Pr. Accountant General /
Karnataka, Main Building, Bengaluru

भवदीय,

(विष्णु कुमार)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिंदी कक्षा)



संख्या/2022/11728
File No. 77/2022
भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग,
कार्यालय, महादेशक लेखापरीक्षा (इन्फ्रास्ट्रक्चर), दिल्ली
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT,
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
(INFRASTRUCTURE), DELHI
दिनांक /Dated 22/03/2022

सेवा में

हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
ऑडिट भवन, द्वितीय तल, सी-ब्लॉक
डाक बूली सं.5393,
बेंगलूरु, कर्नाटक-560001

विषय: हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 34वें अंक के प्रेषण की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 34वें अंक की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ति हुई है। अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सराहनीय एवं जानवर्द्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में मुख्यतः सीएज-युनॉर्तियों भरी सफलता, पुत्र की चाहत, दि ग्रेट इंडियन किचन, शर्म की नहीं गर्व की भाषा है हिंदी, आपदा के ये तीन दिन, चार सेर आटा, अतिथि तुम कब जाओगे, सभी का आदर करें, कर भला तो हो भला आकर्षण का मुख्य केंद्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। 'आशीर्वाद' परिवार को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए 'संवाद' परिवार की ओर से ढेर सारी शुभकामनाएँ।

भवदीय

(विष्णु कुमार)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी अनुभाग)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	विधा	लेखक	पृ.सं.
1	तिरुवण्णामलै	यात्रा-वृत्तांत	वंदना एस	1
2	चाँद की गवाही	कहानी	मयंक कुमार 'मयंक'	7
3	राजभाषा हिंदी	लेख	अनूप कुमार	9
4	कुछ भी नहीं किया मैंने	कविता	आरती प्रिय दर्शनी	13
5	द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, सूरत- एक अभिनव पहल	लेख	देव प्रकाश गुप्त	15
6	प्रकृति	कविता	निशांत कुमार	24
7	बुद्धिमान अवनी	कहानी	रंजन कुमार	25
8	बिहार के लोक नृत्य	लेख	संजीव चंद्र पाठक	27
9	भारत की विजय-यात्रा	कविता	नर्मदा कुमारी	29
10	सीख	कहानी	शोभा जी वारियर	31
11	संघर्ष	कविता	विक्रान्त कुमार	33
12	जीवन में अच्छे और बुरे लोगों की परख	लेख	प्रसाद पी जोशी	35
13	माँ का एहसास	कविता	नेहा कुमारी कर्ण	37
14	आदमी...	कहानी	आरती प्रिय दर्शनी	38
15	चालाक लोमड़ी	कहानी	ज्योत्सना	40
16	हास्य संस्मरण	संस्मरण	रवि प्रकाश	44
17	सेहत	कविता	ज्योत्सना	46
18	गांधीवाद	लेख	अनूप कुमार	47
19	'ध्यान' क्यों आवश्यक है?	कहानी	मुकेश अंबानी	50
20	बिहार का ऐतिहासिक स्थल- राजगीर	लेख	मुकेश अंबानी	52
21	भावनाओं का डिजिटल संस्करण	कहानी	मयंक कुमार 'मयंक'	56
22	साइकिल और हेलिकाप्टर की टक्कर	कहानी	मयंक कुमार मयंक	57
23	भारत और विज्ञान की यात्रा: अतीत से भविष्य तक	लेख	आरती प्रिय दर्शनी	58
24	केकड़ा-प्रवृत्ति	कहानी	रंजन कुमार	65
25	राजभाषा हिंदी का बढ़ता प्रभाव	लेख	साईकृपा नाल्कुर	68
26	कुछ मानक अभिव्यक्तियां और वाक्यांश			71
27	कुछ महत्वपूर्ण पारिभाषिक शब्दावली			73

तिरुवण्णामलै

सपनों को साकार होते हुए कभी देखा है? कभी महसूस किया है कि वह आपको कितनी शक्ति दे सकता है...? भीतर से आपको कितना मज़बूत बना सकता है...? कवि पाश ने कहा है-

*“मेहनत की लूट सबसे खतरनाक नहीं होती
पुलिस की मार सबसे खतरनाक नहीं होती
गद्दारी और लोभ की मुट्ठी सबसे खतरनाक नहीं होती*

.....

*सबसे खतरनाक होता है
हमारे सपनों का मर जाना।”*

माननीय पूर्व राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा है कि “सपने वे नहीं होते हैं जो नींद में देखे जाते हैं, सपने वे होते हैं जो आपको सोने नहीं देते हैं।”



आइए मैं ले चलती हूँ आपको अपने उस छोटे सपने की ओर जिसे तमिलनाडु के एक छोटे-से गाँव ने साकार कर दिखाया: -

फरवरी का महीना था। सुबह-शाम घर और ऑफिस के चक्कर में जीवन में घुटन-सी महसूस होने लगी थी। जब भी ऐसी स्थिति आती है तो अंदर से एक आवाज़ सुनाई देती है- “कहीं चलते हैं... इस शोर-शराबे से दूर...जहाँ शांति हो...जहाँ एकांत में अपने-आप से मैं संवाद कर सकूँ...जहाँ खुली हवा में सांस ले सकूँ... जहाँ सबकुछ भूलकर, दुनिया-जहाँ की व्यस्तता को पीछे छोड़कर कुछ पल चैन से रह सकूँ।” लक्ष्य-स्थान की तलाशी हमेशा मुझे पुराने दोस्तों के पास पहुंचा देती है। जीवन के कुछ ही पल मैंने अपने दोस्तों के साथ बिताया है, पर ज़रूरत पड़ने पर कभी वे पीछे नहीं हटे। फ़ोन कॉल हो या टेक्स्ट मेसेज, जवाब देने के लिए हमेशा वे तैयार रहते हैं। यह तलाशी भी व्यर्थ नहीं गई। दिमाग में एक पुराने दोस्त की तस्वीर प्रकट होने लगी। उसके पास मेरे लिए सबसे अच्छा विकल्प था - “तिरुवण्णामलै।” किस्मत भी बड़ी कमाल की चीज़ होती है, कभी-कभी ऐन मौके पर वह साथ देने आ जाती है। उन दिनों मेरा दोस्त बेंगलूरु में ही रह रहा था। मूल रूप से वह ‘सिनेमेटोग्राफर’ (Cinematographer) है और इन सिनेमेटोग्राफरों के बारे में कहा जाता है कि ये दुनिया को देखने की अलग ही दृष्टि लेके घूमने वाले होते हैं। यह सच है क्योंकि उसके कैमरे में कैद तस्वीरों में किसी को भी चकित करने की ताकत मुझे नज़र आई।

आगामी शुक्रवार का ‘प्लान’ बन गया कि यहाँ से ‘बाइक’ से जाएंगे जिससे जहाँ हम रुकना चाहें रुक सकते हैं, जितनी देर रुकना चाहें रुक सकते हैं। सार्वजनिक

गाड़ियों में यात्रा करने से उनके समय के हिसाब से चलना पड़ता है जो मुझे पसंद नहीं है। अपनी गाड़ी हो तो अपनी सुविधानुसार यात्रा करने की पूरी छूट आपको मिल जाती है। सुबह नौ बजे शुरू की गई यात्रा खतम होते-होते शाम हो गई थी। बेंगलूरु-मैसूरु नैस रोड़ से होते हुए होसूर पार कर शाम के लगभग पांच बजे के आसपास हम कृष्णगिरि पहुँच गए। शहरी जीवन मुझे कभी भी मोहित नहीं कर पाया और इसीलिए जब तक शहर पार नहीं हुआ तब तक मैं चुप्पी साधती रही। कृष्णगिरि के बाद गाँव की शुरुआत होती है। ऐसा गाँव जिसे मैंने कभी अपनी पाठ्य-पुस्तकों में देखा था जिसका चित्र कभी अपनी किताबों में बनाने की कोशिश किया करती थी।

लंबी-चौड़ी सड़कें धीरे-धीरे कच्ची सड़कों में और फिर पतली-पतली गलियों में बदल गईं। आरपार छोटे-छोटे घर, उसके बड़े-बड़े आँगन, आँगन में विश्राम करती गाय-बकरियां, उछलते-कूदते उनके बछड़े, उनकी रक्षा करते कुत्ते... न जाने यह गाँव और क्या-क्या लेकर मेरा इंतज़ार कर रहा था। आखिरी गली भी खत्म हो गई और सामने प्रकट हुआ विशाल खेत जहाँ अभी कोई खेती नहीं हो रही थी। क्योंकि कुछ ही दिन पहले कटाई हुई थी और फिर खेती करने के लिए बारिश की कृपा होनी ज़रूरी थी। डुग-डुग करती हुई गाड़ी आगे बढ़ रही थी, शाम का सूरज आसमान में चमक रहा था जिससे पूरा गाँव लाल-सुनहरे रंग से सजा हुआ था। अब मैं अपने सपनों के और करीब आ रही थी जिसकी हवा भी मुझे अभी तक नहीं लगी थी। आगे एक छोटी-सी झोंपड़ी दिखी

जो मिट्टी, सूखी घास और बांस से बनी थी और उसके पास दो झोंपड़ियाँ और दिख गईं। मन में वे सारे चित्र उभरने लगे जिनकी कल्पना कर मैं अपनी चित्र-पुस्तकें भर दिया करती थी। वही सूरज....वही झोंपड़ियाँ...वही पेड़-पौधे....वही खेत.....और वही गाय-बकरियां...। लेकिन वहां पर एक खास मेहमान चिल्ला-चिल्लाके मेरा स्वागत कर रहा था - 'काकी'। काकी एक डॉबरमैन कुत्ता है जो उन तीन झोंपड़ियों और वहां रहने वाले बिनु 'चेट्टन' (भैया को मलयालम में चेट्टन कहा जाता है) और पेट्रीश्या की रक्षा करता है। बिनु चेट्टन मलयालम फिल्म निर्देशक हैं। पढ़ाई के लिए पुर्तगाल गए थे काफी साल पहले और वहां से जब वापस आए तो पेट्रीश्या को साथ ले आए जो आज उनकी जीवन-संगिनी है। बिनु चेट्टन ने चेतावनी दी थी कि काकी को नए लोगों से मिलने की आदत नहीं है। लेकिन उसकी आँखों में देखकर कहीं न कहीं मुझे लग रहा था कि शायद वह मेरे पास आना चाहता है। खैर, कुछ समय के लिए काकी को छोड़कर हम चाय पीने बैठ गए। कुल तीन झोंपड़ियाँ हैं जिनमें से एक बिनु चेट्टन और पेट्रीश्या का घर है, दूसरी में रसोई घर है और तीसरी खाली है, जब मेरे जैसे कभी कोई आता है तो उसमें रह लेता है। पेट्रीश्या के बारे में और जानने की इच्छा थी मेरे अंदर। कुछ समय बाद वह अपनी कहानी बताने लगी कि कैसे पुर्तगाल से यहाँ आई, शहर में रहना उसे कैसे लगता था आदि-आदि। उसके जीवन में योग की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका है और इसीलिए उसे एक ऐसी जगह की ज़रूरत थी जहाँ रहकर वह योगाभ्यास जारी

रख पाए और इसके लिए तिरुवण्णामलै से बेहतर कोई विकल्प है ही नहीं।



अचानक मुझे लगा कि कोई मुझे छू रहा है, पीछे से मेरा हाथ खींच रहा है। मुझे देखा तो चौंक गई... काकी खड़ा था और उसके गले की जंजीर खुली हुई थी। तब तक तीनों वहां से चले भी गए थे और मैं अकेले बैठकर उस अनोखे ग्रामीण परिवेश को अपनी आँखों में संजोके रख रही थी जो बाद में एक मीठी याद बन सकती है और इसी बीच आया काकी। उसने जब अपने दोनों हाथ उठाकर मेरे कंधों पर रखा तो मुझे डर नहीं बल्कि प्यार नज़र आ रहा था। कुछ पल के लिए वह मुझे ताकता रहा और फिर शायद उसे एहसास हुआ कि यह हमारी मेहमान है। उसके बाद आखिरी दिन तक वह मेरे साथ ही रहा, पूरी रात वह मेरे बगल में बैठा रहा, जब भी कोई आहट हुई तो सबसे पहले जागा.... इस तरह धीरे-धीरे काकी मेरे जीवन का एक अभिन्न अंग बनने लगा था। कुत्ते मुझे बचपन से ही पसंद हैं

लेकिन कभी एक कुत्ता खरीद नहीं पाई। उसके लिए कई तरह की पाबंदियां थीं। काकी ने कुछ दिन के लिए ही सही उस कमी को भर दिया था।

हर रोज़ अलार्म की अरोचक घंटी से जगने वाली मैं अगली सुबह सूरज की रोशनी आँखों में लगने से जग गई। हलकी गरम, पर चमक उसमें बहुत थी। बांस की चारपाई पर सोने से शरीर में दर्द हो रहा था। दिन की रोशनी में सब कुछ साफ़-साफ़ दिखाई देने लगा था। उस झोंपड़ी के बीच में एक पेड़ है जिसका सहारा लेकर इसे बनाया गया है। मंशा यही था कि प्रकृति को नहीं दुखाना है। बाहर निकली तो आँगन में कई तरह के फूल खिले नज़र आए। उनके इर्द-गिर्द रंग-बिरंगी तितलियाँ मंडरा रही थीं। पेट्रीश्या बुनाई और योगाभ्यास के लिए चली गई थी और बिनु चेट्टन चित्र बनाने में व्यस्त थे। जब भी शहरी जीवन से ऊब जाते हैं तो वे लोग यहाँ आकर कुछ दिन रह लेते हैं। यह उनकी अपनी ज़मीन है और वे झोंपड़ियाँ उन्होंने खुद बनाई हैं। टूथ-ब्रश लेकर मैं इधर-उधर घूमने लगी, साथ में काकी भी था। देखा कि पेड़-पौधे फूल और फल से लदे हुए हैं, हवा में अलग ही सुगंध बह रही है... इस विशाल उपवन के बीच एक झूला है जहाँ लेटे-लेटे आप जितना चाहें उतना समय बिता सकते हैं। कुछ समय बाद हमें किसी दूसरी जगह के लिए निकलना था और इसीलिए मैं तैयार होने चली गई।

यह जगह क्यों खास है? बताती हूँ....। तिरुवण्णामलै तमिलनाडु में स्थित एक तीर्थस्थल है। यहाँ अण्णामलै पहाड़ों की तराई में अण्णामलैयार मंदिर है जो भगवान

शिव का एक अतिप्रसिद्ध मंदिर है। लंबे समय से तिरुवण्णामलै कई योगियों और सिद्धों से जुड़ा रहा है और वर्तमानकाल में अरुणाचल की पहाड़ियाँ जहाँ 20वीं सदी के गुरु रमण महर्षि रहते थे, एक प्रसिद्ध आध्यात्मिक पर्यटन स्थल के रूप में चर्चित है। यह शहर अग्नि तत्व के संकेतक भगवान शिव के 'पंचभूतस्थलंगल' या 'पंच तत्व मंदिरों' में से एक के रूप में जाना जाता है। अन्य चार तत्वों - अंतरिक्ष, हवा, पानी और पृथ्वी का प्रतिनिधित्व क्रमशः चिदंबरम, श्री कालहस्ती, तिरुवण्णाइकवल और कांचीपुरम करते हैं। अरुणाचलेश्वर मंदिर, रमण आश्रम,



वीरूपाक्ष गुफा और शेषाद्रि स्वामिगल आश्रम कुछ ऐसे स्थान हैं जो न केवल दक्षिण भारतीयों के लिए बल्कि दुनिया भर के लोगों के लिए अत्यधिक धार्मिक और आध्यात्मिक रूप में महत्वपूर्ण हैं। भारतीय अध्यात्मवाद का मर्म महसूस करने के लिए यहाँ अनेक विदेशी पर्यटक आते हैं। पदवेडू रेणुकंबल

मंदिर और नेदुंगुनम रमण मंदिर भी तिरुवण्णामलै आने वाले यात्रियों को बहुत आकर्षित करते हैं। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस पहाड़ी को स्वयं भगवान शिव का स्वरूप माना जाता है। नवंबर-दिसंबर के महीने में यहाँ ब्रह्मोत्सव मनाया जाता है जिसके लिए पूरा दक्षिण भारत और देश-विदेश के लोग चले आते हैं। इस त्योहार के दौरान पहाड़ चढ़कर उसकी चोटी पर स्थित दीपशिखा जलाई जाती है जहाँ अनुमति के बिना आम लोगों का जाना निषिद्ध है।

उस पहाड़ की तराई में 'लोगनाथन अण्णा' और उनका परिवार बसा है। लोगनाथन योग के गुरु हैं जिनके गुरुकुल में न जाने कितने लोग योग सीखने के लिए आते हैं। केरल में भी वे जाकर पढ़ाते हैं। घर की दीवारों पर टंगी तस्वीरों से स्पष्ट हो रहा था कि ये कितने ज्ञानी हैं, साथ-साथ इस बात का भी एहसास हो रहा था कि असली ज्ञानी ही सादगी पूर्ण जीवन जी सकता है। उनसे जब पहाड़ चढ़ने की इच्छा प्रकट की तो खुशी-खुशी से उन्होंने पूछा - "अगर आपके अंदर इतना विश्वास है कि इस ऊंचे पर्वत को पार कर लेंगी तो आइए मेरे साथ।" इतना सुहाना मौसम मैंने इससे पहले कभी देखा नहीं था। हल्की-हल्की बारिश....ठंडी हवा.....रास्ते भर आंवले और आम के पेड़, साथ देने के लिए कई सारे कुत्ते.... और क्या चाहिए था मुझे? नीचे से जितना आसान लग रहा था उतना ही कठिन था ऊपर चढ़ना। पूरा पहाड़ क्या, आधा रास्ता पार करते ही ठंड से कांपने लगी। जितने बड़े-बड़े पत्थर मिले सब पर कुछ

समय गुजारा। इस बीच दोस्त तस्वीरें खींचने में व्यस्त था। पर बाद में पता चला कि वह तस्वीरें नहीं खींच रहा था बल्कि वह मेरे लिए यादें बना रहा था जिन्हें मरते दम तक मैं भूल नहीं सकती। बारिश इतनी सुंदर कभी नहीं लगी थी.....हवा इतनी ठंडी कभी नहीं लगी थी.... और रास्ते में मिले फल इतने स्वादिष्ट कभी नहीं लगे थे.....।

अंधेरा होने से पहले हमें वापस आना था क्योंकि न हमारे पास टोर्च था न ही कोई और साधन जिससे रोशनी मिल सके। उस दिन पहली बार मैंने एक ऐसा गाँव देखा जो



अंदर से एकदम शांत, सादगीपूर्ण और बाहर से उतना ही सुंदर था। जलते दीपों के बीच अण्णामलैयार मंदिर मानो स्वर्ग-सा प्रतीत हो रहा था। उस पहाड़ से उतरते वक्त मन में यही भाव था कि अगले ब्रह्मोत्सव में जरूर मिलेंगे। लोगनाथन की अम्मा ने गरम-गरम इडली और चटनी खिलाई और हम वापस बिनु चेट्टन के पास आने लगे।

आते-आते लोगनाथन ने कहा- “कभी जीवन में लगे कि अकेली हो या किसी की मदद की ज़रूरत पड़े तो बेझिझक चले आना क्योंकि यहाँ तुम्हारा एक भाई और उसका परिवार रहता है जो तुम्हारा दोबारा आने का इंतज़ार करता रहेगा।” इसके लिए क्या जवाब देती मैं? बस मन में कृतज्ञता ज़ापित करके एक मुस्कराहट के साथ निकल आई।

रास्ते में एक और ‘अण्णा’ (तमिल में भैया को कहा जाता है) मिले जिनकी आँखों में एक विशेष प्रकार की आभा छाई हुई थी। चेहरा बिलकुल शांत और आँखें बहुत गहरी जिन्हें देखकर लगा कि वे आँखें मुझसे कुछ कहना चाहती हैं। दो पल ठहरी उनके पास, परिचय हुआ, ढेर सारी कहानियां सुनीं, आखिर फिर मिलने का वादा कर मुड़ चली। तब मुझे क्या पता था कि अचानक एक दिन बेंगलूरु वाले मेरे घर में उनके नाम से एक तोहफा आएगा जिसमें से कान्हा जी की एक सुंदर मूर्ति निकलेगी जो अभी भी मेरे घर में सुरक्षित है। पत्थरों से मूर्ति बनाते हैं

वे, जीविका उनकी उसी से चलती है। शायद उस कला की वजह से ही आज भी मेरे दिल में उनके लिए जगह बनी हुई है।

फूलों से भरे खेत, पत्थरों पर बैठकर देखे गए सूर्यास्त, सुबह-सुबह झोंपड़ी में झांककर जगाने वाली लाल किरणें, तितलियों के झुंड, शहर से कोसों दूर गाँव की मनोहारिता में जीवन बिताते बिनु चेट्टन और पेट्रीश्या, लोगनाथन अण्णा और साथ में काकी.....। बचपन में जिस गाँव और घर-परिवेश का सपना देखा था वह आज मेरी आँखों के समक्ष जीवंत रूप में खड़ा था। जीवन के कुछ ही पल मैंने वहाँ पर जिया, मगर जिया तो खुलके... ।

मैंने देखा और महसूस किया कि “प्रकृति मनुष्य को जीवन जीने की कला सिखाती है।”



वंदना एस

कनिष्ठ अनुवादक/प्र.नि.ले.प.(कें.)

“हमें अपनी दृष्टि से दूसरे देशों के साहित्य को देखना होगा, दूसरे देशों की दृष्टि से अपने साहित्य को नहीं।” – आचार्य रामचंद्र शुक्ल

चाँद की गवाही



बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव था और उस गाँव में एक किसान रहा करता था। कोई पचास वर्षीय, बलिष्ठ और क्रोधी। एक दुर्घटना में उसकी पत्नी का देहांत हो गया था और उसके कोई बाल-बच्चे नहीं थे। एक रात वह खेत में गया तो पाया

कि पड़ोसी किसान ने सिंचाई के पानी का रास्ता काटकर अपने खेत में लगा लिया है। किसान हत्थे से उखड़ गया और बात गाली-गलौज से बढ़ कर मार-पीट तक पहुँच गई। हमारे कथानायक ने कुदाल के एक प्रचंड प्रहार से अपने प्रतिद्वंद्वी का पेट चीर

दिया। दूसरा आदमी ज़मीन पर गिर गया। दूर-दूर तक न कोई इंसान था, न ही कोई जानवर। चाँदनी रात थी और एक आदमी ज़मीन पर पड़ा अपनी आखिरी साँसें ले रहा था। मरते आदमी ने सारी शक्ति जुटा कर क्षीण स्वर में कहा- “तुमको इसकी सज़ा मिलेगी, देखना।” किसान ने हँस दिया- “किसने देखा कि हमने मारा है? गवाही कौन देगा?” मरता आदमी मुस्कराया, उसकी आँखें अब मुंद रही थीं। उसने कहा- “गवाही?” वह जब बोलने लगा तो उसकी आवाज़ एक कराह बनकर निकली- “कोई गवाह नहीं है तो क्या? चाँद तो है न! वह गवाही देगा।” इतने में उसकी गर्दन एक ओर लुढ़क गई। अगली सुबह पुलिस आई लेकिन कोई गवाह या सबूत न मिलने की वजह से लौट गई।

साढ़े ग्यारह महीने बाद किसान ने दूसरी शादी कर ली। पंद्रह दिन बीत गए। अधेड़ किसान नवोढ़ा पत्नी की हर फ़रमाइश पूरी करने की कोशिश में लगा रहता था। उस रात किसान घर की छत पर लेटा हुआ था। आसमान में पूरा चाँद निकला हुआ था। किसान कुछ पल चाँद को देखता रहा फिर ठठाकर हँसने लगा। नववधू ने अपनी लजीली पलकें उठाकर पति को प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा। किसान ने हँसना बंद कर दिया, “कुछ नहीं, ऐसे ही।” लेकिन नई दुल्हन के मन में शंका आ गई कि पति उसके मायके के बारे में सोचकर हँस रहा है। उसने

रूठकर मुँह फुला लिया। पति की लाख मिन्नतें करने के बाद भी वह मानी नहीं। आखिरकार किसान ने राज़ कहीं न खोलने के लिए सैकड़ों कसमें खिलाकर पत्नी को सारी कथा कह सुनाई। अगले दिन किसान की पत्नी ने घर आई एक पड़ोसिन को (सैकड़ों कसमें खिलाकर) कहानी बताकर अपना मन हल्का कर लिया। पड़ोसिन ने अपना कर्तव्य निभाया और आगे किसी को (सैकड़ों कसमें खिलाकर) बात सरका दी। इस मनोरम विधि से अगले दिन दोपहर तक साल भर पहले हुए कत्ल के बारे में आधा गाँव जान गया, गाँव का सरकारी चौकीदार जान गया और जान गया निकटस्थ थाना भी। शाम होते न होते कातिल किसान के हाथों में लोहे के कंगन पड़ गए। पुलिस दल जब मुजरिम किसान को मुश्कें बाँधकर पैदल ही ले चला तो चाँद निकल आया था। गिरफ्तार कातिल ने एक बार आँख भर कर चाँद को देखा, फिर हँसने लगा, इतना हँसा कि उसकी आँखों में पानी आ गया। थानेदार ने डपटकर पूछा- “क्या हुआ बे, दीवाना हो गया क्या?” उसकी डपट से बेसरोकार मुजरिम कहीं दूर किसी बीते लम्हे को देख रहा था। “उसने कहा था।” वह फिर फुसफुसाया- “उसने कहा था कि चाँद गवाही देगा..!”



मयंक कुमार 'मयंक'
ले.प./वी.एस./प्र.म.ले.(ले.प.-I)

राजभाषा हिंदी

“निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटती न हिय को सूल।”

- भारतेंदु हरिश्चंद्र



आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र का मानना है कि निज भाषा यानी कि मातृभाषा की उन्नति ही सब तरह की उन्नतियों का आधार है। पश्चिमी देशों में से अनेक देशों ने अपनी मातृभाषा को राष्ट्रभाषा बनाकर अपने देश के विकास को गति प्रदान की है। भाषा मानव सभ्यता में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह विचारों और भावों को शब्दों में परिवर्तित करती है। राष्ट्रभाषा राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से राष्ट्र को सुदृढ़ बनाती है और उसकी एकता और अखंडता को बनाए रखने में सहायक होती है।

आज़ादी के बाद हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने के संबंध में बहुत विचार-विमर्श हुए। गैर-हिंदी भाषी राज्य हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने के पक्षधर नहीं थे। इनमें दक्षिण भारतीय राज्य जैसे तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल प्रमुख थे। उनका तर्क

था कि हिंदी उनकी मातृभाषा नहीं है और यदि इसे राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाएगा तो यह उनके साथ अन्याय सरीखा होगा। गैर-हिंदी भाषी राज्यों के विरोध को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने मध्यमार्ग अपनाते हुए हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया। इसके साथ अंग्रेज़ी को भी राजभाषा का दर्जा दिया गया। वर्ष 1953 में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा ने 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाए जाने का प्रस्ताव किया। तब से यह दिन हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

एक भाषा के रूप में अगर हिंदी भाषा की विकास-यात्रा की बात करें तो यह एक लंबी और सतत प्रक्रिया के रूप में दृष्टिगत होती है। एक भाषा के विकास में उस समाज और संस्कृति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जहाँ पर यह बोली जाती है। हिंदी भाषा के विकास में भी समाज और संस्कृति की महत्वपूर्ण भूमिका रही है; खासकर उत्तर भारतीय राज्यों की। भारत की प्राचीन भाषा संस्कृत रही है और इसी भाषा के विभिन्न काल-खंडों में अलग-अलग स्वरूपों में हुए वियोजन से हिंदी का विकास हुआ है।

संस्कृत भाषा से पालि, पालि से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश, अपभ्रंश से अवहट्ट, अवहट्ट से पुरानी हिंदी और पुरानी हिंदी से आधुनिक हिंदी का विकास हुआ। हिंदी अनेक कालों में विकसित और परिवर्धित हुई और आज़ादी की लड़ाई के दौरान संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रचलन खूब बढ़ा। यह हिंदी भाषा का ही असर था कि उत्तर भारत ही नहीं दक्षिण भारत से भी आने वाले आज़ादी के नायकों ने इसे राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने की पुरजोर वकालत की। हालांकि हिंदी भाषा को आज तक राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं मिल सका है।

यदि राष्ट्रभाषा और राजभाषा के अंतर की बात की जाए तो इनमें मुख्यतः दो अंतर हैं। एक अंतर इन्हें बोलने वालों की संख्या का है और दूसरा अंतर इनके प्रयोग का है। राष्ट्रभाषा जहाँ जनसाधारण की भाषा होती है और लोग इससे भावात्मक और सांस्कृतिक रूप से जुड़े होते हैं वहीं राजभाषा का सीमित प्रयोग होता है। राजभाषा का प्रयोग अक्सर सरकारी कार्यालयों और सरकारी कार्मिकों द्वारा किया जाता है। कुछ देशों की राष्ट्रभाषा और राजभाषा एक ही है, जैसे ब्रिटेन की अंग्रेज़ी, जर्मनी की जर्मन और पाकिस्तान की उर्दू। मगर बहुभाषी देशों के साथ यह समस्या है। यहाँ राष्ट्रभाषा और राजभाषा अलग-अलग होती हैं।

हालांकि आज़ादी के बाद इसे लेकर तमाम तरह के विवाद हुए और अंततः अंग्रेज़ी के साथ इसे राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। शुरुआत में तो यह प्रावधान 15 वर्षों के लिए था और साथ ही

संसद को भी यह शक्ति दी गई थी कि वह अंग्रेज़ी के प्रयोग की अवधि को बढ़ा सकता है। वर्ष 1965 में हिंदी को एकमात्र राजभाषा बनाई जाने के समय से पूर्व ही गैर-हिंदी भाषी राज्यों का विरोध इस कदर तीव्र हो गया कि अंततः तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू को गैर-हिंदी भाषी राज्यों को यह आश्वासन देना पड़ा कि आपकी सहमति के बिना हिंदी को एकमात्र राजभाषा नहीं बनाई जाएगी।

इसीलिए वर्ष 1963 में राजभाषा अधिनियम पारित किया गया। वर्ष 1967 में इसे संशोधित किया गया। इसमें किए गए प्रावधानों से गैर हिंदी भाषी राज्यों की तो चिंता खत्म हो गई मगर हिंदी को राष्ट्रीय एकता का प्रमुख तत्व मानने वाले लोगों की चिंताएं बढ़ गईं। सरकार ने इन चिंताओं को संबोधित करते हुए त्रिभाषा सूत्र बना दिया। इसके अंतर्गत पहली भाषा मातृभाषा होगी जिसमें प्रारंभिक शिक्षा दी जाएगी। दूसरी भाषा गैर हिंदी भाषियों के लिए हिंदी और हिंदी भाषियों के लिए आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कोई भाषा होगी। तीसरी भाषा अंतर्राष्ट्रीय भाषा यानी अंग्रेज़ी होगी ताकि शिक्षित भारतीय विश्व के साथ आसानी से जुड़ सकें।

हालांकि विभिन्न राज्यों की सहमति के अभाव में इसे लागू नहीं किया जा सका। इसी क्रम में वर्ष 1976 में राजभाषा नियम लाया गया और इसके तहत राजभाषा विभाग की स्थापना की गई। यह विभाग हिंदी के प्रचार-प्रसार से संबंधित विभिन्न समारोहों, जैसे हिंदी दिवस और पखवाड़ा का आयोजन

करता है। इसी के तत्वावधान में 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस भी मनाया जाता है।

अगर हिंदी भाषा की संवैधानिक स्थिति की बात की जाए तो यह राजभाषा के रूप में संविधान के भाग 5, भाग 6, भाग 17 में समाविष्ट है। भाग 17 में राजभाषा शीर्षक के अंतर्गत 4 अध्याय हैं। इसमें संघ शासन, प्रादेशिक शासन, उच्च और उच्चतम न्यायालयों में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष निर्देश दिए गए हैं।

भाग 5 के अनुच्छेद 120 में बताया गया है कि संसदीय कामकाज की भाषा हिंदी और अंग्रेजी होगी। यदि किन्हीं सदस्यों को इन्हें बोलने में दिक्कत है तो वे अध्यक्ष महोदय की अनुमति लेकर अपनी भाषा में बात रख सकते हैं। भाग 6 के अंतर्गत अनुच्छेद 210 में राज्य विधानमंडल के लिए भी ऐसे प्रावधान हैं।

अगर हिंदी भाषा की वैश्विक स्थिति की बात की जाए तो यह विश्व के 150 से अधिक देशों में फैले 2 करोड़ भारतीयों द्वारा बोली जाती है। इसके अलावा 40 देशों के 600 से अधिक विश्वविद्यालयों और स्कूलों में हिंदी पढ़ाई जाती है। एक सर्वेक्षण के मुताबिक विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा मंदारिन है तो दूसरा स्थान हिंदी को प्राप्त है। इसके अलावा यह फिजी की भी राजभाषा है। ब्रिटिश भारत-काल के दौरान बहुत से श्रमिकों को भारत से बाहर ले जाया गया था। इनमें से अधिकांश देशों में हिंदी भाषा आज एक क्षेत्रीय भाषा है; ये देश हैं- मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिनाद, गुयाना आदि। मॉरीशस में तो विश्व हिंदी सचिवालय की भी स्थापना की गई है। हालांकि संयुक्त

राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा अभी भी हिंदी को नहीं मिल सका है।

अगर हिंदी की एक भाषा के तौर पर सामयिक स्थिति का विश्लेषण किया जाए तो इसके समक्ष अनेक चुनौतियाँ दृष्टिगत होती हैं। सबसे बड़ी चुनौती तो इसे 'राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार्यता' का न मिलना ही है। इसके अलावा एक उच्च शिक्षित अभिजात्य वर्ग ऐसा भी है जो हिंदी बोलने में शर्म और हिचकिचाहट महसूस करता है। हिंदी भारत की सार्वभौमिक संवाद की भाषा भी नहीं है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की 41 फीसदी आबादी की मातृभाषा हिंदी है। इसके अलावा लगभग 75 फीसदी भारतीयों की दूसरी भाषा हिंदी है जो इसे बोल और समझ सकते हैं।

हिंदी भाषा के सामने एक प्रमुख चुनौती यह भी है कि यह अब तक रोजगार की भाषा नहीं बन पाई है। आज तमाम बहुराष्ट्रीय कंपनियों के दैनिक कामकाज से लेकर कार्य-संचालन और तकनीकी शिक्षा का माध्यम ज़्यादातर अंग्रेजी ही है। बहुभाषा एवं संस्कृति भी हिंदी के प्रसार में अवरोध का काम करती हैं। हिंदी भाषा की हालत आज ऐसी है कि इसके संबंध में जागरूकता पैदा करने के लिए विभिन्न संगोष्ठियों, समारोहों और कार्यक्रमों का सहारा लेना पड़ता है।

हालांकि इंटरनेट के बढ़ते इस्तेमाल ने हिंदी भाषा के भविष्य के संबंध में नई राहें दिखाई हैं। गूगल के अनुसार भारत में अंग्रेजी भाषा में जहाँ विषयवस्तु निर्माण की रफ्तार 19 फीसदी है तो हिंदी के लिए यह आंकड़ा 94 फीसदी है। इसलिए हिंदी को नई

सूचना-प्रौद्योगिकी की ज़रूरतों के मुताबिक ढाला जाए तो यह इस भाषा के विकास में बेहद उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इसके लिए सरकारी और गैर सरकारी संगठनों के स्तर पर तो प्रयास किए ही जाने चाहिए, निजी स्तर पर भी लोगों के द्वारा इसे खूब प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इसके अलावा हिंदी भाषियों को गैर-हिंदी भाषियों का खुले

दिल से स्वीकार करना होगा। उनकी भाषा और संस्कृति को समझना होगा तभी वे हिंदी को खुले मन से स्वीकार करने को तैयार होंगे।

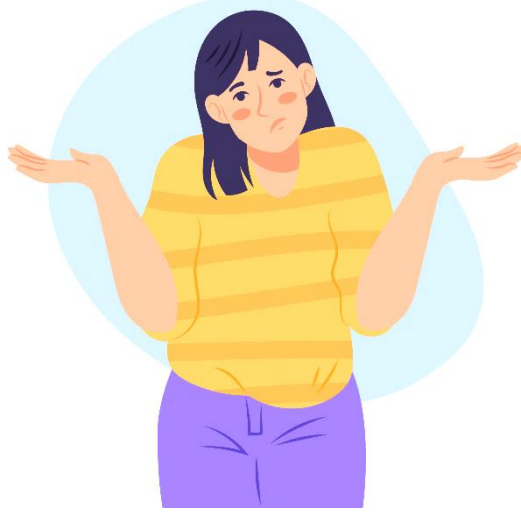


अनूप कुमार

लेखापरीक्षक, प्रशा.-II/प्र.म.ले.(ले.प.-II)

साहित्य मानव-जीवन से सीधा उत्पन्न होकर सीधे मानव-जीवन को प्रभावित करता है। साहित्य में उन सारी बातों का जीवंत विवरण होता है जिसे मनुष्य ने देखा है, अनुभव किया है, सोचा है और समझा है।”
आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी

“कुछ भी नहीं किया मैंने”



हाँ, यह सच है कि कुछ नहीं किया मैंने।
मुझे कहाँ पता था कि दुनिया हिसाब पूछती है,
क्या कुछ किया है आज तक, यह सवाल पूछती है,
जब उठ रही हैं इतनी उंगलियां मुझपर,
तो आज जवाब देने को ठन लिया है मैंने,
हाँ, यह सच है कि कुछ नहीं किया है मैंने।

इल्जाम जो लगाया “कुछ भी” न करने पर मुझपर,
तो सोचने लगी मैं मन ही मन में हँसकर,
माना कि आज तक किसी को कुछ नहीं दिया हो,
पर आज तक किसी का कुछ छीना भी नहीं मैंने,
हाँ, यह सच है कि कुछ नहीं किया मैंने
किसी का हाथ पकड़े, शायद नहीं खड़ी थी,
पर साथ देने का सूण वादा नहीं किया था;
आंसू भले न पोंछे हो आज तक किसी के,
पर उनके आंसुओं का सौदा नहीं किया था,
मैं मानती हूँ घावों पर मरहम नहीं लगाया

पर आज तक किसी को ज़ख्म भी नहीं दिया मैंने
हाँ, यह सच है कि कुछ नहीं किया है मैंने।

कितनी भी मुश्किल झेली, कितने ही आंसू रोए,
फायदे की गंगा में फिर भी न हाथ धोए
थे कितने दर्द दिल में, पर इल्ज़ाम न लगाया,
अपनी खुशी की खातिर अपनों को नहीं रुलाया,
खुद को उठाने के लिए दूसरों को नहीं गिराया मैंने
हाँ, यह सच है कि कुछ नहीं किया मैंने।

कुछ करना ही होता तो पलटवार किया होता,
अपने और दूसरों के किए का हिसाब किया होता।
पर फितरत नहीं थी ऐसी कि कुछ कर सकूँ अभी भी,
हाँ, यह सच है कि अब भी कुछ नहीं किया मैंने।



आरती प्रिय दर्शनी
व.ले.प./कें.स्वा.नि./प्र.नि.ले.प.(कें.)

“भाषा बिना व्यर्थ ही जाता ईश्वरीय भी ज्ञान,
सब दानों से बहुत बड़ा है ईश्वर का यह दान ॥”

मैथिली शरण गुप्त

द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, सूरत- एक अभिनव पहल



यह सभी जानते हैं कि भाषा आपसी संप्रेषण का माध्यम है, चाहे वह सांकेतिक, मौखिक अथवा लिखित हो। सभ्यता के विकास के साथ-साथ भाषाओं का भी विकास हुआ है। कालानुसार, मानव-समाज में हजारों भाषाओं का विकास हुआ है। हमारा देश भारत भी एक बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक देश है। हमारे देश में 'कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बदले बानी' वाली कहावत चरितार्थ होती है। यहाँ पर भाषाओं की इतनी विविधता है कि एक ही भाषा में अनेकों बोलियाँ भी बोली जाती हैं। परंतु किसी भी देश में राजकाज चलाने के लिए एक सशक्त भाषा की आवश्यकता होती है जो देश में सर्वव्यापी, सरल और सुग्राह्य हो। इसीलिए स्वतंत्र भारत के लिए सरकारी कामकाज हेतु संविधान निर्माताओं ने सभी

समर्थ भाषाओं में से हिंदी भाषा को चुना, क्योंकि स्वतंत्रता के पहले अंग्रेज़ी भाषा ही सरकारी कामकाज की भाषा थी जिसे कुछ मुट्ठी भर अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे लोग ही समझ पाते थे। आज़ादी के बाद अंग्रेज़ी की जगह पर आम सहमति से अपने देश की सरकारी भाषा के रूप में हिंदी को अपनाया गया, क्योंकि अन्य भारतीय भाषाओं की अपेक्षा हिंदी बहुतायत लोगों द्वारा बोली एवं समझी जाती है। आज़ादी की लड़ाई में भी स्वतंत्रता सेनानियों ने देश को स्वतंत्र कराने में हिंदी को ही आपसी संपर्क की भाषा बनाई थी। हिंदी को अपनाने के लिए इसको संवैधानिक दर्जा भी दिया गया है। संविधान के भाग 17 के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा हिंदी के प्रयोग, प्रचार-प्रसार एवं प्रगति के लिए विभिन्न प्रकार के प्रावधानों का उल्लेख

किया गया है। 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला और तब से लेकर अब तक सभी सरकारी कार्यालयों में इस दिन को हिंदी दिवस के रूप में बड़ी धूमधाम से उत्सव की तरह मनाया जाता है।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए गृह मंत्रालय द्वारा प्रति वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। परंतु वर्ष 2019 में विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित हिंदी दिवस समारोह में माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा था कि हम हिंदी दिवस समारोह को अगले वर्ष से नई दिल्ली के बाहर अन्य क्षेत्रों में जनता के बीच मनाएंगे। अपनी इसी बात को चरितार्थ करते हुए पिछले वर्ष नवंबर 2021 में पहली बार नई दिल्ली से बाहर प्रथम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन वाराणसी में आयोजित किया गया था। इस वर्ष हिंदी दिवस समारोह 2022 एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन गुजरात राज्य के प्रसिद्ध औद्योगिक शहर सूरत के पंडित दीन दयाल इंडोर स्टेडियम में दिनांक 14 एवं 15 सितंबर 2022 को आयोजित किया गया है।

हिंदी दिवस समारोह के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि माननीय केंद्रीय गृह मंत्री, विशिष्ट अतिथिगण शिक्षा मंत्री, तीनों केंद्रीय गृह राज्य मंत्री, गुजरात के मुख्यमंत्री, राज्य सभा के उप सभापति, संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति के पूर्व उपाध्यक्ष, कई विशिष्ट सांसद, फिल्म जगत एवं हिंदी साहित्य के विद्वान भी शामिल थे। राजभाषा विभाग

के अधिकारी एवं केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों, बैंकों, सार्वजनिक 7000 उपक्रमों आदि से आए हुए लगभग राजभाषा कर्मियों, हिंदी प्रेमियों ने इस विशाल सम्मेलन में भाग लिया और विभिन्न सत्रों के दौरान उनके व्याख्यानो को सुनकर लाभान्वित हुए।

विशाल भव्य मंच से सुप्रसिद्ध भाषाविद् श्री नरेश मोहन एवं उनकी महिला सहयोगी मंच संचालन कर रहे थे। उनकी बुलंद और जोशीली आवाज़ से पूरा वातावरण गुंजायमान हो रहा था, दर्शकों को उनकी ओजस्वी वाणी मंत्रमुग्ध कर रही थी। सभी विशिष्ट अतिथि बेसब्री से मुख्य अतिथि के आने का इंतज़ार कर रहे थे। सुबह ठीक 10.30 बजे मुख्य अतिथि गृह मंत्री अपने तीनों केंद्रीय गृह राज्य मंत्रियों के साथ पधारे। स्टेडियम में विराजमान सभी महानुभावों ने खड़े होकर करतल ध्वनि से उनका स्वागत किया। राजभाषा विभाग की सचिव ने मुख्य अतिथियों का पुष्प गुच्छों से स्वागत किया। तत्पश्चात् वैदिक श्लोकों एवं ईश वंदना के साथ सभी मंचासीन अतिथियों ने दीप प्रज्वलित किया। प्रज्वलित दीपों के साथ भव्य मंच दिव्यता का आभास करा रहा था। माननीय गृह मंत्री ने विभिन्न क्षेत्रों के कार्यालयों द्वारा राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट निष्पादन पर कार्यालयाध्यक्षों को पुरस्कृत किया और हिंदी में मौलिक उत्कृष्ट पुस्तकों के लेखन पर लेखकों को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार एवं उत्कृष्ट हिंदी गृह पत्रिकाओं हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार प्रदान किए। केंद्रीय गृह राज्य मंत्री ने हिंदी के विकास पर संतोष जताया तथा राजभाषा

हिंदी में कार्य करने वालों को बधाई दी। गुजरात राज्य के माननीय मुख्यमंत्री ने भी सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी और गुजराती भाषा की तुलना हिंदी से करते हुए कहा कि गुजराती और हिंदी दोनों सगी बहनें जैसी हैं। गुजरात के कई महापुरुषों ने अपने साहित्य में हिंदी का भरपूर प्रयोग किया है, जैसे स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपनी सुविख्यात पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' हिंदी में ही लिखी थी। तत्पश्चात् माननीय केंद्रीय गृह मंत्री ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राजभाषा के बिना अपना राष्ट्र गूंगा है, आगे उन्होंने कहा कि प्रस्तावित नई शिक्षा नीति में प्राथमिक शिक्षा बच्चों की स्वभाषा अर्थात् मातृभाषा में प्रदान करने का प्रावधान किया गया है। देशवासियों को आज़ादी के अमृत महोत्सव पर हिंदी अपनाने पर ज़ोर देते हुए उन्होंने कहा कि जिस भाषा में आप कल्पना करते हैं, स्वप्न देखते हैं, उसी भाषा में वैज्ञानिक अनुसंधान करें और यह भी कहा कि अंग्रेज़ी भाषा विद्वता का पैमाना नहीं है। उन्होंने कहा कि अनुसंधान की भाषा भी हिंदी होनी चाहिए। हिंदी की शब्द संपदा बढ़ाने के लिए सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों को एक प्लेटफार्म में लाकर हिंदी 'शब्दसिंधु संस्करण-1' का डिजिटल लोकार्पण उन्होंने किया जिसमें तकनीकी, मीडिया, राजनीति, चिकित्सा और सांस्कृतिक शब्द सम्मिलित हैं। गृह मंत्री ने भारतीय अंतरिक्ष विभाग के वैज्ञानिकों द्वारा 75 वर्षों की अंतरिक्ष विकास यात्रा को काव्यात्मक रूप में लिखी हुई पुस्तक का लोकार्पण किया। इसके साथ ही उन्होंने स्मृति आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर के लिए

'कंठस्थ संस्करण-2.0 टूल' का भी लोकार्पण किया। यह टूल राजभाषा अनुवाद कार्य से जुड़े हुए लोगों के लिए मील का पत्थर साबित होगा। इसका अनुवाद अन्य गूगल अनुवादों की अपेक्षा अधिक सटीक रहता है। माननीय मंत्री महोदय ने कहा कि हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिद्वंद्वी नहीं, बल्कि एक सखी है। दुनिया के सभी देश हिंदी सीखना चाहते हैं और संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपने कार्यालयों में राजभाषा हिंदी में कामकाज करने को मान्यता दी है। उन्होंने विदेशों में हिंदी की लोकप्रियता बढ़ने पर अत्यंत खुशी ज़ाहिर करते हुए बधाई दी। माननीय मंत्री महोदय ने सभी राजभाषा कर्मियों से आह्वान किया कि वे गुलामी का प्रतीक अंग्रेज़ी के मोह को त्याग कर हिंदी के प्रयोग को और अधिक बढ़ाएं। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी में मेडिकल (MBBS) की पढ़ाई इसी सत्र से मध्य प्रदेश में शुरू की जा रही है। चिकित्सा शास्त्र के कठिन शब्दों को हिंदी में अनुवाद करने वाले विद्वानों को हार्दिक बधाई देते हुए उन्होंने अगले वर्ष से अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग) की पढ़ाई भी हिंदी में कराने का आश्वासन दिया। उन्होंने न्याय की भाषा में भी हिंदी के प्रयोग पर बल दिया है। माननीय गृह मंत्री ने कहा कि हमारी राजभाषा और स्थानीय भाषाएं विश्व की सबसे प्राचीन भाषाएं हैं, किसी भी स्थानीय भाषा को लघु नहीं समझना चाहिए। हमने सभी भाषाओं को समृद्ध बनाने का निर्णय लिया है। हमने राजभाषा हिंदी का पहला सम्मेलन काशी में इसीलिए किया, क्योंकि वह खड़ी बोली हिंदी के जनक भारतेन्दु हरिश्चंद्र की जन्म एवं कर्मस्थली

रही है। हमारा प्रयास है कि हिंदी विश्व की भाषा बने क्योंकि हमारे प्रयासों से हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बन गई है और विश्व के कई विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। विश्व के कोने-कोने में रहने वाले भारतीयों के लिए यह बड़े गर्व की बात होगी कि आने वाले समय में उनकी राजभाषा हिंदी विश्व की भाषा बन जाए। यह भी बड़े गर्व की बात है कि हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री महोदय विश्व मंच में जहाँ भी बोलते हैं, देश की भाषा हिंदी में ही बात करते हैं। उन्होंने माता-पिताओं से भी संकल्प लेने का अनुरोध किया कि वे अपने बच्चों से हिंदी में ही वार्तालाप करें, जिससे देश के भावी नागरिकों में भी स्वभाषा और स्वदेश के प्रति सम्मान बढ़े और देश के शत-प्रतिशत लोगों द्वारा उनकी क्षमताओं का उपयोग हो सके। तत्पश्चात् राजभाषा विभाग की संयुक्त सचिव डॉ. मीनाक्षी जॉली ने माननीय गृह मंत्री, गृह राज्य मंत्रियों, गुजरात के मुख्यमंत्री महोदय तथा अन्य विशिष्ट अतिथियों, सांसदों, हिंदी के विख्यात विद्वानों आदि सभी का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए आभार जताया और आश्वस्त किया कि हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक बढ़ाया जाएगा। धन्यवाद ज्ञापन के बाद सभी अतिथियों के लिए सुरुचिपूर्ण भोजन की व्यवस्था थी।

द्वितीय सत्र में राज्य सभा के माननीय उपसभापति महोदय ने राजभाषा हिंदी के बढ़ते प्रभाव पर अपने विचारों को साझा किया। उन्होंने अपनी पत्रकारिता के समय में हिंदी भाषा में अच्छे निबंधों, लेखों पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् डॉ. भर्तृहरि

मेहताब, संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष ने कहा कि मेरी मातृभाषा उड़िया है, मुझे अच्छी हिंदी नहीं आती है फिर भी मुझे राजभाषा की प्रगति के लिए गठित संसदीय समिति में कार्य करना अच्छा लगता है। उनके बाद डॉ. सत्य नारायण जटिया, राजस्थान से राज्य सभा सांसद एवं भूतपूर्व उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति ने अपनी ओजस्वी वाणी से हिंदी का महत्व बतलाया। वे बड़े विद्वान हैं और उनकी पकड़ संस्कृत, हिंदी और अंग्रेज़ी में बराबर रूप से है। उन्होंने पिछले 75 वर्षों में राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा पर अपने विचार व्यक्त किए और अनेकों दृष्टांतों तथा शैरो-शायरियों से हिंदी को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। आगे, पद्मश्री पुरस्कार विजेता श्री प्रसून जोशी, अध्यक्ष, केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड ने कहा कि भाषा बहुत महत्वपूर्ण है, कोई भी भाषा इतनी सक्षम नहीं है कि वह मन के अंतर्भावों को सूक्ष्मातिसूक्ष्म रूप में अभिव्यक्त कर सके। उन्होंने कहा कि हिंदी प्रेमियों के अंतर्मन में यह बैठना चाहिए कि लक्ष्य अभी दूर है। चूंकि वे माने हुए कवि भी हैं, अतः अपनी बात को काव्यात्मक शैली में प्रस्तुत करते हुए कहा कि **“सीखो न नैनों की भाषा, सीखो लफ़्ज़ों की भाषा”** **“भाषा तो हिंदी ही है, हुनर अंग्रेज़ी हो सकता है।”** श्री गंगा सिंह राजपूत, आई.ए.एस. (जिन्होंने मात्र 23 वर्ष की आयु में हिंदी माध्यम से सिविल सेवा की परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर 33वीं रैंक प्राप्त की है और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से हिंदी में स्नातकोत्तर किया है) ने कहा कि भाषा एक बहता हुआ नीर है, यदि

भाषा अड़ जाएगी तो वह सड़ जाएगी। उनके बाद श्री निशांत जैन, आई.ए.एस. जो 2014 बैच के हिंदी माध्यम से चयनित एवं जिलाधिकारी के पद पर कार्यरत हैं, अपने संबोधन में कहा कि हिंदी में रोजगार की अपार संभावनाएं हैं क्योंकि वे स्वयं संघ लोक सेवा आयोग में चयन के पहले लोकसभा में हिंदी अनुवादक के पद पर कार्यरत थे। उनकी हिंदी में लिखी हुई कई प्रेरणादायक पुस्तकें हैं जिनमें प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए हिंदी निबंधों की पुस्तकें अत्यंत लोकप्रिय हैं। सत्र के अंतिम वक्ता के रूप में सुप्रसिद्ध फिल्म नायक श्री पंकज त्रिपाठी जिन्होंने 300 से अधिक फिल्मों, सीरियलों, वेब सीरीजों में काम किया है और अपने बेहतर अभिनय से बरेली की बर्फी, गैंग्स ऑफ वासेपुर, मिमी जैसी पुरस्कृत फिल्मों में जान डाल दी है, ने ठेठ हिंदी के वाक्यों पर जोर दिया और कहा कि माटी की सोंधी सुगंध बोलचाल की हिंदी के प्रयोग से अधिक सुवासित होती है, अतः यथासंभव सरल और आसानी से समझ में आने वाली हिंदी का प्रयोग करना चाहिए। तत्पश्चात् सायं 6.30 बजे चाय के साथ सम्मेलन का प्रथम दिन सोल्लास समाप्त हुआ।

सम्मेलन के द्वितीय दिन सर्वप्रथम संसदीय राजभाषा समिति की संयोजक एवं सांसद श्रीमती रीता बहुगुणा जोशी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मैकाले ने ब्रिटिश सरकार को अपने भेजे हुए पत्र में लिखा था कि भारत में ईसाईकरण करने के लिए भाषा परिवर्तन आवश्यक है। इसी बात पर गाँधी जी कहते थे कि अंग्रेज़ी के महासागर में गोते लगाने से मुझे काफी सीपें

मिली हैं, फिर भी हिंदी मेरे लिए स्वराज का प्रश्न है। श्रीमती बहुगुणा जोशी ने कहा कि रूस, चीन, जापान, फ्रांस, जर्मनी, इज़राइल आदि की भाषा उनकी स्वभाषा ही है तो फिर हिंदी अपनी स्वभाषा क्यों नहीं हो सकती? उन्होंने हिंदी के गुणों का जिक्र करते हुए कहा कि यह एक सरल एवं सहज भाषा है, पूर्वाग्रह से रहित है और जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी जाती है। उन्होंने कहा कि नव भारत के निर्माण में गांधीजी एवं पटेल का बहुत बड़ा योगदान है, पटेल की तुलना बिस्मार्क से की जाती है। उन्होंने तत्कालीन भारत के 565 छोटे-छोटे गणराज्यों को मिलाकर एक अखंड भारत का निर्माण किया था। पटेल की अदम्य इच्छाशक्ति के कारण ही भारत एक हुआ है और उन्हें लौहपुरुष की संज्ञा दी गई है। महात्मा गाँधी एवं सरदार पटेल की यही इच्छा थी कि भारत की एक ही सरकारी भाषा हिंदी होनी चाहिए।

आगे, उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष श्री हृदय नारायण दीक्षित जो हिंदी के प्रकांड विद्वान हैं, ने कहा कि अंग्रेज़ियत के मोह के कारण हम भारत के सिर्फ 5%-10% लोगों की क्षमताओं का ही प्रयोग कर पाते हैं। एशिया महाद्वीप के 48 देशों में भारत के अलावा ऐसा कोई देश नहीं है जहाँ पर अंग्रेज़ी को अधिक तवज्जो दी जा रही है। उन्होंने आगे कहा कि हिंदी को राजभाषा बनाने का सर्वप्रथम प्रस्ताव संविधान प्रारूप समिति के दक्षिण भारतीय सदस्य श्री एन गोपालस्वामी अय्यंगार का था जिन्होंने हिंदी को राजभाषा और अंग्रेज़ी को एकदम से नहीं छोड़ने के लिए प्रारंभिक रूप में 15 वर्षों तक अंग्रेज़ी को अनिवार्य करने के लिए प्रस्ताव

दिया था। उनके प्रस्ताव का अनुमोदन कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी जी ने किया था। इसीलिए संविधान सभा ने मुंशी-अय्यंगार सूत्र को कुछ संशोधनों के साथ अपना लिया था। तत्पश्चात् प्रोफेसर श्री राम मनोहर पाठक, पूर्व कुलपति, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई ने अपने उद्बोधन में कहा कि “भाषा का प्रश्न भाव और भावनाओं से संबंधित है।” उन्होंने महादेवी वर्मा के इस कथन को उद्धृत किया कि “अंग्रेज़ी की राख ने हमारी हिंदी की चिंगारी को दबा रखा है, जब तक यह राख नहीं उठेगी तब तक चिंगारी नहीं निकलेगी।” उन्होंने हिंदी प्रेमियों से आह्वान करते हुए दुष्यंत कुमार की यह कविता सुनाई कि “कौन कहता है कि आसमां में सुराख नहीं हो सकता, ज़रा एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों।” आगे उन्होंने भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद, जो संविधान सभा के अध्यक्ष भी थे, को उद्धृत करते हुए कहा कि मुझे इस बात का कष्ट रहेगा कि हमारा संविधान मूल रूप से हिंदी में नहीं बना, बल्कि अंग्रेज़ी में लिखा गया है और अब हमें केवल अनुवाद से ही काम चलाना पड़ेगा। उनके बाद अगले विद्वान प्रो. रमाशंकर दुबे, जैव रसायन के प्रसिद्ध वैज्ञानिक और गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति, ने कहा कि मैकाले ने हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति को तो नष्ट किया ही, सांस्कृतिक विरासत, साझी संस्कृति और अनेक भारतीय विचारों को भी ध्वस्त किया। इन्हीं के पुनरुत्थान के लिए महामना मदन मोहन मालवीय जी ने फरवरी 1916 में बनारस हिंदू

विश्वविद्यालय की स्थापना की जिसमें सदाचार, नैतिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक एवं व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था की गई। बाद में मालवीय जी ने 1920 में हिंदी विभाग की स्थापना की और हिंदी-हिंदू-हिंदुस्तान के उत्थान का नारा दिया।

द्वितीय सत्र में राजभाषा विभाग के अधिकारी श्री कुमारपाल शर्मा ने अगले वक्ता पद्मश्री पुरस्कृत श्री आलोक मेहता, वरिष्ठ पत्रकार का परिचय देते हुए कहा कि हिंदी हमारी भाषाई समन्वय का आधार है। इसमें सभी भाषाओं को साथ लेकर चलने का सामर्थ्य है। श्री आलोक मेहता जी ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी की कट्टरता स्वीकार्य नहीं है। जो भी शब्द आएँ उन्हें हिंदी से जोड़ दें और इसे संस्कृतनिष्ठ न बनाएं। बहमनी साम्राज्य और आदिलशाह के राज्य में दक्खिनी हिंदी बोली जाती थी और तंजावूर के शासन में हिंदी में यक्षगान लिखा गया था। कच्छ, सौराष्ट्र आदि के शासकों ने हिंदी कवियों को आश्रय प्रदान किया। उन्होंने कहा कि भाषा की शिथिलता व्यक्ति को शिथिल बना देती है। बीजिंग विश्वविद्यालय में हमारे कई वैदिक ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद हुआ है और वे अनूदित ग्रंथ चीनियों को पढ़ाए जा रहे हैं। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी से कहा था कि तुम्हारी परंपरा बहुत ही शक्तिशाली है, तुम कभी दूसरों की तरफ मत ताकना और अपना दिल कभी भी छोटा मत करना। मंदिरों, धार्मिक स्थानों में पूजा के फूल की जगह पर छोटी-छोटी हिंदी की पुस्तकों का दान करना। मेहता जी के बाद महान भाषा विद्वान श्री चामुख कृष्ण

शास्त्री, जो केंद्र सरकार की भाषा समिति के अध्यक्ष भी हैं, वे पिछले 40 वर्षों से संस्कृत का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं और वे सात भाषाओं पर पूरा अधिकार रखते हैं। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि सर्व समावेशक संस्कृति भारतीय भाषाओं की देन है, सभी भारतीय भाषाओं में अक्षर, ध्वनि-व्यवस्था, वाक्यों में अंतर्निहित व्याकरण, वाक्य संरचना का नियम समान है। उन्होंने किसी भी भाषा के विकास के लिए 7 आवश्यक तत्व बताए हैं जो निम्न प्रकार हैं।

1. भाषा के विकास में सर्वाधिक प्रभाव बोलने, पढ़ने और लिखने वालों की संख्या पर निर्भर करता है।
2. साहित्य, प्रशासन, वाणिज्य, विज्ञान, अनुसंधान, कानून आदि विषयों की शिक्षा उसी भाषा में होनी चाहिए।
3. समकालीन एवं तत्कालीन साहित्य की प्रचुर मात्रा होनी चाहिए।
4. समकालीन शब्द भंडार अर्थात् शब्दकोश में प्रचुर मात्रा में शब्द और व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है।
5. कॉर्पोरेट और तकनीकी सामग्री की प्रचुर उपलब्धता होनी चाहिए।
6. पठन-पाठन सामग्री की उपलब्धता होनी चाहिए।
7. आश्रय जैसे राजाश्रय और समाज का आश्रय भी आवश्यक है।

आगे उन्होंने कहा कि हिंदी सहित हर भारतीय भाषा अपने आप में परिपूर्ण है जैसे सूर्य के लिए हिंदी में अनेक शब्द हैं परंतु अंग्रेज़ी में केवल एक शब्द सन (SUN) ही है। उसी प्रकार पानी के लिए अंग्रेज़ी में केवल 'वाटर' है जबकि हिंदी में नीर, जल, अंबु,

वारि आदि का प्रयोग संदर्भानुसार किया जाता है।

उनके बाद संसदीय राजभाषा समिति की सदस्य और राज्य सभा की सांसद श्रीमती संगीता यादव ने सूरत नगरी का परिचय देते हुए कहा कि यह मनोरथ को पूर्ण करने वाली है और सूर्यपुत्री माँ ताप्ती नदी के किनारे यह नगरी बसी है साथ ही इस नगरी में ताप्ती नदी का मधुर जल और समुद्र के खारे पानी का संगम भी है। यहाँ पर 51 शक्ति पीठों में से प्रसिद्ध एक शक्ति पीठ माँ अंबुजा का मंदिर भी है। राजभाषा और राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर विचार करते हुए उन्होंने कहा कि राजभाषा शासन की भाषा है जो व्याकरणों से बंधी होती है और इसमें कोई भी त्रुटि मान्य नहीं है। जबकि राष्ट्रभाषा जनमानस की भाषा होती है इसमें कोई अनुशासन नहीं होता है, जैसे हिंदी 18 प्रकार की बोलियों का सम्मिश्रण है और यह सभी के समन्वय से बनी है। इसके अलावा हिंदी सभी क्षेत्रीय भाषाओं की सखी है। हिंदी यह कहती है कि "सुनु सखी मैं सुता संस्कृत की, हिंदी मेरा नाम है।" हिंदी हृदय की भाषा है और यह सरल, सहज, ओजस्वी व रचनात्मक भाषा है।

दोपहर के स्वादिष्ट भोजन के उपरांत जामनगर संसदीय क्षेत्र की सांसद श्रीमती पूनमबेन ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिंदी गुजराती भाषा के सबसे नज़दीक है, यह पढ़ने, लिखने, बोलने एवं समझने में बहुत आसान है। हिंदी तोड़ने की भाषा नहीं बल्कि जोड़ने की भाषा है। हिंदी को बढ़ावा देने के लिए सबको प्रयास करना चाहिए। यह हिंद की वाणी है, हिंदी जोड़े अपनों को, हिंदी जोड़े



सपनों को। उन्होंने कहा कि कभी भारत पश्चिम की तरफ बढ़ रहा था अब पश्चिम भारत की तरफ उन्मुख हो रहा है। कभी भारत ब्रेन ड्रेन की समस्या से ग्रस्त था आज भारत ब्रेन गेन कर रहा है। तत्पश्चात् फिल्म जगत से आए हुए महान अभिनेता, पटकथा लेखक, निर्देशक पद्मश्री पुरस्कृत डॉ. चंद्र प्रकाश द्विवेदी जिन्होंने दूरदर्शन के प्रसिद्ध धारावाहिक 'चाणक्य' में अहम् भूमिका निभाई थी, ने कहा कि जैसे साहित्य समाज का दर्पण होता है वैसे ही सिनेमा भी साहित्य एवं समाज का दर्पण होता है। उनके केरियर का सफ़र डॉक्टर से शुरू होकर डाइरेक्टर तक रहा, उनकी लेखन एवं संवाद शैली विशुद्ध संस्कृतनिष्ठ हिंदी रही है और उन्होंने अपनी कला में प्राचीन भारत का गौरवशाली परिचय कराया है। उनके बाद प्रोफेसर (डॉ.) संजय द्विवेदी, महानिदेशक, भारतीय जनसंचार संस्थान एवं भारतीय फिल्म, टेलीविज़न संस्थान के शासी परिषद्

के सदस्य, ने कहा कि भारत की मीडिया में हिंदी का स्थान सर्वोच्च है। इसी प्रकार फिल्म एवं टीवी जगत में भी हिंदी का प्रभाव काफी अधिक है। उन्होंने बताया कि 1931 में बनी पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' थी और उस वर्ष कुल 33 फ़िल्में बनीं जिनमें से 22 फ़िल्में हिंदी में बनी थीं। आजकल ओ.टी.टी की फ़िल्में मुहावरों, लोकोत्तियों और ठेठ ग्रामीण हिंदी का बाज़ार बनती जा रही हैं। आने वाले समय में हिंदी का सितारा आसमान में बुलंदी से चमकेगा। तत्पश्चात् श्री अजय कुमार तोमर, आई.पी.एस, पुलिस आयुक्त, सूरत ने प्राचीन हिंदी से लेकर आधुनिक हिंदी साहित्य तक की विकास यात्रा की जानकारी दी। उन्होंने प्रसिद्ध कवि चंदबरदाई से लेकर कबीर, सूर, तुलसी, भूषण, बिहारी, भारतेन्दु हरिश्चंद्र, मुंशी प्रेमचंद, महावीर प्रसाद दिवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, रामधारी सिंह दिनकर, माखन लाल चतुर्वेदी, भवानी प्रसाद मिश्र, गोपाल दास

नीरज, धर्मवीर भारती आदि अनेकों साहित्यकारों, कवियों के कृतित्व का विशद वर्णन करते हुए अनेकों कविताओं, सूक्तियों द्वारा राष्ट्रभाषा के बारे में चर्चा करके हॉल में बैठे हुए सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। सभी लोग इस बात पर आश्चर्यचकित थे कि वर्दीधारी होकर और कानून व्यवस्था को कायम रखने की अति व्यस्तता के बावजूद इनमें कवि हृदय का दूसरा ही रूप देखने को मिल रहा है और साहित्य का इतना गूढ़ ज्ञान बिना अभिरुचि के नहीं हो सकता है। उनके बुलंद और जोशीले भाषण की समाप्ति पर उनको बधाई देने वालों का तांता लगा हुआ था।

अंत में पुनः फिल्म जगत के महान हस्ती श्री महेश मांजरेकर, फिल्म निर्माता, निर्देशक, पटकथा लेखक और अभिनेता ने सभी का अभिवादन करते हुए कहा कि मैंने अपना केरियर मराठी रंगमंच से शुरू किया था और अब हिंदी सिनेमा से मेरी बृहत् पहचान बनी है। उन्होंने कोई भी संबोधन नहीं करते हुए यह कहा कि अब यह सत्र प्रश्नमंच की तरह होना चाहिए। फिल्म और समाज से संबंधित जो भी प्रश्न आपके मस्तिष्क में आएँ, उनका हम आपसी चर्चा

से समाधान निकालेंगे। चूंकि उन्होंने कई प्रसिद्ध फ़िल्में 'वास्तव, निदान, पंजर' आदि बनाई हैं अतः उन्होंने अपने अनुभव से प्रश्नकर्ताओं की शंका का निवारण किया। सत्र के समापन में राजभाषा विभाग के निदेशक महोदय ने सम्मेलन में आए हुए सभी मंत्रियों, सांसदों, विधायकों, विशिष्ट अतिथियों, विद्वानों, गुजरात पुलिस एवं प्रशासन, कार्यकर्ताओं, व्यवस्थापकों, आयोजनकर्ताओं को हार्दिक धन्यवाद देते हुए आभार व्यक्त किया और इस बृहद् सम्मेलन के सफल आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सभी को हार्दिक बधाई दी।

इस प्रकार द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन सूरत, गुजरात में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस प्रकार के सम्मेलनों से राजभाषा कर्मियों में उत्साह का संचार होता है और यह हिंदी के विकास में उत्प्रेरक का काम करता है। आशा है कि प्रतिवर्ष इसी तरह के सम्मेलन भारत वर्ष के विभिन्न ऐतिहासिक नगरों में होते रहेंगे जिससे भारत की सांस्कृतिक एवं सामाजिक समरसता का परिचय मिलता रहेगा।

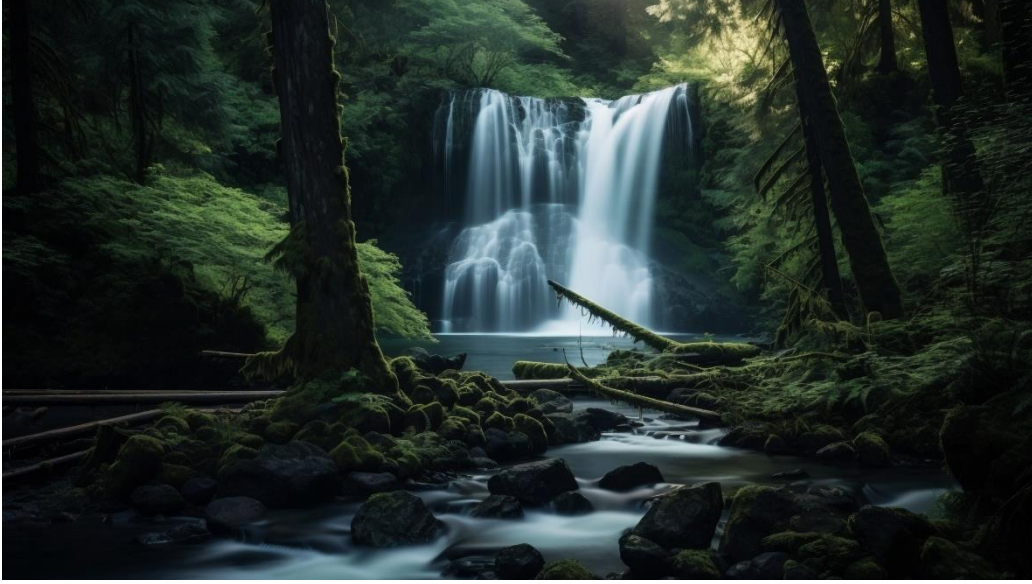
॥जय हिंद, जय हिंदी॥



देव प्रकाश गुप्त

हिंदी अधिकारी प्र.म.ले.(ले.प.-I)

प्रकृति



दो पल प्रकृति के पास बैठो,
काफी कुछ सिखाती है प्रकृति, बिन बोले
बहुत-सी बातें कह जाती है।

जब भी अकेला महसूस करता हूँ,
मैं कुछ पल प्रकृति के साथ बिताता हूँ।
बिन बोले बहुत कुछ समझाती है,
प्रकृति बिन बोले बहुत-सी बातें कह जाती
है।

पेड़-पौधे हमें मज़बूत होना सिखाते हैं,
अगर जड़ें मज़बूत हों तो आँधी या तूफ़ान
आने पर ये खुशी-खुशी लड़ जाते हैं,
अगर जड़ें कमज़ोर हों तो ज़रा-सी आँधी से
ही पेड़-पौधे उखड़ जाते हैं।

फूल हमें हँसना सिखाते हैं,
रंग-बिरंगे फूल जब भी खिलते हैं, चारों
ओर खुशी की लहर ले आते हैं,

तभी तो वे अपनी खुशबू और सुंदरता से
सबके दिलों को भाते हैं।

प्रकृति हमें सहनशीलता सिखाती है,
मनुष्य निरंतर उसका दोहन करता रहता है
और वह चुपचाप सब कुछ सहन कर जाती
है,

परंतु एक सीमा के बाद वह सूनामी, भूकंप
और बाढ़ लाकर अपना विकराल रूप
दिखाती है।

हाँ, प्रकृति बिन बोले बहुत-सी बातें कह
जाती है।



निशांत कुमार

सुपुत्र : नर्मदा कुमारी

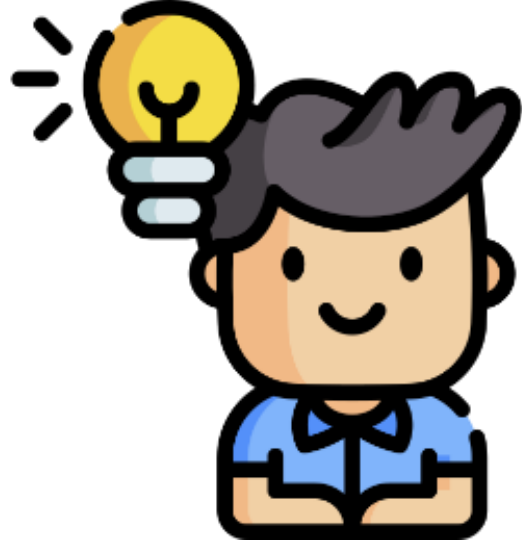
वरिष्ठ अनुवादक/प्र.म.ले.(ले.प.-I)

बुद्धिमान अवनी

बहुत पुरानी बात है। एक राजा था, उसे कहानी सुनना बहुत पसंद था। इसलिए सेनापति द्वारा पूरे राज्य में घोषणा करा दी गई कि जो भी व्यक्ति अपनी कहानी से राजा को प्रसन्न करेगा उसे बहुत सारी स्वर्ण मुद्राएं दी जाएंगी। यह खबर पूरे नगर में आग की तरह फैल गई। लोग दूर-दूर से कहानी सुनाने के लिए राजमहल में आने लगे। उन्होंने कई कहानियां सुनाईं, पर राजा बिलकुल भी प्रसन्न नहीं हुआ।

अरे यह क्या? लोगों की कहानियाँ खत्म हो गईं लेकिन राजा प्रसन्न नहीं हुआ। इस वजह से राजा ने दस लोगों को सज़ा के तौर पर काल कोठरी में बंद कर देने का आदेश दिया। एक बूढ़ी औरत जिसका नाम है गिरिजा देवी, को भी सज़ा भुगतने के लिए बंद कर दिया गया था। उसके पति की मृत्यु पंद्रह वर्ष पहले हुई थी। बेचारी गिरिजा देवी ढेर सारे सपने सजाकर राजमहल में कहानियां सुनाने के लिए आई थी। वह यह सोचकर राजमहल आई थी कि शायद उसे अपनी कहानी के बदले कुछ स्वर्ण मुद्राएं मिल जाएंगी और अपने गरीब परिवार का कुछ दिन तक भरण-पोषण हो जाएगा।

'अवनी', गिरिजा देवी का बेटा पूरा दिन परिश्रम करके जब घर लौटा तो माँ घर पर नहीं थी। पता लगाने पर उसे मालूम हुआ कि उसकी माँ राजमहल में कहानियां सुनाने गई थी और उनको काल कोठरी में बंद कर दिया गया है। यह जानकर अवनी बहुत दुखी हुआ और उसने राजा को सबक



सिखाने की ठान ली। अगले ही दिन वह राजमहल की ओर निकल पड़ा।

जब वह राजमहल पहुंचा तो सेनापति ने राजमहल आने का कारण पूछा। अवनी ने कहा- “मैं राजा को एक कहानी सुनाना चाहता हूँ।” उसने सेनापति को विश्वास दिलाया कि उसकी कहानी राजा को ज़रूर पसंद आएगी। सेनापति ने राजा के पास जाकर बताया- “कोई अवनी नाम का सत्रह वर्ष का युवक आया है और वह आपको कहानी सुनाना चाहता है।” यह सुनकर राजा ने सेनापति से कहा- “उसे सब समझा दिया जाए, यदि उसकी कहानी मुझे पसंद नहीं आई तो उसे काल कोठरी में बंद किया कर दिया जाएगा।” सेनापति ने अवनी के पास जाकर राजा द्वारा निर्धारित की गई शर्त के बारे में बताया। शर्त सुनकर मुस्कराते हुए अवनी ने कहा- “मान्यवर, चिंता न करें। मेरी कहानी राजा को ज़रूर पसंद आएगी।”

सेनापति अवनी को राजमहल के अंदर ले गया। राजा ने सेनापति को आदेश

दिया कि अवनी को शाही स्नान और भोजन कराकर विश्राम करने दिया जाए, फिर रात के समय कहानियां सुनी जाएंगी। अवनी को शाही स्नान और भोजन कराया गया। रात होते ही उसे दरबार में राजा के समक्ष लाया गया। अवनी की कहानी सुनने के लिए उत्सुक होकर सारी प्रजा राजमहल में बैठी थी।

अब चालाक व चतुर अवनी कहानी सुनाना शुरू करता है...

“एक किसान ने अपने खेत में बीज बोया था। अनेकों चिड़ियां उसके खेत की तरफ जा रही थीं। उसी समय उधर से एक राजा खेत की तरफ आ रहा था। राजा को देखकर चिड़ियां डर के मारे उड़ गई- फूरर्..... फूरर्..... फूरर्..... फूरर्। बहुत समय तक अवनी फूरर्... फूरर्..... फूरर्..... करता रहा। परेशान होकर राजा ने कहा- “अरे भाई, यह फूरर्.... फूरर्..... फूरर्... क्या है? आगे की कहानी सुनाओ।” अवनी ने बड़ी विनम्रता के साथ कहा- “महाराज, पहले सारी चिड़ियों को उड़ने तो दीजिए.. फिर आगे की कहानी सुनाता हूँ।”

राजा को पता लग चुका था कि अवनी बड़ा चालाक और चतुर है। साथ-साथ यह भी समझ गया कि अवनी की कहानी खत्म होने वाली नहीं है, क्योंकि अवनी का फूरर्..... फूरर्... जारी था। पूरी रात बीत गई पर अवनी का फूरर्..... फूरर् जारी

रहा। मुस्कराते हुए राजा ने कहा- “भाई तुम जीत गए और मैं हार गया। मैं तुम्हारी कहानी से अत्यधिक प्रसन्न हो गया हूँ।” फिर राजा ने सेनापति से कहा कि अवनी को स्वर्ण मुद्राएं दी जाएं और उसे सम्मान के साथ घर तक छोड़ दिया जाए। तब अवनी ने कहा- “महाराज, मुझे स्वर्ण मुद्राएं नहीं चाहिए। कहानी से अप्रसन्न होकर आपने जिन निर्दोष प्रजाओं को काल कोठरी में बंद कर दिया है उन्हें रिहा कर दिया जाए। नम्रतापूर्वक अवनी ने आगे कहा- “महाराज, कहानियां तो सिर्फ मनोरंजन के लिए होती हैं। उसके लिए किसी को सजा देना उचित नहीं है। उसमें मेरी बूढ़ी माँ भी है जिसे आपने सजा के तौर पर काल कोठरी में बंद कर दिया है। कृपया मेरी माँ के साथ सभी निर्दोष प्रजा को भी रिहा कर दिया जाए।” राजा ने सेनापति को आदेश दिया कि कहानी से अप्रसन्न होकर जितने लोगों को काल कोठरी में बंद कर दिया गया था उन्हें छोड़ दिया जाए।

अवनी की बुद्धिमत्ता से खुश होकर राजा ने उसे अपने महल में शिक्षक की नौकरी दे दी।

“बुद्धि का सही इस्तेमाल करने से कुछ भी नामुमकिन नहीं है।”



रंजन कुमार

ले.प./प्रत्यक्ष कर/प्र.नि.ले.प.(कें.)

बिहार के लोक नृत्य

लोक नृत्य बिहार की संस्कृति का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। लोक नृत्य आम आदमी की ज़िंदगी के विभिन्न पहलुओं को दर्शाता है। महत्वपूर्ण सामाजिक सामारोहों में ये नृत्य ढोलक, हारमोनियम जैसे वाद्ययंत्रों के साथ प्रदर्शित किए जाते हैं। बिहार के प्रमुख लोक नृत्यों में बिदेसिया, जट-जटिन, झिझिया, झूमड़, पाइका, सामा-चकेवा विशेष हैं।

बिदेसिया

इस लोक नृत्य को भिखारी ठाकुर ने बनाया था। वे पेशे से नाई थे। लेकिन वे अपने इस नृत्य के जुनून के कारण प्रसिद्ध हो गए थे। इस नृत्य में पारंपरिक-आधुनिक, अमीर-गरीब जैसे सामाजिक विषयों से संबंधित दृश्यों को दिखाया जाता है। यह नृत्य समाज में जागरूकता और महिलाओं के उत्थान की दिशा में सार्थक भूमिका निभाता है।



जट-जटिन

यह लोक नृत्य बिहार के मिथिला क्षेत्र में प्रसिद्ध है। इस नृत्य में पति-पत्नी के रिश्ते को खूबसूरती से दर्शाया जाता है।

इसके अलावा यह बाढ़ और अन्य प्राकृतिक आपदाओं को भी दर्शाता है।



झिझिया

लंबे समय तक वर्षा नहीं होने पर सूखे की स्थिति को दर्शाने के लिए यह नृत्य किया जाता है। इसमें बारिश के लिए भगवान इंद्र से प्रार्थना करना भी दिखाया जाता है। इस नृत्य में हारमोनियम का प्रयोग किया जाता है।

झूमड़

यह नृत्य गरबा के समान है। यह मिथिलांचल की विवाहित महिलाओं द्वारा किया जाता है। यह उत्सवों में किया जाता है और अधिकतर आश्विन मास में किया जाता है।

पाइका

यह युद्ध पर आधारित एक नृत्य है जिसमें कलाकार तलवार और ढाल का प्रयोग करते हैं। यह नृत्य प्राचीन काल में युद्ध-भूमि में उत्साह बढ़ाने के लिए लोगों द्वारा किया जाता था।

यह नृत्य बिहार के मिथिला क्षेत्र में प्रसिद्ध है। इस नृत्य में भाई-बहन के प्यार को दर्शाया जाता है। यह पौराणिक कथा पर आधारित है और इसमें कृष्ण की बेटी सामा की कहानी नृत्य द्वारा बताई जाती है। कार्तिक मास में पूर्णिमा के दिन महिलाओं द्वारा यह प्रदर्शित किया जाता है। छठ पर्व के बाद महिलाएं इस नृत्य की तैयारी शुरू करती हैं। यह अधिकतर रात में होता है। इसमें मिट्टी की मूर्तियों का भी प्रयोग होता है। मूर्तियों के पात्र के नाम सामा, चकेवा, चुगला रखा जाता है। नृत्य के साथ दर्शक

गुड़ के बने मीठे पकवान का भी आनंद लेते हैं।

इन नृत्यों के कलाकारों को प्रोत्साहन की ज़रूरत है। इन्हें आगे बढ़ाने के लिए इनसे जुड़े कलाकारों को मान-सम्मान देना होगा। इनकी जीविका का मुख्य साधन नृत्य ही है। केंद्र और राज्य सरकार को इन लोक-नृत्यों को संरक्षित करने के लिए प्रयास करने होंगे। कलाकारों के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण केंद्र खोलने होंगे। कलाकारों को मासिक मानदेय देना होगा। आधुनिक सिनेमा और थियेटर की तरह लोगों द्वारा इन लोक नृत्यों को भी बढ़ावा देना होगा।



संजीव चंद्र पाठक

स.ले.प.अ./ए.एम.जी.-III/ प्र.म.ले.(ले.प.-II)

“नीलांबर परिधान हरित तट पर सुंदर है।
सूर्य-चंद्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है॥
नदियां प्रेम प्रवाह, फूल तारे मंडन हैं।
बंदीजन खग-वृंद, शेषफन सिंहासन है॥
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की।
हे मातृभूमि! तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की॥”

- मैथिली शरण गुप्त

भारत की विजय-यात्रा



अंधेरे से प्रकाश की ओर तक
सूखे से सिंचाई के छोर तक
जमीन से आसमां की ओर तक
भारत की एक नई खोज तक
ऐसी रही भारत की विजय-यात्रा.....

अंग्रेजों का भारत से जाना
फिर से उठकर चल दिखाना
सभी राज्यों को एक साथ लेकर चलना
नया संविधान और नई सरकार बनाना

एकजुट से कर्तव्य-पथ तक
मिट्टी से सेनानियों के रक्त तक
ऐसी रही भारत की विजय-यात्रा.....

अशिक्षा के अंधकार से शिक्षा देना
महिलाओं को चार दीवारी से बाहर लाना
भारत में लोकतंत्र का बिगुल बजाना
अर्थव्यवस्था को ऊपर उठाना
शून्य से लेकर रुपये तक
अशिक्षा से डिजिटल इंडिया तक

ऐसी रही भारत की विजय-यात्रा.....

निर्भर भारत को आत्मनिर्भर बनाना
हर नागरिक को लोकतंत्र में भागीदार
बनाना

अंतरिक्ष में अपनी पहचान खोजना
अनेकता से एकता के सूत्र में बाँधना
अर्थव्यवस्था में पाँचवां स्थान पाने तक
दुनिया का दूसरा बड़ा लोकतंत्र बनाने तक
अंतरिक्ष की उड़ान में मंगलयान तक
स्वतंत्रता के क्रांतिकारियों से एक बड़ी
सैन्य-शक्ति तक

ऐसी रही भारत की विजय-यात्रा.....

अंधकार के तम से ज्योति तक
सोच की जड़ता से चेतनता तक
भूगोल से खगोल की ऊँचाइयों तक

मंद गति से बढ़ती त्वरित गति तक

पतझड़ से नए बसंत तक

ऐसी रही भारत की विजय-यात्रा.....

परावलंबी भारत के स्वावलंबी होने तक
प्राचीनता से आधुनिकता के नए आयाम
तक

अस्थिरता से स्थिरता के पड़ाव तक
प्रतिगमन से प्रगति की उड़ान तक
सामान्य से विशेषता की पहचान तक
ऐसी रही भारत की विजय-यात्रा.....

यह मेरा नहीं हमारा भारत है

इसकी विजय-यात्रा के सभी साझीदार हैं

इसी विजय-यात्रा को आगे बढ़ाना है

एकजुटता और मेहनत के सूत्र से प्रगति
का परचम लहराना है

फिर बढ़ेगी भारत की विजय-यात्रा.....



नर्मदा कुमारी

वरिष्ठ अनुवादक/प्र.म.ले.(ले.प.-I)

सीख



महाराष्ट्र का एक छोटा-सा शहर है नागपुर। भारत के अन्य शहरों की तरह यह भी एक बहुत ही जानदार शहर है। अधिकांश अन्य बड़े शहरों की तरह इस शहर में भी एक रेलवे स्टेशन है जहां अलग-अलग प्रांतों से ट्रेनें आती हैं और उनमें बड़ी तादाद में यात्री रोज़ सफ़र करते हैं। इसी स्टेशन में रोज़ आने वाले दो बच्चे थे रामू और श्यामू। वे अपने माता-पिता के साथ स्टेशन के पास की झोंपड़-पट्टी में रहते थे। बेरोज़गारी और गरीबी उनके जीवन को निगल रही थी। इन बच्चों के पिता प्रकाश भी अक्सर स्टेशन पर आ जाते थे। अपने परिवार को बेहतर जीवन देने का सपना साकार करना उसका एकमात्र ध्येय था। बच्चे पास के एक सरकारी स्कूल

में पढ़ने के लिए जाते थे। एक दिन रामू और श्यामू अपने पिता के साथ ट्रेन देखने के लिए स्टेशन पहुंचे। जब भी वे स्टेशन आते थे वहां की चहल-पहल और शोर-शराबा उन्हें हमेशा आकर्षित करती थीं। लोगों के कपड़े, व्यवहार और तौर-तरीकों से वे हमेशा आकर्षित रहते थे। अखबार वाले, चाय वाले, पान-सब्ज़ी वाले, नाश्ते वाले, सफाई कर्मी - इन सबकी एक अलग ही दुनिया यहां देखने को मिलती थी। ये सब देखकर बच्चों ने ठान लिया कि उन्हें भी जीवन में कुछ बनना है। रामू ने अपने पिताजी से बोलकर जूते पॉलिश करने की सामग्री मंगवाई। उसने प्लेटफार्म पर अपना स्टॉल लगाकर रोज़ सुबह स्कूल जाने से पहले हँसते-हँसते लोगों

के जूते पॉलिश करना शुरू किया। श्यामू ने एक अखबार बेचने वाले से बात की और अखबार बेचने का काम शुरू कर दिया।

एक बड़ा आदमी रोज़ रामू के पास आता था और अपने जूते रामू से पॉलिश करवाता था। उसकी सेवा और परिश्रमशीलता से वह अत्यधिक प्रसन्न था। बच्चों को प्रोत्साहन देने के लिए वह रोज़ श्यामू से अखबार भी खरीदता था। साथ ही साथ वह बच्चों को रोज़ कुछ न कुछ सीख देता था। उसने देखा कि बच्चों में सीखने की चाह और लगन बहुत अधिक थी। इसलिए वह उनके लिए किताबें लाता था और पढ़ने के लिए प्रोत्साहित भी करता था।

बच्चे भी अपनी पढ़ाई में निरंतर प्रगति करते गए। कुछ सालों के बाद अचानक एक दिन से उस बड़े आदमी का स्टेशन में आना बंद हुआ। चूंकि बच्चों को उस नेक इंसान के ठौर-ठिकाने का कोई पता नहीं था इसलिए उन्हें ढूँढ पाना उनके लिए संभव नहीं था।

सालों बाद रामू पढ़-लिखकर एक इंजीनियर बना और श्यामू एक सरकारी कर्मचारी। रामू को एक दिन एक नौकरी के

इंटरव्यू के लिए बुलाया गया। यह उसका पहला इंटरव्यू था। मन को दृढ़ करके जब वह दफ्तर पहुंचा तो उसने देखा कि इंटरव्यू लेने वाले अफसर के पैर कटे हुए थे। फिर जब उसने उनका चेहरा गौर से देखा तो वह चेहरा कुछ जाना-पहचाना-सा लगा। जब उन्होंने बात करना शुरू किया तब उसे अपने जीवन की पिछली तमाम बातें धाराप्रवाहिता के साथ एकाएक सामने दिखाई देने लगीं। इंटरव्यू के बाद जब उसे बताया गया कि उसे वह नौकरी मिली तो वह उस अफसर से मिला और बोले कि उन्हीं के प्रोत्साहन से वह अपने जीवन में इतनी तरक्की कर पाया है। वह वही आदमी था जो रोज़ स्टेशन में अपने जूते पॉलिश करवाने के लिए आता था।

बच्चों की तरक्की से वह आदमी भी बहुत खुश था और उसने उन्हें यह सीख दी कि उनको को भी समाज के उत्थान के लिए कुछ न कुछ अवश्य करना चाहिए ताकि पूरे देश की तरक्की हो सके।



शोभा जी वारियर

व.ले.प.अ./जीएसटी/ प्र.नि.ले.प.(कें.)

संघर्ष



खरगोश नहीं हम कछुए की चाल
चलेंगे,
धीरे-धीरे ही सही हम क्रमबद्ध
होकर चलेंगे,
हम संघर्ष करने वाले हैं यूं ही हार
नहीं मानेंगे,
हम संघर्ष करेंगे, आगे बढ़ेंगे।
परिणाम की चिंता न करेंगे,

अपना शत प्रतिशत देंगे, एक नहीं
सौ बार सही,
जब तक होगा तब तक करेंगे,
हम संघर्ष करेंगे, आगे बढ़ेंगे।
मुसीबतों से हम डरते नहीं,
परेशानियों से हम घबराते नहीं,
बस एक संघर्ष है जो हम खुद
चुनेंगे,
हम संघर्ष करेंगे, आगे बढ़ेंगे।

कुछ ऐसी चुनौतियां हैं,
जो हम खुद लेना पसंद करेंगे,
दूसरों से परेशान न होंगे,
हम अपने संघर्ष को चुनेंगे,
हम संघर्ष करेंगे, आगे बढ़ेंगे।
संघर्ष का दामन थाम कर,
न केवल हम आगे बढ़ेंगे,
न झुकेंगे न रुकेंगे,
कदम से कदम बढ़ाते जाएंगे,
हम संघर्ष करेंगे, आगे बढ़ेंगे।

संघर्षमय जीवन में उतार-चढ़ाव का
अनुभव करेंगे,
समय की कीमत सीखेंगे,
हम संघर्ष करेंगे, आगे बढ़ेंगे।
ठोकर खाकर जीना सीखेंगे,
गिरकर उठना सीखेंगे,
इस तरह हम जीवन जीने का
तरीका सीखेंगे,
हम संघर्ष करेंगे, आगे बढ़ेंगे।



विक्रान्त कुमार

सुपुत्र : रंजन कुमार

लेखापरीक्षक/प्र.क./ प्र.नि.ले.प.(कें.)

“सच्चा कलाकार सौंदर्य की सृष्टि करने के लिए ही कला की साधना करता है। अपनी भावनाओं, मान्यताओं अथवा विचारों का प्रसार सच्चे कलाकार का उद्देश्य नहीं होता।”

- डॉ. नगेंद्र

जीवन में अच्छे और बुरे लोगों की परख



अक्सर हम ऐसे लोगों के बीच आ जाते हैं जहाँ हम अच्छे और बुरे लोगों में फर्क नहीं समझ पाते। यह जीवन की सबसे बड़ी विडंबना है। ऐसे में कुछ बुरे लोग हमें अपने जैसे बनाने की कोशिश में रहते हैं और ऐसा करके उन्हें बेहद खुशी मिलती है। ऐसे लोग न तो खुद आगे बढ़ पाते हैं और न ही किसी को आगे बढ़ने देते हैं। अच्छे

लोगों की क्या खासियत होती है? अच्छे लोग आपको आगे बढ़ने की सलाह देने के साथ-साथ आपके लिए प्रेरणा-स्रोत भी बनते हैं। कई लोग अपने जीवन के स्तर में काफ़ी सुधार कर चुके होते हैं क्योंकि उन्हें अपने जीवन में अच्छे लोगों से ज़रूर कुछ न कुछ सीखने को मिला हुआ होता है। अपने साधनों का सही उपयोग कहाँ और कैसे करना है-

ये वे भली भांति जानते हैं। अधिकतर लोग ऐसे व्यक्तियों के बीच रहना पसंद करते हैं जो केवल उनकी झूठी तारीफ़ करते हैं। बस एक बार आप उनसे अपने लिए कोई मदद की मांग करके देखिएगा, आप खुद ही समझ जाएंगे कि वे हमारे हितैषी हैं या नहीं। नीम कड़वा ज़रूर होता है पर ज़्यादातर बीमारियों के लिए नीम हकीम होता है। कुछ लोग नीम की तरह होते हैं, लेकिन वे आपके सच्चे हितैषी भी होते हैं। ऐसे लोगों से आपको फायदा ही मिलता है। क्योंकि उनको जब आपकी बुराई करनी होती है तो वे आपके पीठ पीछे नहीं करते बल्कि आपके सामने ही करेंगे। उनकी बातें बिलकुल खरी होती हैं।

अब मैं अगर बुरे लोगों की बात करूँ तो वे नकारात्मक पहलुओं को तुरंत पकड़ने वाले होते हैं और जब हम उनके साथ रहना शुरू करते हैं तो हमारे अंदर भी वे

नकारात्मक भाव पनपने लगते हैं। हमारी सोच भी उन्हीं की जैसी होने लगती है। क्योंकि एक दूसरे के साथ घुल-मिलकर रहने के लिए हमें उनके जैसे बनना पड़ता है। यह मनुष्य का स्वाभाविक गुण है कि वह नकारात्मकता की ओर जल्दी आकर्षित हो जाता है जिसका प्रभाव उसे तब दिखाई पड़ता है जब कोई उसकी आशाओं को रौंधकर उससे आगे निकल जाता है। कई बार तो इतनी देर हो चुकी होती है कि मुकाम हाथ से पूरी तरह निकल जाता है। जो लोग मीठा बोलते हैं उनसे आपको सतर्क रहने की आवश्यकता है। हो सकता है कि वे आपके हितैषी न हों। कहने का तात्पर्य यह नहीं कि सभी लोग एक जैसे होते हैं। कुछ लोग आपकी परवाह करने वाले भी होते हैं जो आपके लिए हमेशा मंगलकारी तत्व चाहते हैं। हमें अपने जीवन में ऐसे लोग चुनने होंगे।



प्रसाद पी जोशी

सहा.पर्य./प्र.क./प्र.नि.ले.प.(कं.)

“पहले आपको खुद बदलना होगा, जैसा कि आप दुनिया को देखना चाहते हैं।”

- महात्मा गांधी

माँ का एहसास



माँ की ममता की अनमोल सूरत हो तुम
मेरे जीवन की खुबसूरत मूरत हो तुम
जी करता है तुम्हें प्यार दूँ
तेरी हर किलकारी पे अपनी जान वार दूँ।
तू सोती है तो जीवन सूना लगता है
तू जगती है तो जीवन सलोना लगता है
जी करता है तुम्हें प्यार दूँ
तेरी हर किलकारी पे अपनी जान वार दूँ।
तेरा यह बचपन, तेरा यह नटखटपन

तेरे ये नन्हे कदम, तेरे ये भोले नयन
मेरे दिल को भाते हैं
जी करता है तुम्हें प्यार दूँ
तेरी हर किलकारी पे अपनी जान वार दूँ।
तेरा भागना और पकड़े जाने पर मेरे
आँचल में छुप जाना
मंत्रमुग्ध कर जाता है, तेरी ये अदाएं मुझे
मेरे बचपन में ले जाती हैं
जी करता है तुम्हें प्यार दूँ
तेरी हर किलकारी पे अपनी जान वार दूँ।



नेहा कुमारी कर्ण

डी.ई.ओ./वी.एस.-II//प्र.म.ले.(ले.प.-II)

आदमी...



आज धूप बहुत तेज़ थी। राजस्थान में तो वैसे भी तेज़ गर्मी का होना आम बात है। लेकिन आज सूरज सिंह के लिए सूरज ही दुश्मन बना बैठा था। सूरज सिंह एक बहुत बड़ा मिर्ची व्यापारी था। आज उसे मसाले की एक बड़ी खेप दूसरे गाँव भेजनी थी। लेकिन किस्मत का खेल देखो, आज उसके सारे नौकर अन्य जगहों पर व्यस्त थे। यह सौदा बहुत ज़रूरी था इसलिए सूरज सिंह ने तय किया कि आज वह स्वयं ही सामान लेकर जाएगा। मन-ही-मन बड़बड़ाता हुआ सूरज सिंह निकल पड़ा। सारे मसाले उसने ऊँट पर चढ़ाए और तपती धूप में घर से चल पड़ा। ऊँट को तो आदत थी इस गर्मी की, पर सूरज सिंह के लिए रास्ता बहुत मुश्किल महसूस हो रहा था। रास्ते में उसने एक जगह देखी जहाँ सभी लोग अपने-अपने ऊँट को खिलाने-पिलाने के लिए रुके हुए थे। सूरज सिंह मिर्ची की तीखी गंध से परेशान हो रहा था। इसलिए उसने तय किया कि

वह वहाँ नहीं रुकेगा, अन्यथा उसका समय नष्ट होगा। सो वह आगे बढ़ गया। अन्य व्यापारियों ने उसे टोका और कहा- “अरे भाई, ज़रा इस बेजुबान को पानी पिला दो, तुम्हारा सारा बोझ यही तो उठा रहा है।” सूरज सिंह ने बिना रुके कहा- “यह कोई आदमी थोड़े ना है जो इसे भूख-प्यास लगेगी। यह ऊँट है ऊँट, अपनी कूबड़ में अपने जीने लायक खाना-पानी बचा के रखता है। आदमी होता तो मैं रुक जाता।” इतना कहकर वह आगे बढ़ गया।

चलते-चलते सूरज सिंह थक गया। वह गाँव में एक पेड़ के नीचे थोड़ी देर बैठ गया। तभी उसे रोटी की भीनी-भीनी खुशबू का एहसास हुआ जिससे उसकी भूख तेज़ हो गई। वह सोचने लगा कि ज़रूर आसपास कोई ढाबा है। उसने स्वयं से कहा- “खाने की खुशबू आ रही है। क्यों न मैं उस ढाबे में जाकर गर्म-गर्म रोटियां खा लूँ? घर से लाई रोटियां तो ठंडी हो चुकी होंगी। उन्हें वापसी में ऊँट को खिला दूंगा। यह कौन-सा आदमी है जो थके होने पर भी ठंडी रोटियां नहीं खा सकता।” इतना कहकर वह खुशबू आने वाली दिशा में चल पड़ा।

वहाँ पहुंचकर सूरज सिंह ने देखा कि एक चौराहे पर गाँव की कुछ औरतें बैठकर रोटियाँ सेंक रही हैं। ज़मीन पर पत्थरों का चूल्हा बनाया हुआ था। बात करते-करते रोटियां सेंकी जा रही थीं। कुछ औरतें पीने

का पानी भर-भर के एक जगह इकट्ठा कर रही थीं। सूरज सिंह को थोड़ा अजीब लगा क्योंकि वहां कोई भी सब्जी या दाल नहीं थी। साथ ही न वहां ढाबा जैसा कोई प्रबंध था और न ही कोई ग्राहक।

अब सूरज सिंह की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी। वह अपने ऊँट को पेड़ से बांधकर चुपचाप वहीं बैठकर सब कुछ देखने लगा। रोटियाँ लगातार बनती जा रही थीं। तभी वहां एक कुत्ता आया और बैठकर अपनी पूँछ हिलाने लगा। सूरज सिंह का मन घृणा से भर आया और उसने सोचा कि अब वह वहां की रोटी नहीं खाएगा क्योंकि कुत्ते के आने की वजह से वह खाना 'आदमी' के खाने योग्य नहीं रहा। वह सोच ही रहा था कि इतने में वहां एक बकरी और एक बूढ़ी गाय भी आ गईं। तभी एक औरत ने कहा- “बहन, सारे बर्तनों में पानी डाल दो, मैं रोटी परोसती हूँ।” अब सूरज सिंह का धैर्य समाप्त हो चुका था। वह उठा और जाकर उन औरतों से पूछा- “बहनों, मुझे एक बात समझाओ। मैं कबसे देख रहा हूँ कि तुम लोग रोटियां बना रही हो और अब परोस रही हो जबकि मुझे दूर-दूर तक इन्हें खाने वाला कोई 'आदमी' दिख ही नहीं रहा। यह क्या हो रहा है?” उस औरत ने कहा- “सही कह रहे हो भाई। दूर-

दूर तक कोई 'आदमी' नहीं नज़र आ रहा। दिख रहे हैं तो सिर्फ बूढ़े, बीमार, लाचार जानवर। इस गाय को देखो.. जब तक दूध देती थी, इसके मालिक ने इसकी खूब सेवा की। आज जब किसी काम की नहीं रही तो इसे बेसहारा छोड़ दिया जिसकी वजह से यह भटक रही है। ये कुत्ता और बकरी भी ऐसे ही हैं और कुछ तो आ ही रहे होंगे। इन बेजुबानों के लिए अगर हम औरतें ही 'आदमी' (इंसान) बन जाएं तो आदमी कहलाने के हकदार होंगे वरना हम तो जानवरों से भी बदतर हो जाएंगे। अपना पेट तो जानवर भी भरते हैं भाई.... 'आदमी' वह है जो दूसरों का भी ध्यान रखे।” इतना कहकर वह जानवरों को खिलाने लगी।

अब सूरज सिंह को एहसास हुआ कि 'आदमी' क्या होता है। पूरे रास्ते जिस आदमी और जानवर के अंतर का बखान वह कर रहा था उस पर उसे लज्जा आने लगी। नम आँखों से उसने अपने ऊँट को देखा जो दिन भर का भूखा-प्यासा था, फिर भी उसे वह शांत चित्त ही दिखा। अब सूरज सिंह जान चुका था कि उसे क्या करना है। उसने उस औरत से पूछा- “बहन, मेरे साथी को भी गर्म रोटी मिलेगी क्या?” औरत ने मुस्कुराते हुए कहा- “ज़रूर भाई....।”



आरती प्रिय दर्शनी

व.ले.प./कें.स्वा.नि./प्र.नि.ले.प.(कें.)

चालाक लोमड़ी (दादी माँ की कहानी, स्मरण से)

एक था लोमड़ी। वह बड़ा ही चालाक था। एक बार की बात है। लोमड़ी अपनी पत्नी के साथ बेर खाने के लिए बेर के पेड़ पर चढ़ा। एक नाई की दुकान के पास ही वह बेर का पेड़ था और बेर छोटे-छोटे, मीठे और बड़े स्वादिष्ट थे। चालू लोमड़ी बेर के पेड़ पर चढ़ा और अपनी पत्नी से बोला- “तुम आँचल फैलाकर रखो, मैं ऊपर से बेर गिराऊँगा।” भोली पत्नी ने कहा- “ठीक है”। चालू लोमड़ी ने एक-दो बेर पत्नी के आँचल में गिराया और फिर पेड़ पर बैठ कर खुद ही खाने लगा। लोमड़ी की पत्नी बहुत देर से सर ऊपर किए हुए खड़ी थी और लोमड़ी को गुस्से से निहार रही थी। थोड़ी देर बाद गुस्से से वह लोमड़ी से बोली- “कब से खुद ही बेर खा रहे हो और मेरी तरफ़ गुठली फेंक रहे हो? मुझे बेर दोगे या नहीं?” लोमड़ी ने कहा- “अरे गुस्सा क्यों होती हो? यह लो मीठे-मीठे स्वादिष्ट बेर।” यह बोलकर लोमड़ी ने फिर से गुठली नीचे फेंकी और बोला- “इस बार तुम हाथ से बेर पकड़ो।” लोमड़ी की पत्नी ने खुश होते हुए हाथ से बेर पकड़ा और फिर बोली- “अरे यह क्या है? यह तो गुठली है।” कहकर गुस्से से गुठली फेंक दी। लोमड़ी शरारत करते हुए हंसकर बोला- “माफ़ करना। इस बार पक्का मैं तुम्हें बेर दूँगा। पर तुम मुँह खोलो, सीधे मुँह में निशाना लगाऊँगा।” लोमड़ी की पत्नी मुँह

खोलकर ऊपर देखने लगी। नटखट लोमड़ी ने गुठली को मुँह में डालने की कोशिश करते हुए बेर फेंका। “अरे यह क्या किया?” लोमड़ी की पत्नी चिल्लाने लगी। लोमड़ी ने पूछा- “क्या हुआ? बेर मीठा नहीं है क्या?” पत्नी चिल्लाई- “बेर की गुठली मेरी नाक में घुस गई है और निकल नहीं रही है।” लोमड़ी नीचे उतरा और अपनी पत्नी की नाक में देखा, बेर की गुठली नाक में फंस गई थी। लोमड़ी ने उसकी नाक से गुठली निकालने की कोशिश की। लेकिन गुठली और भी फंसती गई। वह बहुत डर गया। लाचार-मजबूर लोमड़ी रोते हुए अपनी पत्नी को लेकर जा रहा था तभी नाई ने पूछा- “क्या हुआ? क्यों रो रहे हो?” लोमड़ी ने रोते हुए अपनी सारी कहानी सुनाई और फिर बोला- “भाई, आप अपनी “लहरनी” (नाखून काटने का औज़ार) से मेरी पत्नी की नाक से यह गुठली निकाल दीजिए।” नाई बोला- “अरे नहीं-नहीं, निकालने के दरमियान अगर कुछ हो गया और तेरी पत्नी मर गई तो?” लोमड़ी बोला- “मेरी पत्नी तो ऐसे भी मर जाएगी, आप गुठली निकालने की कोशिश कीजिए, हो सकता है गुठली निकल जाए और मेरी पत्नी बच जाए।” नाई थोड़ी देर सोचते हुए बोला- “ठीक है।” बहुत देर तक नाई लोमड़ी की पत्नी की नाक से बेर की गुठली निकालने का प्रयास करता रहा। पर गुठली

नहीं निकली और लोमड़ी की पत्नी मर गई। यह देखकर लोमड़ी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा और बोला- “हाय रे हाय... इसने तो मेरी पत्नी को मार डाला।” नाई बहुत डर गया और बोला- “भाई रो मत, मैं तेरी पत्नी को वापस तो नहीं ला सकता पर तुम चाहो तो मेरी यह लहरनी रख सकते हो।” झट से लहरनी लेते हुए लोमड़ी बोला- “ठीक है।”

लोमड़ी नाई से लहरनी लेकर उदास होकर अपना घर जाने लगा। जाते समय रास्ते में उसने देखा कि एक कुम्हार अपने बड़े-बड़े नाखून से मिट्टी खोद रहा है। यह देख लोमड़ी कुम्हार के पास जाकर बोला- “भाई तुम अपने नाखून से मिट्टी क्यों खोद रहे हो?” कुम्हार बोला- “मैं बहुत गरीब हूँ, यह मेरा काम है। मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए मेरे पास मिट्टी निकालने का कोई साधन नहीं है।” लोमड़ी बोला- “बस इतनी-सी बात! यह लो मेरी लहरनी, इससे मिट्टी खोद निकालो।” कुम्हार लोमड़ी की लहरनी लेकर ज़मीन खोदने लगा। मिट्टी निकालते-निकालते लहरनी टूट गई। यह देखकर लोमड़ी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा और अपनी कहानी सुनाने लगा - “जब मेरी पत्नी मरी तो मिली थी यह लहरनी और तूने इसे तोड़ दिया।” कुम्हार ने डरते हुए कहा- “टूटी लहरनी को तो मैं ठीक नहीं कर सकता, अगर तुम चाहो तो मेरा मटका (घड़ा) रख सकते हो।” लोमड़ी ने कहा- “ठीक है।” वह मटका लेकर घर जाने लगा।

जाते-जाते रास्ते में उसे एक ग्वाला दिखा। उसने देखा कि ग्वाला अपने जूते में गाय का दूध दुह रहा है। यह देखकर लोमड़ी उसके पास जाकर बोला- “अरे भाई, तुम जूते

में दूध क्यों दुह रहे हो? तुम मेरा मटका ले लो।” ग्वाला बोला- “अरे नहीं-नहीं, अगर तुम्हारा मटका टूट गया तो?” लोमड़ी बोला- “मेरी पत्नी मरी तो मिली थी लहरनी, लहरनी टूटी तो मिला था मटका। कोई बात नहीं, मुफ्त की चीज़ है, तुम इसका इस्तेमाल कर लो।” यह सब सुनकर, थोड़ी देर सोचकर ग्वाला बोला- “ठीक है।” ग्वाला लोमड़ी का मटका लेकर उसमें दूध दुहने लगा। दूध दुह ही रहा था कि गाय ने मटके में एक लात मारी और मटका फूट गया। यह देखकर लोमड़ी फिर रोने लगा और बोला- “मेरी पत्नी मरी तो मिली थी लहरनी, लहरनी टूटी तो मिला था मटका, मटका फूटा तो दो अपनी गाय का बछड़ा।” लोमड़ी को इस तरह रोते देखकर ग्वाला डर गया और उसे अपना प्यारा बछड़ा दे दिया।

लोमड़ी बछड़े को लेकर जा रहा था कि देखा थोड़ी दूर एक किसान अपने खेत में एक बैल और दूसरे बैल की जगह अपनी पत्नी को रखकर हल से खेत जोत रहा था। यह देखकर लोमड़ी किसान के पास जाकर बोला- “अरे भाई यह तुम्हारी पत्नी है, कोई बैल नहीं कि इसे रखकर हल जोत रहे हो। यह नाज़ुक है मर जाएगी।” यह सुनकर किसान ने अपनी आपबीती सुनाई- “मैं बहुत गरीब हूँ। घर में छोटे-छोटे बच्चे हैं। अगर खेती नहीं करूंगा तो बच्चे भूखे मर जाएंगे।” यह सुनकर लोमड़ी भावुक हो उठा और बोला- “तुम इस बछड़े को ले लो और इसे हल में लगाकर खेत जोतो।” किसान ने कहा- “अरे नहीं, यह तो बछड़ा है, इससे खेत नहीं जोत सकते। अगर मैं बछड़े से खेत जोतूँगा तो यह बछड़ा मर जाएगा। लोमड़ी बोला-

“मेरी पत्नी मरी तो मिली थी लहरनी, लहरनी टूटी तो मिला था मटका, मटका फूटा तो मिला था यह बछड़ा। कोई बात नहीं, यह मुफ्त का है। इसे हल पर बांधकर अपना खेत जोत लो।” किसान बछड़े को हल पर लगाकर खुशी-खुशी हल जोतने लगा। बेचारा बछड़ा बैल जैसा मज़बूत नहीं था। कुछ समय बाद वह मर गया। यह देख लोमड़ी फिर से रोने लगा और बोला- “मेरी पत्नी मरी तो मिली थी लहरनी, लहरनी टूटी तो मिला था मटका, मटका फूटा तो मिला था यह प्यारा-सा बछड़ा। इसे तूने मार डाला।” यह सुनकर किसान बोला- “मैं गरीब हूँ, मेरे पास ऐसा कुछ भी नहीं है जो मैं तुम्हें दे सकूँ। तुम चाहो तो मेरे पास एक टोकरी मालपुआ है, तुम सारा मालपुआ ले लो, रोना बंद करो और मुझे माफ़ कर दो।” चालाक लोमड़ी के पास कोई दूसरा चारा नहीं था। उसने अपने मरे बछड़े की जगह एक टोकरी मालपुआ ले लिया और आगे घर की ओर बढ़ने लगा।

जाते-जाते रास्ते में कुछ कहार एक डोली में दुल्हन लिए जा रहे थे। चलते-चलते वे काफी थक चुके थे। वे इतने भूखे थे कि ज़मीन पर बैठकर बालू (रेत) खाने को मजबूर थे। यह देख लोमड़ी कहार के पास जाकर बोला- “क्या खा रहे हो? यह लो मेरे पास एक टोकरी मालपुआ है इसे खा लो।” कहार बोला- “अगर मालपुआ खत्म हो गया तो?” लोमड़ी ने कहा- “कोई बात नहीं, “मेरी पत्नी मरी तो मिली थी लहरनी, लहरनी टूटी तो मिला था मटका, मटका फूटा तो मिला था बछड़ा, बछड़ा मरा तो मिला था मालपुआ, यह मुफ्त का है भाई... खा लीजिए, आप

लोग बहुत थके लग रहे हैं।” मुफ्त का सोच कर सभी कहार मालपुआ पर टूट पड़े। खाते-खाते मालपुआ खत्म हो गया। खत्म होते ही चालाक लोमड़ी फिर से रोने लगा और रोते-रोते बोला- “मेरी पत्नी मरी तो मिली थी लहरनी, लहरनी टूटी तो मिला था मटका, मटका फूटा तो मिला था बछड़ा, बछड़ा मरा तो मिला था मालपुआ और वह भी आप लोगों ने खाकर खत्म कर दिया।” बोल-बोल कर, चिल्ला-चिल्ला कर ज़ोर-ज़ोर से फूट-फूट कर रोने लगा और बोला- “अब मुझे अपनी डोली वाली यह लाल-लाल दुल्हन दे दो।” कहार के पास कोई चारा नहीं था। क्योंकि वह चलाक लोमड़ी की जाल में बुरी तरह फंस चुका था। कहारों ने लोमड़ी को सुंदर दुल्हन दे दी। लोमड़ी बहुत खुश हुआ और लाल वस्त्र में सजी सुंदर दुल्हन को लेकर जाने लगा।

चलते-चलते दुल्हन को ज़ोर से भूख और प्यास लगी। दुल्हन ने कहा- “वह देखो तालाब! मुझे भूख और प्यास लगी है। चलो, चल कर पानी पीते हैं और मछली पकड़कर खाते हैं।” लोमड़ी दुल्हन को मना न कर सका। वह तालाब से मछली पकड़कर लाया और आग जलाकर उसे पकाने लगा। दुल्हन तालाब में पानी पी रही थी। अचानक लोमड़ी की पूंछ में आग लग गई। वह ज़ोर-ज़ोर से चीखने और चिल्लाने लगा- “जल्दी आओ दुल्हन.... सुंदर लाल दुल्हन.... दौड़ के आओ.... मेरी पूंछ में आग लग गई है।”

धीरे-धीरे आग लोमड़ी के पूरे शरीर में फैल गई। दुल्हन को लोमड़ी बिल्कुल पसंद नहीं था। उसने सोचा, अगर मैं इसे बचाऊँगी तो मुझे इसके साथ रहना पड़ेगा।

दुल्हन डर के मारे जलते हुए लोमड़ी को छोड़कर अपने घर की ओर भागी। कुछ ही देर में लोमड़ी की जल कर मृत्यु हो गई।

इसलिए कहा जाता है कि ज़्यादा चालाकी कभी-कभी खुद पर भारी पड़ जाती है।



ज्योत्सना

सुपुत्री : श्री रंजन कुमार

ले.प./प्रत्यक्ष कर/प्र.नि.ले.प.(कें.)

“जीवन में अगर संघर्ष न रहे, किसी भी भय का सामना न करना पड़े, तब जीवन का आधा स्वाद ही समाप्त हो जाता है।”

- सुभाष चंद्र बोस

हास्य संस्मरण



वैसे तो ज़िंदगी के सफ़र में हम पुरानी बातों को भूलते चले जाते हैं लेकिन उनमें से कुछ पल ऐसे होते हैं जो हमेशा याद आते हैं, मन में गुदगुदी करते हैं। 'आशीर्वाद' के माध्यम से ऐसे ही कुछ संस्मरणों की अभिव्यक्ति कर रहा हूँ। आशा करता हूँ कि पाठकों को इससे भरपूर मनोरंजन की प्राप्ति होगी।

संस्मरण-1

सन् 2003 की बात है। मैं दिल्ली से भटिंडा जाने वाली ट्रेन में सवार था। उस समय ट्रेन हरियाणा में जिंद और जाखल नामक दो रेलवे स्टेशनों के बीच अपनी गति पर थी। एक यात्री ने चाय वाले से पूछा कि चाय गरम है क्या? चाय वाले का जवाब

था: 'सर पे गेर के देख ले' (सर पर डाल कर देख लो)।

संस्मरण-2

सन् 2005 के आस-पास की बात है। मैं दिल्ली से हाजीपुर के लिए वैशाली एक्सप्रेस में सवार था। शाम के सात बज रहे थे। अंधेरा होने लगा था। मेरे बगल में एक बुजुर्ग यात्री जिनकी उम्र सत्तर वर्ष के करीब थी, चाय वाले से चाय ली और पैसे देने के लिए सिक्के गिनने लगा। दृष्टि कमजोर होने के कारण उसको यह निश्चित करने में समय लग रहा था कि उसके हाथ के सिक्के एक रुपए वाले हैं या दो रुपए वाले। चाय वाले का जब सब्र का बांध टूटा तो वह बुदबुदाया: दो रुपए गिनने में यह इतना समय ले रहा है। न जाने आगे चलकर (भविष्य में) यह क्या करेगा।

संस्मरण-3

बात सन् 2016 की है। कन्नड़ भाषा सीखने के संदर्भ में, मैं तीन दिनों के लिए केंद्रीय भाषा संस्थान, मैसूर गया हुआ था। चाय पीने की इच्छा मन में जाग्रत हुई तो संस्थान के बाहर वाली चाय की दुकान पर गया। मैं चाय वाले से बोला: 'अन्ना, टी कुड़ी'। चूंकि चाय वाला नींद में था, इसलिए मैंने अपनी बात को ज़ोर से दुहराया। पास खड़े दो-तीन अजनबी मेरी बातों पर मुस्करा रहे थे। चाय वाले ने मुझे चाय दी और कहा- आपको ऐसे बोलना चाहिए- 'अन्ना, टी कोडी'। बाद में मैंने अपने द्वारा बोले गए

वाक्य का अर्थ ढूँढा तो पता चला कि उसका अर्थ था- भाई, चाय पीओ। तब मेरी समझ में आया कि अजनबियों के मुस्कराने का कारण क्या था।

संस्मरण-4

बात इसी वर्ष के सितंबर महीने की है। मैं चाय के लिए कार्यालय के बाहर एक स्टॉल पर था। मेरे समीप ही तीन-चार कर्मियों का एक समूह भी चाय पी रहा था। उन कर्मियों में से एक बोल रहा था कि आज हमारे कार्यालय के किसी कर्मि का 'हल्दी सेरिमनी' है। श्रोताओं ने अनुमान लगाया कि किसी की शादी होने वाली होगी, इसलिए उसका हल्दी सेरिमनी होगा। उनके वाद-विवाद के बाद यह निष्कर्ष निकला कि वक्ता ने सुनने में गलती कर दी थी। वस्तुतः किसी का हल्दी सेरिमनी नहीं था बल्कि उस दिन हिंदी- सेरिमनी का आयोजन किया गया था, हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह के अवसर पर कार्यालय के कर्मियों को उस दिन तीन बजे 'हलसिनंगला' में उपस्थित होने को कहा गया था।

संस्मरण-5

बात अक्टूबर 2022 की ही है। मैंने अपना एक संशय दूर करने के लिए हिंदी अधिकारी के कक्ष में प्रवेश किया। वहां पहले से लेखापरीक्षा-। कार्यालय के हिंदी अधिकारी मौजूद थे। मैंने अपना संशय व्यक्त किया कि हिंदी नोटिंग के लिए न्यूनतम प्रतिशतता क्या है। हिंदी अधिकारी (ले.प.-।) ने कहा

कि 35% है। केंद्रीय लेखापरीक्षा के हिंदी अधिकारी ने कहा कि नोटिंग के लिए निर्धारित लक्ष्य 30 प्रतिशत है। इस पर ले.प.-। के हिंदी अधिकारी ने कहा कि 30 प्रतिशत और 35 प्रतिशत में ज्यादा अंतर नहीं है। आप कम से कम 35 प्रतिशत का लक्ष्य रखेंगे, तब ही 30 प्रतिशत की प्राप्ति हो पाएगी और उन्होंने जोर दिया कि 30 और 35 में थोड़ा-सा ही अंतर है।

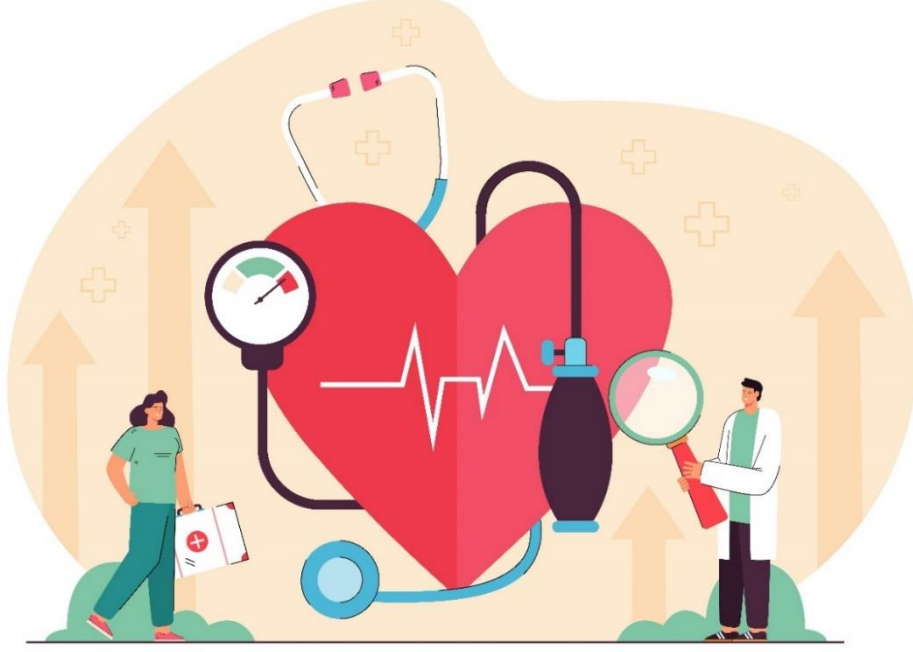
मैंने कहा कि अंतर थोड़ा होने से भी कई बार फर्क बहुत पड़ जाता है। 1960 के दशक में रूसी राष्ट्रपति, अमरीकी राष्ट्रपति और भारतीय प्रधानमंत्री के बीच एक बैठक चल रही थी। अमरीकी राष्ट्रपति ने कहा कि हमारे यहां वायुयान उड़ते समय आकाश को छूते हुए उड़ता है। इस पर बाकी दोनों राजनेताओं ने पूछा कि- यह कैसे संभव है तो अमरीकी राष्ट्रपति का जवाब आया कि- थोड़ा-सा नीचे से। अब रूसी राष्ट्रपति ने कहा कि- हमारे देश की पनडुब्बी समुद्रतल को स्पर्श करते हुए चलती है। इस पर बाकी दोनों राजनेताओं ने पूछा कि- यह कैसे संभव है तो रूसी राष्ट्रपति का जवाब आया कि थोड़ा-सा ऊपर से। अब भारतीय प्रधान मंत्री ने कहा कि हमारे यहां लोग नाक से खाते हैं। इस पर बाकी दोनों राजनेताओं ने अविश्वास ज़ाहिर करने की कोशिश की तो भारतीय प्रधान मंत्री ने स्पष्ट किया- थोड़ा-सा नीचे से।



रवि प्रकाश

स.ले.प.अ./ईडीपी&एचके/ प्र.नि.ले.प.(कें.)

सेहत



जेब को गरम रखो,
जीभ को नरम रखो।
काम करो अपना नाम करो,
हरी सब्जियां खाओ।
अपना दिल बड़ा रखो,
चेहरे पर मुस्कान लाओ।
स्वस्थ रहो, मस्त रहो,
सेहत है बेहद ज़रूरी।
न खाओ तली-भुनी चीज़ें,

खाओ फल और हरी सब्जियां।
स्वस्थ रहोगे, मस्त रहोगे,
तभी तो जग में नाम करोगे।
तन खुश हो तो मन भी खुश,
तभी होगा पूरा जगत खुश।
सेहत से न करो विश्वासघात,
जेब को गरम रखो, जीभ को नरम रखो।



ज्योत्सना

सुपुत्री : रंजन कुमार

ले.प. प्रत्यक्ष कर/प्र.नि.ले.प.(कें.)

गांधीवाद



गांधीवाद एक विचारधारा है जो महात्मा गांधी द्वारा अपनाए और विकसित किए गए उन धार्मिक-सामाजिक विचारों का समूह है जो उन्होंने पहली बार वर्ष 1893 से 1914 तक दक्षिण अफ्रीका में तथा उसके बाद भारत में अपनाई थी। गांधीवादी दर्शन न केवल राजनीतिक, नैतिक और धार्मिक है बल्कि पारंपरिक और आधुनिक तथा सरल और जटिल भी है। यह कई पश्चिमी प्रभावों का प्रतीक है जिनको गांधीजी ने उजागर किया था। लेकिन यह प्राचीन भारतीय संस्कृति में निहित है तथा सार्वभौमिक, नैतिक और धार्मिक सिद्धांतों का पालन करता है। यह दर्शन कई स्तरों- आध्यात्मिक या धार्मिक, नैतिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, व्यक्तिगत और सामूहिक आदि पर मौजूद है। इसके अनुसार, आध्यात्मिक या धार्मिक तत्व और ईश्वर इसके मूल में हैं। मानव-स्वभाव मूल रूप से सद्गुणी है।

प्रत्येक व्यक्ति उच्च नैतिक विकास और सुधार करने के लिए सक्षम होता है। गांधीवादी विचारधारा आदर्शवाद पर नहीं बल्कि व्यावहारिक आदर्शवाद पर ज़ोर देती है। गांधीवादी दर्शन एक दोधारी तलवार है जिसका उद्देश्य सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों के अनुसार व्यक्ति और समाज को एक साथ बदलना है। गांधीजी ने इन विचारधाराओं को विभिन्न प्रेरणादायक स्रोतों जैसे- भगवद्गीता, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, बाइबिल, गोपाल कृष्ण गोखले, टॉलस्टॉय, जॉन रस्किन आदि से विकसित किया। टॉलस्टॉय की पुस्तक 'द किंगडम ऑफ गाँड इज़ विदिन यू' का महात्मा गांधी पर गहरा प्रभाव था। गांधीजी ने रस्किन की पुस्तक 'अंटू दिस लास्ट' से 'सर्वोदय' के सिद्धांत को ग्रहण किया और उसे जीवन में उतारा। इन विचारों को बाद में 'गांधीवादियों' द्वारा विकसित किया गया है, विशेष रूप से भारत

में विनोबा भावे और जयप्रकाश नारायण तथा भारत के बाहर मार्टिन लूथर किंग जूनियर और अन्य लोगों द्वारा। 'सत्य' और 'अहिंसा'- गांधीवादी विचारधारा के ये दो आधारभूत सिद्धांत हैं। गांधीजी का मानना था कि जहाँ सत्य है वहाँ ईश्वर है तथा नैतिकता- (नैतिक कानून और कोड) इसका आधार है। अहिंसा का अर्थ होता है प्रेम और उदारता की पराकाष्ठा। गांधीजी के अनुसार अहिंसक व्यक्ति किसी दूसरे को कभी भी मानसिक व शारीरिक पीड़ा नहीं पहुँचाता है। 'सत्याग्रह'- इसका अर्थ है सभी प्रकार के अन्याय, उत्पीड़न और शोषण के खिलाफ शुद्धतम आत्मबल का प्रयोग करना। यह व्यक्तिगत पीड़ा सहन कर अधिकारों को सुरक्षित करने और दूसरों को चोट न पहुँचाने की एक विधि है। सत्याग्रह की उत्पत्ति से संबंधित सूचना उपनिषद्, बुद्ध-महावीर की शिक्षा, टॉलस्टॉय और रस्किन सहित कई अन्य महान दर्शनों में मिलती है। 'सर्वोदय' का अर्थ है 'यूनिवर्सल उत्थान' या 'सभी की प्रगति'। यह शब्द पहली बार गांधीजी ने राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर जॉन रस्किन की पुस्तक 'अंटू दिस लास्ट' में पढ़ा था। 'स्वराज'- हालाँकि स्वराज शब्द का अर्थ स्व-शासन है लेकिन गांधीजी ने इसे एक ऐसी अभिन्न क्रांति की संज्ञा दी जो कि जीवन के सभी क्षेत्रों को समाहित करता है। गांधीजी के लिए स्वराज का मतलब व्यक्तियों के स्वराज (स्व-शासन) से था और इसलिए उन्होंने स्पष्ट किया कि उनके लिए स्वराज का मतलब अपने देशवासियों की स्वतंत्रता है और अपने संपूर्ण अर्थों में स्वराज स्वतंत्रता से कहीं अधिक है, यह स्व-शासन

है, आत्म-संयम है और इसे मोक्ष के बराबर माना जा सकता है। 'ट्रस्टीशिप'- यह एक सामाजिक-आर्थिक दर्शन है जिसे गांधीजी द्वारा प्रतिपादित किया गया था। यह अमीर लोगों को एक ऐसा माध्यम प्रदान करता है जिसके द्वारा वे गरीब और असहाय लोगों की मदद कर सकें। यह सिद्धांत गांधीजी के आध्यात्मिक विकास को दर्शाता है जो कि थियोसोफिकल लिटरेचर और भगवद्गीता के अध्ययन से उनमें विकसित हुआ था। 'स्वदेशी'- यह शब्द संस्कृत से लिया गया है और यह संस्कृत के दो शब्दों का संयोजन है। 'स्व' का अर्थ है स्वयं और 'देश' का अर्थ है देश। इसलिए स्वदेश का अर्थ है 'अपना देश'। लेकिन ज़्यादातर संदर्भों में इसका अर्थ आत्मनिर्भरता के रूप में लिया जाता है। स्वदेशी राजनीतिक और आर्थिक दोनों तरह से अपने समुदाय के भीतर ध्यान केंद्रित करता है। यह समुदाय और आत्मनिर्भरता की अन्योन्याश्रितता है। गांधीजी का मानना था कि इससे स्वतंत्रता (स्वराज) को बढ़ावा मिलेगा, क्योंकि ब्रिटिश का भारत नियंत्रण स्वदेशी उद्योगों के नियंत्रण में निहित था। 'स्वदेशी' भारत की स्वतंत्रता की कुंजी था और महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों में चरखा द्वारा इसका प्रतिनिधित्व किया गया था। आज के संदर्भ में गांधीवादी विचारधारा मानव-जाति के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। लोग अत्यधिक लालच, व्यापक स्तर पर हिंसा और भागदौड़ भरी जीवन-शैली का समाधान खोजने की कोशिश कर रहे हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग, दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला और म्यांमार में आंग सान सू की जैसे लोगों के

नेतृत्व में समाज के कई उत्पीड़ित लोगों को न्याय दिलाने हेतु गांधीवादी विचारधारा को सफलतापूर्वक लागू किया गया है जो इसकी प्रासंगिकता का प्रत्यक्ष उदाहरण है। दलाई लामा ने कहा- "आज विश्व शांति और विश्वयुद्ध, अध्यात्म और भौतिकवाद, लोकतंत्र व अधिनायकवाद के बीच एक बड़ा युद्ध चल रहा है।" इन बड़े युद्धों से लड़ने के लिए यह ठीक होगा कि समकालीन समय में गांधीवादी दर्शन को अपनाया जाए। गांधीवादी विचारधारा ने ऐसे संस्थानों और कार्यप्रणालियों के निर्माण को आकार दिया जहाँ सभी की आवाज़ और परिप्रेक्ष्य को स्पष्ट किया जा सकता है। उनके अनुसार, लोकतंत्र ने कमज़ोरों को उतना ही मौका

दिया जितना ताकतवरों को। उनके स्वैच्छिक सहयोग, सम्मानजनक और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के आधार पर कार्य करने के सुझाव को कई अन्य आधुनिक लोकतंत्रों में अपनाया गया। साथ ही, राजनीतिक सहिष्णुता और धार्मिक विविधता पर उनका ज़ोर समकालीन भारतीय राजनीति में अपनी प्रासंगिकता को बनाए रखता है। सत्य, अहिंसा, सर्वोदय और सत्याग्रह तथा उनके महत्व से गांधीवादी दर्शन बनता है और ये गांधीवादी विचारधारा के चार आधार हैं।



अनूप कुमार

ले.प./प्रशा.-II/प्र.म.ले.(ले.प.-II)

‘ध्यान’ क्यों आवश्यक है?



एक समय की बात है। गोलू नाम का एक आदमी हुआ करता था। वह राजगीर के जंगलों में बकरी चराया करता था। बकरियों को चराने में वह मस्त रहता था। एक दिन जंगल में एक साधु से उसकी भेंट हुई। वह साधु काफी सिद्ध पुरुष था। साधु कुछ देर के लिए गोलू के पास गया। जब साधु गोलू से मिलकर जाने लगा तो साधु ने कहा कि यदि तुम्हें कुछ चाहिए तो मुझसे मांग लो। गोलू के मन में लालच आ गया। उसने धनी बनने की बात मन में सोच कर कहा- “यदि आप मुझे कुछ देना ही चाहते हैं तो पारस पत्थर दीजिए।” साधु ने कहा- “पारस पत्थर तो मैं तुम्हें नहीं दे सकता लेकिन वह तुम्हें कहां मिलेगा, यह जरूर बता सकता हूँ। सामने वाले पहाड़ से गिरे

छोटे-छोटे पत्थरों का जो ढेर है उसमें से एक पारस पत्थर है।” गोलू ने कहा- “बाबा जी, पर मुझे पता कैसे लगेगा कि उनमें से पारस पत्थर कौन-सा है?” बाबा ने गोलू को लोहे का एक टुकड़ा दिया और कहा- “तुम्हें हरेक पत्थर को इस लोहे से छूना होगा। जिस पत्थर के स्पर्श से यह लोहे का टुकड़ा सोने का हो जाएगा उसे तुम रख लेना, वही पारस पत्थर होगा।” जाते-जाते साधु ने गोलू को यह भी समझाया कि “यह काम बहुत ध्यान से करना।”

लालच बड़ा था तो काम भी बड़ा था। गोलू पूरी मेहनत से उस काम में लग गया। वह दिन भर पत्थर के टुकड़ों को लोहे से छूता रहा। ऐसे करते-करते कई महीने बीत गए। अब वह इस काम से ऊब चुका

था। लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी और वह उस काम में लगा रहा। तीन-चार महीने बाद जब फिर से साधु वहां से गुज़र रहा था तो उसको गोलू दिखा। रुककर उसने गोलू की कुशलता के बारे में पूछा। गोलू उस समय भी लोहे से पत्थर को छूने में लगा हुआ था। बाबा ने गोलू से लोहे का टुकड़ा लिया और कहा- “देखो यह तो सोने का हो गया है। इसीलिए मैंने तुमसे कहा था कि इस काम को बड़े ध्यान से करना।” फिर उसने पूछा कि कौन-से पत्थर से लोहा सोने का हुआ तो गोलू ने कहा- “पता नहीं, बहुत समय से मैंने इस लोहे को देखा ही नहीं। मैं तो बस स्पर्श ही कराता जा रहा था। इस ओर मेरा

ध्यान गया ही नहीं।”“अब फिर से सारे पत्थरों को पलटना गोलू के बस के बाहर की बात थी। चार-पांच महीनों की उसकी मेहनत पर पानी फिर गया। अब तो उसे केवल उस छोटे सोने के टुकड़े से संतुष्ट होना था।

तो दोस्तों... आपने देखा कि ‘ध्यान’ का हमारे जीवन में कितना महत्वपूर्ण स्थान है। ज़्यादातर लोगों का ध्यान वर्तमान में न होकर भविष्य या भूत में डूबा रहता है। इसलिए सभी प्रकार की चिंताओं से मुक्त होकर वर्तमान में जीना सीखिए।



मुकेश अंबानी

डी.ई.ओ./रिपोर्ट्स-III/प्र.म.ले.(ले.प.-I)

“शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है। एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है। शिक्षा सौंदर्य और यौवन को परास्त कर देती है।” - चाणक्य

बिहार का ऐतिहासिक स्थल- राजगीर

राजगृह का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व है। पहले यह वसुमति, बृहद्रथपुर, गिरिब्रज और कुशग्रपुर के नाम से भी जाना जाता था। राजगृह आजकल राजगीर के नाम से जाना जाता है। पौराणिक साहित्य के अनुसार राजगीर ब्रह्मा की पवित्र यज्ञ भूमि, संस्कृति और वैभव का केंद्र था तथा जैन धर्म के 20वें तीर्थंकर मुनिसुव्रत नाथ स्वामी के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान कल्याणक एवं 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी की प्रथम देशना स्थली भी रहा है। साथ ही भगवान बुद्ध की साधना भूमि भी राजगीर में है। इसका उल्लेख ऋग्वेद, अथर्ववेद, तैत्तिरीय उपनिषद्, वायु-पुराण, महाभारत, वाल्मीकि-रामायण आदि में मिलता है। जैन ग्रंथ विविध तीर्थ कल्प के अनुसार राजगीर जरासंध, श्रेणिक, बिंबिसार, कनिष्क आदि प्रसिद्ध शासकों का निवास स्थान रहा है। जरासंध ने यहीं पर कृष्ण को हराकर मथुरा से द्वारिका जाने के लिए विवश किया था।

पटना से 100 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में पांच पहाड़ियों और घने जंगलों के बीच बसा राजगीर न केवल एक प्रसिद्ध धार्मिक तीर्थस्थल है बल्कि एक सुंदर हेल्थ रिसोर्ट के रूप में भी लोकप्रिय है। यह हिंदू, जैन और बौद्ध धर्मों के धार्मिक स्थल के रूप में भी जाना जाता है। खासकर बौद्ध धर्म से इसका संबंध बहुत प्राचीन समय से रहा है। भगवान बुद्ध कई वर्षों तक यहाँ ठहरे थे और कई महत्वपूर्ण उपदेश भी यहाँ

की धरती से दिए थे। बुद्ध के उपदेशों को यहीं लिपिबद्ध किया गया था और पहली बौद्ध संगीति भी यहीं हुई थी।

दर्शनीय स्थल

पाँच पहाड़ियों से घिरा राजगीर वन्य जीव अभयारण्य प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण है और साथ ही यह अपने अंदर असीम जैव-विविधता समेटा हुआ है। इसके अलावा बिहार में 12 वन्य जीव अभयारण्य हैं तथा एक राष्ट्रीय उद्यान भी है। राजगीर अभयारण्य में वनस्पतियों और वन्य-प्राणियों की कई दुर्लभ प्रजातियाँ देखने को मिलती हैं। औषधीय पौधों की कई किस्में राजगीर के जंगलों में पाई जाती हैं। बचे वन्य जीवों की भविष्य में सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में पर्यावरण एवं वन विभाग द्वारा सन् 1978 में 35.84 वर्ग किलोमीटर राजगीर अभयारण्य क्षेत्र को वन्य जीव अभयारण्य बना दिया गया। राष्ट्रीय राजमार्ग 82 राजगीर वन क्षेत्रों से होकर जाता है।

राजगीर के इस धार्मिक तीर्थस्थल में तीन साल में एक बार होने वाली बृहद् मलमास मेला और खूबसूरत वादियाँ पर्यटकों को खूब लुभाती हैं। यही कारण है कि राजगीर आज अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल के रूप में भी जाना जाता है। पाँच पहाड़ियां-रत्नगिरि, विपलांचल, वैभारगिरि, सोनगिरि और उदयगिरि हैं। पतझड़ के समय वे बेजान तो लगते हैं लेकिन मानसून का आरंभ होते

ही पुनर्जीवित हो जाते हैं और उनमें वन्य प्राणियों की चहलकदमी भी शुरू हो जाती है जो कि पतझड़ की खासियत है। तीनों तरफ से पहाड़ियों से घिरे राजगीर को घोड़ा कटोरा झील और झील से सूर्यास्त का दृश्य और भी मन-मोहक बना देता है। हाल ही में इस झील के बीच भगवान बुद्ध की एक विशाल प्रतिमा स्थापित की गई है।

गृद्धकूट पर्वत

इस पर्वत पर आसनस्थ होकर बुद्ध ने कई महत्वपूर्ण उपदेश दिए थे। जापान के बुद्ध संघ ने इसकी चोटी पर एक शांति-स्तूप का निर्माण भी करवाया है। स्तूप के कोणों पर बुद्ध की चार प्रतिमाएं स्थापित की गई हैं। स्तूप पर पहुंचने के लिए पैदल चढ़ाई हेतु सीढ़ियों सहित रज्जु मार्ग का भी निर्माण कराया गया है जो यात्रा को और भी रोमांचक बना देता है।

लाल मंदिर



इस मंदिर के भूतल में राजस्थानी चित्रकारों द्वारा भगवान महावीर स्वामी का गर्भगृह बनाया गया है जहाँ जैन तीर्थयात्री आकर भगवान महावीर के पालने को झुलाते हैं तथा मंदिर में असीम शांति का अनुभव करते हैं। इस मंदिर में 20वें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रत नाथ स्वामी के काले वर्ण की 11

फूट ऊँची विशाल खड्गासन प्रतिमा भी विराजमान है।

दिगंबर जैन मंदिर

यह धर्मशाला मंदिर के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर में मूलनायक भगवान महावीर की श्वेत वर्ण पद्मासन प्रतिमा है। वेदी में सोने तथा शीशे का काम कराया गया है। इस मंदिर का निर्माण गिरिड़िह निवासी सेठ हज़ारीमल किशोरीलाल ने करवाया था।

गर्म जल के झरने



वैभव पर्वत की सीढ़ियों पर मंदिरों के बीच गर्म जल के कई झरने हैं जो सप्तकर्णी गुफाओं से आते हैं। इन झरनों के पानी में कई चिकित्सकीय गुण होने के प्रमाण मिले हैं। पुरुषों और महिलाओं को स्नान करने के लिए अलग-अलग कुंड हैं। इस तरह के 22 कुंड बनाए गए हैं। इनमें ब्रह्मकुंड का पानी 45 डिग्री से भी ज़्यादा गर्म होता है।

सोन भंडार की गुफाएं

यह स्थान प्राचीन काल में जरासंध के सोने का खज़ाना कहलाता था। इन गुफाओं के पीछे स्थित पहाड़ी स्वर्ण से जड़ी हुई है। इन्हीं में किसी एक गुफा के भीतर

से वहाँ तक पहुंचने का दरवाज़ा है। इस दरवाज़े के पास वाली दीवार पर शंखलिपि में एक मंत्र लिखा हुआ है जिसका अर्थ आज



तक कोई ढूँढ़ नहीं पाया है। लोगों का मानना है कि यदि इसके अर्थ का पता चलता है और इसका उच्चारण सही से होता है तभी इस गुफा का दरवाज़ा खुलेगा। इन गुफाओं का उत्खनन तीसरी व चौथी शताब्दी के दौरान किया गया था। लेकिन सफलता प्राप्त नहीं हुई। यह गुफा दुमंज़िला है। 20वीं शताब्दी के प्रारंभ काल में भूकंप के कारण इनके संरचनात्मक ढांचों में बहुत से हिस्से क्षतिग्रस्त हो गए थे।

मनियार मठ

मनियार मठ राजगीर का एक और खुदाई स्थल है। यह एक अष्टकोणी मंदिर है जिसकी दीवारें गोलाकार हैं। इन गोलाकार दीवारों पर नियमित दूरी पर आले बने हुए हैं जिनमें हिंदू देवी-देवताओं की प्लास्टर से बनी विविध मूर्तियाँ और प्रतिमाएँ स्थापित की गई हैं। मनियार मठ के परिसर में आप विविध राजकुलों की छाप देख सकते हैं, जैसे- गुप्त राजकुल का धनुष जो आज पुराने राजगीर के बीचोंबीच स्थित है। महाभारत में इसका उल्लेख मणि नाम के समाधि स्थल के रूप में मिलता है।

विश्व शांति स्तूप



इस स्तूप का व्यास 103 फूट व ऊँचाई 120 फूट है जो पर्यटकों के आकर्षण का सुंदर नमूना है। यह स्तूप राजगीर जापान बौद्ध संघ के अध्यक्ष निविदास्तु फूजी गुरु जी की कल्पना का ऐतिहासिक धरोहर माना जाता है।

जरासंध की बैठक

यह एक बेहद ऊँचा स्थान है। जरासंध की बैठक प्राकृतिक रूप से वैभार जाने वाले रास्ते में स्थापित है। जरासंध अपने दरबारियों की मंडली यहीं पर बिठाया करता था। बौद्ध समुदाय के लोग इसे पिप्पल गुहा के नाम से पुकारते हैं।

बिंबिसार की जेल

मनियार मठ के करीब 200 फूट लंबी करीब एक किलोमीटर की दूरी तक पत्थरों की दीवारों से घिरी यह जेल अत्यंत ऐतिहासिक महत्ता रखती है। अजातशत्रु ने अपने पिता बिंबिसार को इसी जगह पर कैदी बनाके रखा था।

ग्लास ब्रिज



बिहार में राजगीर का ग्लास ब्रिज पर्यटकों का एक विशेष आकर्षण केंद्र है। इस ग्लास ब्रिज से पर्यटकों द्वारा स्काईवॉक का आनंद भी लिया जाता है।

जू-सफारी

राजगीर की अन्य जगहों पर घूमने के साथ-साथ लोग नेचर सफारी का भी आनंद लेते हैं। यह 191 हेक्टेयर में फैला हुआ है।



यहाँ बाघ, तेंदुआ, भालू, हिरण आदि की अलग-अलग सफारी बनी हुई है। बंद वाहन के

द्वारा उन्हें नज़दीक से देखने का अवसर पर्यटकों को प्राप्त होता है। खास बात यह है कि गुजरात के जूनागढ़ से शेरों को यहाँ लाया गया है। हिरण की कई प्रजातियाँ भी यहाँ पर देखने को मिलती हैं।

अन्य आकर्षण

कर्णदा टैंक जहाँ बुद्ध स्नान करते थे, मराका कुक्षी जहाँ अजन्मित अजातशत्रु को पिता की मृत्यु का कारण बनने का शाप मिला, रणभूमि जहाँ भीम और जरासंध द्वारा महाभारत का एक युद्ध लड़ा गया था, एक पुराने दुर्ग का खंडहर, 2500 वर्ष पुरानी दीवारें, विश्वशांति का स्तूप, नव नालंदा विश्वविद्यालय, अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम, फिल्म सिटी इत्यादि।



मुकेश अंबानी

डी.ई.ओ./रिपोर्ट्स-III/प्र.म.ले.(ले.प.-I)

“ऐसे जिएं कि जैसे आपको कल मरना है और सीखें ऐसे जैसे आपको हमेशा जीवित रहना है।”

- महात्मा गांधी

भावनाओं का डिजिटल संस्करण

02 मार्च 2022

“पिताजी बहुत बीमार हैं। आप सभी की दुआओं की बहुत ज़रूरत है।” (अस्पताल में लेटे बीमार पिताजी की फोटो के साथ उसने फेसबुक पर स्टेटस अपडेट किया।)

03 मार्च 2022

“पिताजी की हालत लगातार बिगड़ रही है। तन, मन, धन से जितना कर सकता हूँ, सब कर रहा हूँ।” (इस बार उसने अपने थके निराश चेहरे की फोटो के साथ स्टेटस अपडेट किया।)

05 मार्च 2022

“पिताजी नहीं रहे। मैं सब कोशिशें करके भी हार गया। मेरा संसार लुट गया।” (श्मशान से पिता की चिता के आगे अपने आँसुओं से भरे चेहरे के साथ उसने स्टेटस एक बार फिर अपडेट किया।)

16 मार्च 2022

“पिताजी की आत्मा की शांति के लिए बहुत बड़ी पूजा रखी और 51 पंडितों को भोज कराया।”

(हार चढ़ी पिताजी की फोटो के सामने कुछ पंडित खाना खा रहे हैं और उन्हें

खुद खाना परोसते हुए ली गई फोटो के साथ इस बार का स्टेटस अपडेट हुआ।)

शाम ढली, वह अपने प्रोफाइल पर आए ढेरों कमेंट पढ़ रहा था जिसमें उसे एक बेहद संवेदनशील आज्ञाकारी बेटे के खिताबों से नवाज़ा गया था। दूसरे कमरे में माँ खांस-खांस के दोहरी होती हुई अब भी इंतज़ार कर रही थी कि खत्म हुई दवाइयाँ बेटा फिर से कब ला देगा। पति के खाली बिस्तर की तरफ देखते हुए उसकी आँखें भीग गईं। कांपते हुए माँ ने बेटे को आवाज़ दी, दवाइयों की गुहार की। बेटे ने मुँह बनाया और झिड़कते हुए कहा- "बहुत व्यस्त हूँ मैं। पापा के मरने के बाद इतना तामझाम जो फैला है पहले उसे तो समेट लूँ। समय मिलता है तो लाकर दूँगा।" कह कर वह एक बार फिर फोन में व्यस्त हो गया। पाँच मिनट में नया स्टेटस अपडेट हुआ। “पिताजी के बाद अब माँ की हालत बिगड़ने लगी है। हे ईश्वर! मुझ पर रहम करो। मुझ में अब और खोने की शक्ति नहीं बची है।”



मयंक कुमार 'मयंक'

ले.प./वी.एस./प्र.म.ले.(ले.प.-I)

साइकिल और हेलीकॉप्टर की टक्कर

बहुत समय पहले की बात है। एक शहर में फराज़ नाम का एक अति प्रसिद्ध शायर था और उसी शहर में नौशाद नाम का एक व्यक्ति था जो एक साहित्यिक चोर था और वह बड़ी सफाई से अन्य लोगों की रचनाएं अपने नाम से सुनाता था।

एक बार की बात है। एक कॉफी क्लब में महफिल जमी हुई थी और नौशाद बड़े आत्मविश्वास के साथ उस प्रसिद्ध शायर की शायरी लोगों को अपने नाम से सुना रहा था। क्योंकि शेर काफी अच्छे थे तो उसे काफी वाहवाही मिल रही थी। जब महफिल



खत्म हुई तो नौशाद संयोगवश फराज़ साहब के पास आकर बैठ गया। उसने बड़े आत्मविश्वास के साथ पूछा- "जनाब कैसे लगे हमारे शेर?" फराज़ ने मुस्कुरा कर कहा- "शेर तो काफी अच्छे थे पर बरखुरदार ये

सभी शेर हमारे हैं।" नौशाद पहले तो झेंप



गया, पर चोरी और सीनाजोरी जैसी कहावत यूँ ही नहीं बनी है। उसने कहा- "हो सकता है जनाब कि हमारे और आपके विचार टकरा गए हों... शायरों के विचारों का टकराना कोई नई बात नहीं है।" इस पर फराज़ ने कहा- "जनाब, साइकिल की साइकिल से टक्कर हो सकती है... साइकिल की मोटरसाइकिल से टक्कर हो सकती है... पर साइकिल कभी हेलीकॉप्टर से नहीं टकराती।"

इतना सुनते ही नौशाद शर्म से पानी पानी हो गया और वहाँ से उठकर निकल लिया।



मयंक कुमार 'मयंक'

ले.प./वी.एस./प्र.म.ले.(ले.प.-I)

भारत और विज्ञान की यात्रा: अतीत से भविष्य तक

सर आइज़क न्यूटन (25 दिसंबर 1642 – 20 मार्च 1726/27)

अल्बर्ट आइंस्टीन (14 मार्च 1879 – 18 अप्रैल 1955)

निकोलस कॉपरनिकस (19 फरवरी 1473 - 24 मई 1543)

जॉन डाल्टन (5/6 सितंबर 1766 - 27 जुलाई 1844)

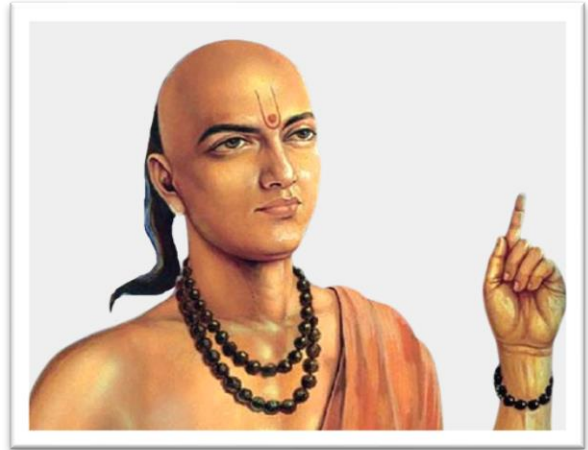
चार्ल्स रॉबर्ट डार्विन (12 फरवरी 1809 - 19 अप्रैल 1882)

इन नामों को सुनकर हमें केवल एक ही बात याद आती है- विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महानतम आविष्कार। बचपन से ही हम पढ़ते आ रहे हैं कि इन वैज्ञानिकों ने विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जो मानव जाति के इतिहास में मील का पत्थर बन गई। आधुनिक युग में हम जो भी सुविधाएं प्राप्त कर रहे हैं वह एक वरदान है जो इन वैज्ञानिकों के कारण संभव हो सका है। हमारे आधुनिक अनुसंधान और प्रौद्योगिकियां पूरी तरह से उनके पिछले कार्यों पर आधारित हैं।

इसका मतलब क्या है? क्या उनके पहले कोई विज्ञान नहीं था? क्या मानव जाति इतनी आदिम थी कि वह कोई वैज्ञानिक विकास नहीं कर पाई? तब एक प्रश्न उठता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा अन्य क्षेत्रों में अग्रणी देश कौन-सा था जिसके सिद्धांत अभी भी कार्य कर रहे हैं? उत्तर बहुत आश्चर्यजनक है --- वह भारत था - और यहां तक कि यह उस समय से पहले था जब उपर्युक्त सभी वैज्ञानिक पैदा हुए थे।

हाँ, यह सच है। भारत अनगिनत संख्या में भौतिकविदों, रसायनज्ञों, चिकित्सा वैज्ञानिकों, गणितज्ञों और विभिन्न विषयों के विद्वानों का देश है। यदि कोई उनका वर्णन करने लगे तो वह अंतहीन होगा। लेकिन कुछ नाम जो हमारे लिए बहुत परिचित हैं, उनके द्वारा दिए गए बहुमूल्य सिद्धांतों और आविष्कारों को परिचय की कोई आवश्यकता नहीं है।

[आर्यभट \(476 ई.-550 ई.\)](#)



आर्यभट प्राचीन भारत के एक महान ज्योतिषविद् और गणितज्ञ थे। उन्होंने आर्यभटीय नामक महत्वपूर्ण ज्योतिष ग्रंथ लिखा जिसमें वर्गमूल, घनमूल, समांतर

श्रेणी तथा विभिन्न प्रकार के समीकरणों का वर्णन है। उन्होंने अपने आर्यभटीय नामक ग्रंथ में कुल 3 पृष्ठों में समा सकने वाले 33 श्लोकों में गणित विषयक सिद्धांत तथा 5 पृष्ठों में 75 श्लोकों में खगोल-विज्ञान विषयक सिद्धांत तथा इसके लिए यंत्रों का भी निरूपण किया। आर्यभट ने अपने इस छोटे-से ग्रंथ में अपने से पूर्ववर्ती तथा पश्चाद्वर्ती देश के तथा विदेश के सिद्धांतों के लिए भी क्रांतिकारी अवधारणाएं उपस्थित कीं। आर्यभटीय के गणितीय भाग में अंकगणित, बीजगणित, सरल त्रिकोणमिति और गोलीय त्रिकोणमिति शामिल हैं। इसमें सतत भिन्न (कॅटीन्यूड फ्रैक्शन्स), द्विघात समीकरण (क्वाड्रेटिक इक्वेशंस), घात श्रृंखला के योग (सम्स ऑफ पावर सीरीज़) और ज्याओं की एक तालिका (Table of Sines) शामिल हैं। आर्यभट ने ज्योतिष शास्त्र के आजकल के उन्नत साधनों के बिना जो खोज की थी, यह उनकी महत्ता है।

कोपर्निकस (1473 से 1543 ई.) ने जो खोज की थी उसकी खोज आर्यभट हजार वर्ष पहले कर चुके थे। 'गोलपाद' में आर्यभट ने लिखा है "नाव में बैठा हुआ मनुष्य जब प्रवाह के साथ आगे बढ़ता है, तब वह समझता है कि अचर वृक्ष, पाषाण, पर्वत आदि पदार्थ उल्टी गति से जा रहे हैं। उसी प्रकार गतिमान पृथ्वी पर से स्थिर नक्षत्र भी उलटी गति से जाते हुए दिखाई देते हैं।" इस प्रकार आर्यभट ने सर्वप्रथम यह सिद्ध किया कि पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है। आर्यभट ने पाई (Pie) के सन्निकटन पर कार्य किया और संभवतः उन्हें इस बात का ज्ञान हो

गया था कि पाई अतुलनीय है। आर्यभटीयम् (गणितपाद) के दूसरे भाग में वे लिखते हैं:

*“चतुराधिकं शतमष्टगुणं द्वाषष्टिस्तथा
सहस्राणाम्।*

*अयुतद्वयस्य विष्कम्भस्यासन्नो
वृत्तपरिणाहः॥”*

अर्थात् 100 में चार जोड़ें, आठ से गुणा करें और फिर 62000 जोड़ें। इस नियम से 20000 परिधि के एक वृत्त का व्यास ज्ञात किया जा सकता है।

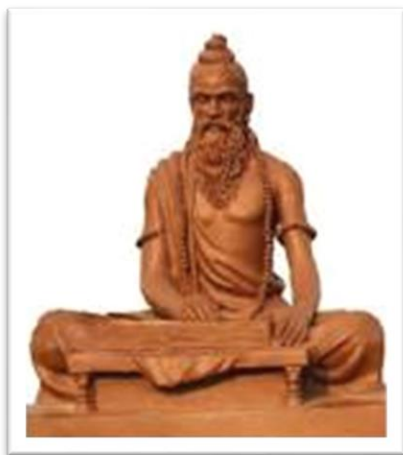
$$(100 + 4) * 8 + 62000/20000 = 3.1416$$

इसके अनुसार व्यास और परिधि का अनुपात $((4+100) \times 8 + 62000) / 20000 = 3.1416$ है जो पाँच महत्वपूर्ण आंकड़ों तक बिलकुल सटीक है। आर्यभट ने आसन्न (निकट पहुंचना), पिछले शब्द के ठीक पहले आने वाला, शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है कि यह न केवल एक सन्निकटन है, वरन् यह कि मूल्य अतुलनीय (irrational) है। यदि यह सही है तो यह एक अत्यंत परिष्कृत दृष्टिकोण है क्योंकि यूरोप में पाई की अतुलनीयता का सिद्धांत लैम्बर्ट द्वारा केवल 1761 में ही सिद्ध हो पाया था।

भारतीय खगोलीय परंपरा में आर्यभट के कार्य का बड़ा प्रभाव था और अनुवाद के माध्यम से इन्होंने कई पड़ोसी संस्कृतियों को प्रभावित किया। इस्लामी स्वर्ण युग (ई. 820) के दौरान इसका अरबी अनुवाद विशेष प्रभावशाली था। उनके कुछ परिणामों को अल-खवारिज्मी द्वारा उद्धृत किया गया है

और 10वीं सदी के अरबी विद्वान अल-बिरूनी द्वारा उन्हें संदर्भित किया गया गया है जिन्होंने अपने वर्णन में लिखा है कि आर्यभट्ट के अनुयायी मानते थे कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है।

महर्षि चरक (300 ई.पू.-200 ई.पू.)

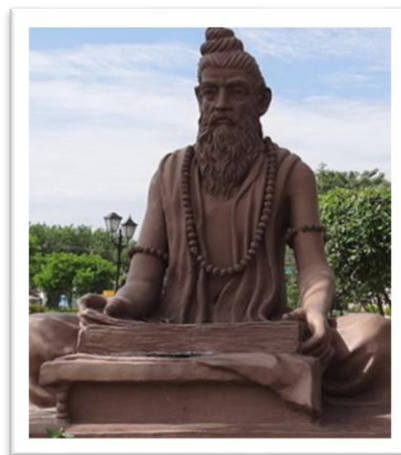


आयुर्वेद के आचार्य महर्षि चरक की गणना भारतीय औषधि विज्ञान के मूल प्रवर्तकों में होती है। इनके द्वारा रचित 'चरक संहिता' एक प्रसिद्ध आयुर्वेद ग्रंथ है। इसमें रोगनाशक एवं रोगनिरोधक दवाओं का उल्लेख है तथा सोना, चांदी, लोहा, पारा आदि धातुओं के भस्म एवं उनके उपयोग का वर्णन मिलता है।

आचार्य सुश्रुत (छठी शताब्दी ई.पू.)

शल्य चिकित्सा (Surgery) के पितामह और 'सुश्रुत संहिता' के प्रणेता आचार्य सुश्रुत का जन्म काशी में हुआ था। इन्होंने धन्वंतरी से शिक्षा प्राप्त की। सुश्रुत संहिता को भारतीय चिकित्सा पद्धति में विशेष स्थान प्राप्त है। सुश्रुत संहिता में शल्य चिकित्सा के विभिन्न पहलुओं को विस्तार से समझाया गया है। शल्य क्रिया के लिए सुश्रुत 125 तरह के उपकरणों का

प्रयोग करते थे। ये उपकरण शल्य क्रिया की जटिलता को देखते हुए खोजे गए थे। इन उपकरणों में विशेष प्रकार के चाकू, सुइयां, चिमटियां आदि हैं। सुश्रुत ने 300 प्रकार की ऑपरेशन प्रक्रियाओं की खोज की। उन्होंने



कॉस्मेटिक सर्जरी में विशेष निपुणता हासिल कर ली थी। वे नेत्र शल्य चिकित्सा भी करते थे। सुश्रुत संहिता में मोतियाबिंद के ऑपरेशन करने की विधि को विस्तार से बताया गया है। उन्हें शल्य क्रिया द्वारा प्रसव कराने का भी ज्ञान था। सुश्रुत को टूटी हुई हड्डियों का पता लगाने और उनको जोड़ने में विशेषज्ञता प्राप्त थी। शल्य क्रिया के दौरान होने वाले दर्द को कम करने के लिए वे मद्य या विशेष औषधियां देते थे। उन्होंने शल्य चिकित्सा के साथ-साथ आयुर्वेद के अन्य पक्षों जैसे शरीर-संरचना, काय चिकित्सा, बाल रोग, स्त्री रोग, मनोरोग आदि की जानकारी भी दी।

नागार्जुन (सन् 931)

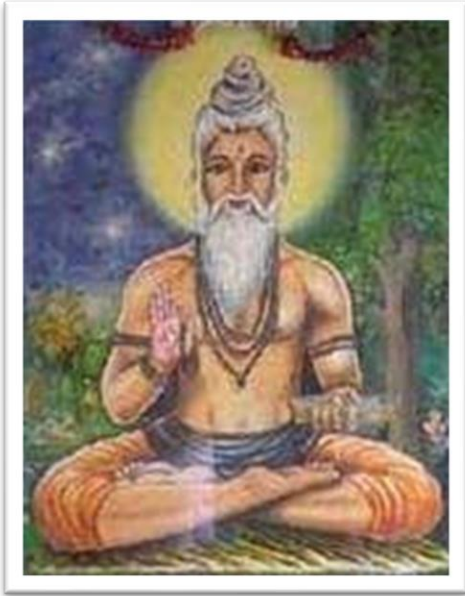
नागार्जुन रसायनज्ञ अर्थात् कीमियागर थे। इनके द्वारा रचित 'रसरत्नाकर' में रस (पारे के यौगिक) बनाने के प्रयोग दिए गए हैं। इसमें देश में धातुकर्म

और कीमियागरी के स्तर का सर्वेक्षण भी



दिया गया है। इस पुस्तक में चांदी, सोना, टिन और तांबे की कच्ची धातु निकालने और उसे शुद्ध करने के तरीके भी बताए गए हैं।

[पिंगल \(400 ई.पू. से 200 ई.पू तक\)](#)



पिंगल भारत के प्राचीन गणितज्ञ और 'छंदःसूत्रम्' के रचयिता थे। छंदःसूत्रम् में मेरु प्रस्तार (पास्कल त्रिभुज), द्विआधारी संख्या (Binary numbers) और द्विपद प्रमेय (Binomial theorem) मिलते हैं।

[वराहमिहिर \(पाँचवीं-छठी शताब्दी\)](#)

वराहमिहिर (वरःमिहिर) भारतीय गणितज्ञ एवं खगोलज्ञ थे। वाराहमिहिर ने ही अपने पंचसिद्धांतिका में सबसे पहले बताया कि अयनांश का मान 50.32 सेकेंड के बराबर है। 550 ई. के लगभग इन्होंने तीन महत्वपूर्ण पुस्तकें बृहज्जातक, बृहत्संहिता और पंचसिद्धांतिका लिखीं। इन पुस्तकों में त्रिकोणमिति के महत्वपूर्ण सूत्र दिए हुए हैं जो वराहमिहिर के त्रिकोणमिति ज्ञान के परिचायक हैं।

[शालिहोत्र \(2350 ई.पू.\)](#)

शालिहोत्र हयगोष नामक ऋषि के पुत्र थे। वे पशु चिकित्सा (Veterinary sciences) के जनक माने जाते हैं। उन्होंने 'शालिहोत्रसंहिता' नामक ग्रंथ की रचना की।

[महर्षि कणाद \(600 ई.पू. से 200 ई.पू. तक\)](#)

आधुनिक दौर के अणु विज्ञानी जॉन डाल्टन से भी हजारों साल पहले महर्षि कणाद ने यह रहस्य उजागर किया कि द्रव्य के परमाणु होते हैं। भौतिक जगत् की उत्पत्ति सूक्ष्मातिसूक्ष्म कण- परमाणुओं के संघनन से होती है- इस सिद्धांत के जनक महर्षि कणाद थे। इसके अलावा उन्होंने ही न्यूटन से पूर्व गति के तीन नियम बताए थे।

“वेगः निमित्तविशेषात् कर्मणो जायते।

वेगः निमित्तापेक्षात् कर्मणो जायते
नियतदिक क्रियाप्रबन्धहेतु।

वेगः संयोगविशेषविरोधी॥“

अर्थात् वेग या मोशन (motion) पांचों द्रव्यों पर निमित्त व विशेष कर्म के कारण उत्पन्न होता है तथा नियमित दिशा में क्रिया होने के कारण संयोग विशेष से नष्ट होता है या उत्पन्न होता है।

कणाद महर्षि को परमाणु आविष्कार के लिए जाना जाता है। उन्होंने ही पदार्थ के अविभाजित होने वाले सूक्ष्मतम कण को परमाणु नाम दिया था। इस सिद्धांत के अनुसार समस्त वस्तुएं परमाणु से बनी हैं। महर्षि कणाद आज के वैज्ञानिकों की भाँति प्रयोगों पर ही जोर देते थे। वे एक महान दार्शनिक होते हुए भी प्राचीन भारत के एक महान वैज्ञानिक भी थे। उनकी दृष्टि में द्रव्य या पदार्थ धर्म के ही रूप थे। आइंस्टीन के 'सापेक्षता के विशेष सिद्धांत' ('special theory of relativity') के प्रतिपादित होने के पूर्व तक आधुनिक भौतिक शास्त्र द्रव्य और ऊर्जा को अलग-अलग ही मानता था। किंतु महर्षि कणाद ने आरंभ से ही ऊर्जा को भी द्रव्य की ही संज्ञा दी थी। इसीलिए तो उन्होंने अग्नि (ताप-heat) को तत्व कहा था।

भारतीय विज्ञान : चरम से अस्त की ओर

जब हम कहते हैं कि भारत विश्व शिक्षा का अग्रणी था तो हमारे मन-मस्तिष्क में एक नाम आता है- नालंदा विश्वविद्यालय। सन् 427 से 1197 ई. तक संचालित नालंदा ने 5वीं और 6वीं शताब्दी के दौरान कला और शिक्षाविदों के संरक्षण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, एक अवधि जिसे तब से विद्वानों द्वारा 'भारत का स्वर्ण युग' के रूप में वर्णित किया गया है।

यहाँ महायान के प्रवर्तक नागार्जुन, वसुबंधु, असंग तथा धर्मकीर्ति की रचनाओं का सविस्तार अध्ययन होता था। वेद, वेदांत और सांख्य भी पढ़ाए जाते थे। व्याकरण, दर्शन, शल्यविद्या, ज्योतिष, योग शास्त्र तथा चिकित्सा शास्त्र भी पाठ्यक्रम के अंतर्गत थे। नालंदा की खुदाई में मिली अनेक काँसे की मूर्तियों के आधार पर कुछ विद्वानों का मत है कि कदाचित् धातु की मूर्तियाँ बनाने के विज्ञान का भी अध्ययन होता था। यहाँ खगोलशास्त्र अध्ययन के लिए एक विशेष विभाग था।

हुएनसांग ने 630 ई. और 643 ई. के बीच भारत की यात्रा की, 637 ई. और 642 ई. में नालंदा का दौरा किया और मठ में लगभग दो साल बिताए। नालंदा में उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया जहाँ उन्होंने मोक्षदेव का भारतीय नाम प्राप्त किया और शीलभद्र के मार्गदर्शन में अध्ययन किया।

हुएनसांग की वापसी के तीस वर्षों में, चीन और कोरिया के ग्यारह से कम यात्रियों को नालंदा का दौरा करने के लिए जाना जाता है, भिक्षु यिजिंग उनमें से एक थे। जब वे 695 ई. में चीन लौटे तो उनके पास 400 संस्कृत ग्रंथ और 300 बुद्ध अवशेष थे जिनका बाद में मंदारिन में अनुवाद किया गया था। इससे पता चलता है कि आज के अधिकांश विकसित देशों का विज्ञान और प्रौद्योगिकी भारतीय शिक्षाविदों और उनकी पुस्तकों पर आधारित है। दुनिया भर से यात्री भारत आए और उन्होंने अपने सिद्धांतों में भारतीय शोध कार्य को अपनाया। यह इस बात का प्रमाण है कि 17वीं सदी से पहले किसी भी देश में विज्ञान

के क्षेत्र में कोई बृहद काम या कोई अन्य आविष्कार नहीं हुआ था। आज हम अपनी पुस्तकों में डार्विन, डाल्टन, न्यूटन, कॉपरनिकस या अन्य वैज्ञानिकों के आविष्कार के रूप में जो कुछ भी पढ़ रहे हैं, वह हमारे वेदों, पुराणों और उपनिषदों में पहले से ही लिखा हुआ है।

दुर्भाग्य से, भारत पर बड़े पैमाने पर हमलों के कारण हमारे ज्ञान को आगे नहीं बढ़ाया जा सका, विशेष रूप से हमारे ज्ञान केंद्र-नालंदा विश्वविद्यालय पर हमला जो सभी पांडुलिपियों के संरक्षण का केंद्र था। 13वीं सदी तक इस विश्वविद्यालय का पूर्णतः अवसान हो गया। मुस्लिम इतिहासकार मिनहाज़ और तिब्बती इतिहासकार तारानाथ के वृत्तांतों से पता चलता है कि इस विश्वविद्यालय को तुर्कों के आक्रमणों से बड़ी क्षति पहुँची। इसपर पहला आघात हुण शासक द्वारा किया गया। 1199 में तुर्क आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने इसे जलाकर पूर्णतः नष्ट कर दिया।

भारतीय ज्ञान पर पुनः आक्रमण : ब्रिटिश नीति

भारतीयों में शिक्षा के ढांचे को ध्वस्त करने में लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति ने बड़ी भूमिका निभाई। उन्होंने उन सभी कॉलेजों को बंद करने की वकालत की जहां केवल पूर्वी दर्शन और विषयों को पढ़ाया जाता था। उन्होंने यह भी वकालत की कि सरकार को केवल कुछ भारतीयों को शिक्षित करने की आवश्यकता है और बाद में वे बाकी जनता को भी पढ़ाने का काम करेंगे। इसे 'डाउनवर्ड

फिल्ट्रेशन पॉलिसी' कहा जाता है। मैकाले की नीति ने भारतीयों के बीच यूरोपीय साहित्य और विज्ञान को बढ़ावा देने पर जोर दिया। इस ज्ञान के माध्यम से वे भारतीयों को यह विश्वास दिलाने में सफल रहे कि सारा विज्ञान और प्रौद्योगिकी पश्चिमी देशों की ही देन है और इससे पहले भारतीय इतिहास में इससे संबंधित कोई विकास नहीं हुआ था। इस तरह भारतीय ज्ञान के स्वर्ण युग को धीरे-धीरे हमारे दिमाग से भुला दिया गया और हम मानने लगे कि ईस्ट इंडिया कंपनी ने पाश्चात्य विज्ञान के माध्यम से हमारे विकास का मार्ग प्रशस्त किया है।

भारत विश्वगुरु बनने की राह पर

नालंदा विश्वविद्यालय की आग में न केवल भारतीय शोध पांडुलिपियां जल गईं बल्कि इसने वैज्ञानिक विकास के क्षेत्र में हमारे बहुमूल्य भविष्य को भी छीन लिया। संभवतः भारत को विकास से वंचित करना हर दौर के विदेशी आक्रमणकारियों का मुख्य उद्देश्य था। शायद वे डरते थे कि कहीं भारत सभ्यता की दौड़ में विश्व में सबसे आगे न निकल जाए। लेकिन यह भारतीय सभ्यता और संस्कृति ही है जिसने सभी बाधाओं के खिलाफ खड़े होने में भारत की मदद की। अपने ऊपर हुए अनगिनत हमलों के बाद भी आज भारत पुनः विश्वगुरु बनने के मार्ग पर अग्रसर है। ब्रह्मांड एवं विज्ञान से संबंधित अनेक रहस्यों को सुलझाने के लिए विदेशी विश्वविद्यालय एवं नासा के वैज्ञानिक भी प्राचीन भारतीय ग्रंथों का अध्ययन कर रहे हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि आधुनिक समस्याओं के समाधान के लिए विश्व ने प्राचीन भारतीय पद्धतियों के

महत्व को स्वीकार किया है। यही नहीं, आधुनिक युग में भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियां पश्चिमी देशों को भी टक्कर दे रही हैं। भारत ने 2008 में चंद्रमा पर पानी की उपस्थिति की पुष्टि करने के लिए चांद्र पर एक सफल मिशन भेजा जिसका नाम चंद्रयान है। भारत को दुनिया भर में सराहना मिली जब उसके वैज्ञानिकों ने मंगल ग्रह की कक्षा में अंतरिक्ष यान भेजने में सफलता का स्वाद चखा। इसे मंगलयान नाम दिया गया। यह मंगल ग्रह की कक्षा में प्रवेश करने वाला पहला एशियाई अंतरिक्ष यान था। भारत अपने प्रथम प्रयास में सफल होने वाला पहला देश था। इसे 2014 के सर्वश्रेष्ठ आविष्कार के रूप में घोषित किया गया था क्योंकि भारत उस लागत के दसवें हिस्से पर मंगल ग्रह पर एक मिशन भेज सकता था जिस पर अन्य देश काम कर रहे हैं।

संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि भारतीय सभ्यता विश्व की सबसे पुरानी

सभ्यता है। भारत ने पिछली कई सदियों में विश्व को कई रत्न दिए हैं। यह अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मानव जाति के प्रारंभ से ही भारत ने विश्व संस्कृति, विज्ञान, साहित्य, कला सहित कई अन्य विधाओं के विकास में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति की रक्षा और संरक्षण करना आज हमारा कर्तव्य है। भारत की युवा पीढ़ी हमारे मूल्यों को अतीत से भविष्य तक ले जाने के लिए दृढ़ संकल्पित है। भारत के विश्व गुरु बनने का सपना अब दूर नहीं है, बस आवश्यकता है अपने गौरवपूर्ण अतीत से प्रेरणा लेकर अपने वर्तमान एवं भविष्य को उज्ज्वल करने की। एक बार फिर भारत “सोने की चिड़िया” बनकर समूचे विश्व के आकाश पर उड़ान भरने का सपना देख रहा है। इसके सपनों को पंख देने की ज़िम्मेदारी अब हम पर है।



आरती प्रिय दर्शनी

व.ले.प./कें.स्वा.नि./प्र.नि.ले.प.(कें.)

केकड़ा-प्रवृत्ति



एक समय की बात है। राजा भानुप्रताप के पास गंगारामपुर गांव के कुछ लोग एक शिकायत लेकर आए। गंगारामपुर वालों का कहना था कि रामगढ़ गांव के लोग सुखी तथा समृद्ध हैं और राज दरबार में सबसे अधिक नौकरी उन लोगों को ही मिलती है। यह गलत है। गंगारामपुर वालों को भी बराबर मौका मिलना चाहिए। इस तरह गंगारामपुर वालों के साथ अन्याय किया जा रहा है। राजा के ऊपर पक्षपाती होने का आरोप लगाने से भी वे लोग पीछे नहीं हटे क्योंकि उन लोगों की लड़ाई सुख और शांति के लिए थी।

चिंतन किया। सुबह उठते ही राजा ने सेनापति द्वारा घोषणा करवा दी कि गंगारामपुर और रामगढ़ के प्रतिभाशाली लोग अपना-अपना दल बना लें क्योंकि दोनों गांवों के बीच प्रतियोगिता होगी और दोनों पक्षों के प्रतियोगियों को बराबर मौका मिलेगा।

अगले दिन खेल आरंभ हुआ। खेल इस प्रकार था - पचास फीट की गहरा और चिकना कुआँ खुदवाया गया। उस कुएं में स्वर्ण मुद्राएं बंधी हुई एक पोटली डाल दी गई और खेल के नियम दोनों गांवों के प्रतियोगियों को अच्छी तरह से समझाए गए। खेल का आनंद लेने के लिए काफी संख्या में दर्शक आए हुए थे। पहले

गंगारामपुर के प्रतियोगी कुएं के अंदर गए। पोटली लेकर कुएं से निकलने की होड़ में वे लोग एक-दूसरे की टांग पकड़कर खींच रहे थे। इस कारण से उनकी समयावधि खत्म हो गई और सारे खिलाड़ी अभी भी कुएं में एक दूसरे से लड़ रहे थे। एक व्यक्ति किसी भी तरह बाहर निकलने की कोशिश करता तो दूसरा व्यक्ति उसका पैर पकड़कर खींच लेता और फिर कोई तीसरा व्यक्ति पोटली लेकर कुएं से बाहर निकलने की कोशिश में लग जाता। इस प्रकार खेल बहुत रोचक हो गया था।

खेल देखने के लिए दूर-दूर से जो लोग आए हुए थे। वे ये सारी घटनाएं देखकर ज़ोर-ज़ोर से हँस रहे थे क्योंकि जो कोई खिलाड़ी पोटली लेकर बाहर निकलने की कोशिश करता दूसरे खिलाड़ी उसकी टांग पकड़ कर खींच लेते। इस तरह खेल जीतने के लिए एक-दूसरे की टांगें पकड़कर खींची जा रही थीं। गंगारामपुर के खिलाड़ियों की समयावधि खत्म हो गई। अब रामगढ़ के खिलाड़ियों की बारी थी। गंगारामपुर के खिलाड़ियों को कुएं से बाहर निकाला गया। वे हार चुके थे क्योंकि कोई भी व्यक्ति स्वर्ण मुद्राओं से भरी पोटली को बाहर नहीं निकाल पाया था।

अब कुएँ के अंदर रामगढ़ के खिलाड़ियों को भेजा गया। खेल के नियम दोनों दलों के लिए समान थे। इस दल को भी अच्छी तरह से नियम समझा दिए गए। रामगढ़ गांव के लोगों ने कुएं के अंदर जाने के बाद खेल की शुरुआत की। खेलने से पहले सभी लोगों ने बैठकर एक योजना बनाई। यह देखकर दर्शक उत्सुक हो रहे थे। फिर

खिलाड़ियों ने बनाई गई योजना के तहत खेलना शुरू किया। उनको यह पता था कि एक-दूसरे से लड़कर या टांग खींचकर किसी को कुछ नहीं मिलने वाला है। इसलिए योजना के अनुसार खेलेंगे तो अवश्य जीतेंगे। हम पिरामिड की तरह एक-दूसरे को सहारा देंगे और एक व्यक्ति के ऊपर दूसरा व्यक्ति खड़ा होगा। पोटली जिस किसी को भी मिलेगी वह स्वर्ण मुद्राएं सभी खिलाड़ियों में बराबर बांटेगा। यह थी उनके द्वारा बनाई गई योजना। बनाते भी क्यों नहीं क्योंकि कुछ नहीं मिलने से अच्छा था कुछ तो मिले। इसके लिए आवश्यक था कि साथ मिलकर योजना के तहत खेला जाना जो रामगढ़ वालों ने किया।

खेल खत्म हो गया। दर्शकों की तालियों की गड़गड़ाहट गूँज रही थी क्योंकि अब तक रामगढ़ गांव के खिलाड़ी खेल जीत चुके थे। उस दल के दीनानाथ को जीत नसीब हुई। उसे सम्मान के साथ मंच पर बुलाया गया और राजा द्वारा सौ स्वर्ण मुद्राओं के साथ कुछ और इनाम भी दिए गए। खेल खत्म होने के बाद दीनानाथ ने रामगढ़ के सभी खिलाड़ियों में स्वर्ण मुद्राएं बांट दीं।

गंगारामपुर के लोग खुश नहीं थे। अगले दिन फिर वे राजा के पास गए। उन्होंने पूछा- “महाराज, हमारा विरोधी दल कैसे जीत गया? यह गलत है।” राजा ने प्यार भरी आँखों से गंगारामपुर की प्रजा की तरफ देखा और मुस्कराते हुए कहा- “कल सुबह नदी के किनारे आकर मुझसे मिलना। तुम लोगों के सवाल का जवाब मिल जाएगा।” दूसरे दिन गंगारामपुर के सभी

खिलाड़ी नदी के किनारे आ पहुंचे। उन्होंने देखा कि राजा अपने मंत्री और सेनापति के साथ नदी के किनारे टहल रहे हैं। खिलाड़ियों को देखकर मुस्कराते हुए राजा ने कहा- “मैं तुम्हें कुछ दिखाना चाहता हूँ।” यह कहकर राजा ने सेनापति के द्वारा एक छोटा-सा गड्ढा खुदवाया और उस गड्ढे में केकड़ा डालने के लिए कहा। सेनापति ने राजा की आज्ञा मानते हुए ऐसा किया। राजा ने गंगारामपुर के सभी खिलाड़ियों को गड्ढे में डाले गए केकड़ों को देखने के लिए कहा। खिलाड़ियों ने ध्यान से केकड़ों को देखा। उन्होंने देखा कि एक केकड़ा गड्ढे से बाहर निकलने की कोशिश कर रहा है तभी दूसरा केकड़ा उसका पैर पकड़ कर पीछे की तरफ खींच रहा है। इसी तरह हर एक केकड़ा बाहर निकलने की होड़ में एक-दूसरे की टांग खींचने लग रहा है और इस कारण से कोई

भी केकड़ा गड्ढे से बाहर नहीं निकल पा रहा है। यह देखते ही गंगारामपुर के खिलाड़ियों को बात समझ में आ गई। वे लोग शर्मिंदगी महसूस कर रहे थे और राजा से हाथ जोड़कर माफी मांगने लगे।

राजा ने मुस्कराते हुए कहा- “तुम्हारे दल के हारने का कारण मैं नहीं बल्कि तुम खुद ही हो। क्योंकि तुम लोगों में एकता नहीं है। अगर एकता के साथ योजनाबद्ध तरीके से खेल खेल लिए होते तो अवश्य जीतते। याद रखो.. खेल हो या जीवन, एकता के साथ योजना बनाकर काम करेंगे तो हम कभी भी नहीं हारेंगे। सफलता हमारा कदम चूमेगी।”



रंजन कुमार

ले.प./प्रत्यक्ष कर/प्र.नि.ले.प.(कें.)

राजभाषा हिंदी का बढ़ता प्रभाव



“देश देश की आशा है, हिंदी हमारी भाषा है।
जात-पात का बंधन तोड़े, हिंदी पूरे विश्व को जोड़े।”

भाषा मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है। एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। अत्यंत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ-साथ यह विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। हिंदी सिर्फ देश की पहचान ही नहीं बल्कि यह हमारी संस्कृति और विचारों का एक सुहाना प्रतिबिंब भी है।

जब से हिंदी को संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया है तब से हर साल 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जा रहा है।

हिंदी एक विश्वभाषा के रूप में भी लोकप्रिय है क्योंकि यह राजभाषा होने के साथ-साथ अन्य देशों में भी पर्याप्त संख्या में लिखी और बोली जाती है। अंग्रेज़ी और मंदारिन के बाद हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। आज पूरे विश्व में हिंदी 678 मिलियन लोगों द्वारा बोली जाती है। विश्व के 132 देशों में से

आज कम से कम 2 करोड़ लोग हिंदी के द्वारा अपना कार्य निष्पादित करते हैं। विश्व में हिंदी भाषा की लोकप्रियता की शुरुआत विश्व हिंदी सम्मेलन से हुई है। यह हिंदी भाषा का सबसे बड़ा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन है जिसमें विश्व भर से हिंदी के विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, भाषा-वैज्ञानिक, विषय-विशेषज्ञ तथा हिंदी प्रेमी जुड़ते हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रति जागरूकता पैदा करने, समय-समय पर हिंदी की विकास-यात्रा का आकलन करने, लेखक व पाठक दोनों के स्तर पर हिंदी साहित्य के प्रति निष्ठा को और दृढ़ करने, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने तथा हिंदी के प्रति प्रवासी भारतीयों के भावुकतापूर्ण व महत्वपूर्ण रिश्ते को और अधिक गहराई व मान्यता प्रदान करने के उद्देश्य से 10 जनवरी 1975 में विश्व हिंदी सम्मेलनों की शृंखला की शुरुआत की गई। इसकी पहल सर्वप्रथम भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने की थी। पहला विश्व हिंदी सम्मेलन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के सहयोग से नागपुर, महाराष्ट्र में सम्पन्न हुआ जिसमें प्रसिद्ध समाज सेवी एवं स्वतंत्रता सेनानी विनोबा भावे ने अपना विशेष संदेश भेजा था। प्रारंभ में इसका आयोजन हर चौथे वर्ष में किया जाता था लेकिन अब इस अंतराल को घटाकर तीन वर्ष कर दिया गया है। कुल मिलाकर अब तक 12 विश्व हिंदी सम्मेलन हो चुके हैं। मुख्यतः मॉरीशस, नई दिल्ली, त्रिनिदाद व टोबैगो, लंदन, सूरीनाम, न्यूयॉर्क और जोहांसबर्ग में। दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन 2015 में भोपाल में आयोजित हुआ। 2018

में इसका आयोजन मॉरीशस में हुआ था। 12वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन 15-17 फरवरी 2023 में फिजी में संपन्न हुआ।

*“चार कोस पे पानी बदले, आठ कोस पे
वाणी,
बीस कोस पे पगड़ी बदले, तीन कोस पे
धानी”*

यह एक लोकप्रिय कथन है जो स्थानीय भाषाओं में भिन्नता एवं भारत में मौजूद विभिन्न संस्कृतियों की तरफ इशारा करता है। हिंदी भाषा का भारत की अन्य भाषाओं के साथ हमेशा एक घनिष्ठ संबंध रहा है। हिंदी में ब्रज, अवधी, मणिपुरी, राजस्थानी, भोजपुरी, पहाड़ी, बुंदेली और अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द भंडार व मुहावरे लिए गए हैं। इस प्रकार अनेक भाषाओं के शब्द हिंदी में मिलकर हिंदीमय हो जाते हैं। इंटरनेट पर भी हिंदी भाषा का प्रभाव काफी बढ़ा है। भारत सरकार के लीला एप्प की वजह से करोड़ों भारतीय घर बैठे-बैठे हिंदी सीखने का प्रयास कर रहे हैं जिससे हमारी राजभाषा विश्व के सभी क्षेत्रों में प्रवाहित हो रही है और सभी क्षेत्र के लोगों को एक सूत्र में बांध रही है।

हाल ही में भारत सरकार ने संयुक्त राष्ट्र को 8 लाख यू एस डॉलर का अनुदान भी दिया है। यू.एन. में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए 2018 में ‘हिंदी @ यूएन’ परियोजना आरंभ की गई है। इसका उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र की सार्वजनिक सूचनाएं हिंदी में देने को बढ़ावा देना और दुनिया भर के करोड़ों हिंदी भाषी लोगों के बीच वैश्विक मुद्दों के बारे में अधिक जागरूकता लाना है। यहाँ

तक कि अंतर्राष्ट्रीय विकास के लिए अमेरिकी एजेंसी और यूनिसेफ ने दूरदर्शन और यूट्यूब की सहायता से 'दूर से नमस्ते' नामक एक काल्पनिक हिंदी श्रृंखला को बनाया जिसे एक मनोरंजन शिक्षा प्रारूप में विकसित किया गया है जो महामारी के बाद की दुनिया की चुनौतियों को उजागर करती है और स्वस्थ व्यवहार एवं प्रथाओं को अपनाने पर जोर देती है।

हिंदी भाषा को बढ़ावा देने में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् (आई.सी.सी.आर) का बहुत बड़ा योगदान रहा है। भारतीय संस्कृति, भाषा और साहित्य को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पिछले 43 वर्षों से आई.सी.सी.आर भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् द्वारा 'गगनांचल' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए यह परिषद् वहां पर स्थित भारतीय सांस्कृतिक केंद्रों में उनके पैनल में सूचीबद्ध हिंदी शिक्षकों को भेजती है। इसके अलावा, विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं के तहत हिंदी पाठ्यक्रमों में शामिल छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। विश्व हिंदी सम्मेलन 2023 के दौरान आई.सी. सी.आर ने विदेशी नागरिकों और भारत में पढ़ने वाले विदेशी छात्रों के लिए हिंदी में ऑनलाइन ब्लॉग लेखन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया।

आज देश के हर एक कोने में हिंदी का इस्तेमाल किया जा रहा है। विशेषतः वहाँ, जहाँ पर केंद्र सरकार के कार्यालय स्थित हैं। हिंदी का प्रभाव इतनी तेजी से पूरे विश्व में फैल रहा है कि प्रवासी भारतीय (एन.आर.आई.) वैश्वीकरण के चलते ऑडियो-वीडियो और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा हिंदी को बढ़ावा देने का अथक प्रयास कर रहे हैं। हिंदी की लोकप्रियता इतनी बढ़ रही है कि उसको संयुक्त राष्ट्र की सातवीं औपचारिक भाषा के रूप में मान्यता देने का जी तोड़ प्रयास चल रहा है। लेकिन हिंदी को इस स्तर तक पहुँचाने के लिए हमें काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। हिंदी भाषा के प्रयोग में इतनी शक्ति जगानी होगी कि वह विश्व में अत्यंत महत्वपूर्ण भाषा बन जाए कि उसकी उपेक्षा बिलकुल भी न हो सके। इसके लिए आवश्यक है कि सबसे पहले देश के हर एक नागरिक को हमारी राजभाषा पर गर्व महसूस हो और अन्य देशों की तरह ज़्यादा से ज़्यादा साहित्य और अनुवाद के माध्यम से इसे विश्व के कोने-कोने तक पहुँचाने का सतत प्रयास भी हो जिससे कि हिंदी कुछ ही सालों में विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन जाए।



साईकृपा नालकूर

व.ले.प.अ./प्र.म.ले.(ले.प.-II)

कार्यालय टिप्पण, पत्राचार आदि में प्रयुक्त कुछ मानक अभिव्यक्तियां और वाक्यांश

1. This may be treated as urgent	: इसे अति आवश्यक समझा जाए
2. Necessary action may be initiated	: आवश्यक कार्रवाई प्रारंभ की जाए
3. Notwithstanding anything to be contrary	: इसके विपरीत किसी अन्य बात के बावजूद
4. Sanctioned as proposed	: प्रस्ताव के अनुसार संस्वीकृति दी गई
5. Revised draft may be put up	: परिशोधित प्रारूप प्रस्तुत किया जाए
6. Take stock of the situation	: स्थिति को समझ लेना
7. Such delay should be avoided	: इस प्रकार के विलंब से बचें
8. Substitute is not available	: प्रतिस्थानी/एवजी उपलब्ध नहीं है
9. Termination notice issued	: समाप्ति सूचना जारी की गई
10. The proposal is in order	: प्रस्ताव ठीक है
11. The receipt of the letter has been acknowledged	: पत्र की पावती भेज दी गई है
12. Time-schedule may be adhered to	: समय-सूची का पालन किया जाए
13. To the best of my knowledge and belief	: जहाँ तक मेरी जानकारी और विश्वास है
14. Under intimation to this office	: इस कार्यालय को सूचना देते हुए
15. Verified and found correct	: सत्यापित किया और ठीक पाया

16. Until further orders : अगले आदेश मिलने तक
17. Unless otherwise specified : जबतक अन्यथा निर्दिष्ट न किया जाए
18. This may please be treated as : कृपया इसे अत्यावश्यक समझें
urgent
19. Submit the relevant papers : संबंधित कागजपत्रों को प्रस्तुत किया जाए
20. Submitted with reference to the : पूर्व पृष्ठ के प्रश्न के संदर्भ में प्रस्तुत
query on pre page

कुछ महत्वपूर्ण पारिभाषिक शब्दावली

1	Statistical analysis	:	सांख्यिकीय विश्लेषण
2	Reassessment	:	पुनर्निर्धारण
3	Unauthorized	:	अनधिकृत/अप्राधिकृत
4	Weed out	:	छंटाई करना
5	Government regulations	:	सरकारी विनियम
6	Occupancy Certificate	:	अधिभोग प्रमाणपत्र
7	Retain	:	प्रतिधारित करना
8	Turnkey basis	:	आद्योपांत आधार
9	Deductible	:	कटौती-योग्य
10	Obsolete	:	अप्रचलित/अनुपयोगी
11	Procedural rules	:	प्रक्रिया नियम
12	Net income	:	शुद्ध आय/निवल आय
13	Enroll	:	नाम लिखना/लिखाना
14	Streamline	:	सुव्यवस्थित करना/सुप्रवाही बनाना
15	Inaccessible	:	अगम/दुर्गम
16	Schedule of demands	:	मांग-सूची

17	Output	:	उत्पादन
18	Toll tax	:	पथकर
19	Neutral	:	तटस्थ
20	Standing Order	:	स्थायी आदेश
21	Fiscal policy	:	राजकोषीय नीति
22	Outright purchase	:	एकमुश्त खरीद
23	Legitimate	:	विधिसम्मत
24	Enlist	:	सूचीबद्ध करना
25	Standby arrangement	:	आपात-उपयोगी व्यवस्था
26	Procurement	:	अधिप्राप्ति
27	Receipts and disbursement	:	प्राप्तियां और संवितरण
28	Transit	:	पारगमन/मार्गस्थ
29	Working conditions	:	कार्य स्थितियां
30	Resolution	:	समाधान/संकल्प
31	Watchdog	:	प्रहरी
32	Scenario	:	परिदृश्य
33	Variant	:	रूपांतर/प्रकारांतर
34	Avoidable	:	परिहार्य
35	Status Report	:	स्थिति रिपोर्ट

36	Reading Room	:	वाचनालय
37	Whistle blower	:	अग्रचेतक
38	Transport Allowance	:	परिवहन भत्ता
39	Vital modification	:	महत्वपूर्ण आशोधन
40	Real estate	:	अचल संपदा
41	Pro tempore appointment	:	अल्पकालीन नियुक्ति
42	Rating	:	कोटिनिर्धारण/दरनिर्धारण
43	Unbecoming	:	अशोभनीय
44	Vulnerable	:	कमजोर/अरक्षित/भेद्य
45	Statutory	:	सांविधिक/वैधानिक
46	Veracity	:	सत्यता/सच्चाई
47	Treatment	:	उपचार/व्यवहार/निरूपण
48	Vindictive	:	प्रतिशोधात्मक
49	Transfer	:	स्थानांतरण/अंतरण/हस्तांतरण
50	Without delay	:	अविलंब



हिंदी पखवाड़ा 2022 का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ करते हुए प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1) एवं प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)

हिंदी पखवाड़ा 2022 के दौरान प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1) एवं अन्य समूह अधिकारियों तथा कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा कार्यक्रम का आनंद लेते हुए



हिंदी पखवाड़ा 2022 में 'लघु नाटिका' प्रस्तुत करते हुए कार्यालय के कलाकार



हिंदी पखवाड़ा 2022 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेते हुए कार्यालय के कार्मिक



हिंदी पखवाड़ा 2022 - पुरस्कार वितरण



हिंदी पखवाड़ा 2022 - पुरस्कार वितरण



हिंदी पखवाड़ा 2022 के समापन समारोह में अध्यक्ष महोदया श्रीमती शांति प्रिया.एस, प्रधान महालेखाकार (ले.प.-I) द्वारा कार्मिकों को संबोधित करते हुए



राजभाषा परिवार

